शिकारी
प्रियांशी जैन

१

शाम से बारिश हो रही थी…..और आसमान में अंधेरा छाता जा रहा था…..में अपनी दोनो बेटियों के साथ खाना बनाने के तैयारी कर रही थी. तभी फोन की घंटी बजी. में किचन से निकल कर अपने रूम में गयी. और फोन उठाया. दूसरी तरफ से किसी औरत की आवाज़ आई. "हेलो वंदना कैसी हो ? में बोल रही हूँ उर्मिला" ये मेरी एक पुरानी सहेली की आवाज़ थी. आज बरसो बाद उसकी आवाज़ सुनी, तो कुछ बीते हुए पलों की यादें दिमाग़ में घूम गयी.

उर्मिला: हेलो वंदना तुम हो ना लाइन पर.

में: हां हां बोल उर्मिला. में ठीक हूँ. तुम अपनी बताओ ?

उर्मिला: में भी ठीक हूँ. और तुम्हारी बेटियाँ कैसी है ?

में: वो दोनो भी ठीक है. खाना खा रही है.

उर्मिला: अच्छा वंदना सुन मुझे तुझसे कुछ काम था.

में: हां बोल ना क्या काम था.

उर्मिला: यार कैसे बोलूं समझ में नही आ रहा…..दरअसल बात ही कुछ ऐसी है.

में: तू ठीक है तो है. बोल ना क्या बात है.

उर्मिला: वो.. वो.. मुझे क्या तुम मुझे एक रात के लिए अपने घर पर रुकने दे सकती हो ?

में: हां क्यों नही इसमे पूछने की क्या बात है. कब आ रही है तू.

उर्मिला: यार आ नही रही. आ चुकी हूँ. पर पहले मेरी पूरी बात सुन ले. वो वो मेरे साथ कोई और भी है.

में: हां तो क्या हुआ आ जा.

उर्मिला: यार तू मेरी बात को समझ नही रही. वो मेरे साथ एक लड़का है.

में: क्या लड़का ! तेरा बेटा है क्या ?

उर्मिला: नही यार ! अब में तुम्हे कैसे बताऊ. वो वो समझ ना.

में: तू ये पहेलियाँ क्यों बुझा रही है. साफ साफ बता ना क्या बात है.

उर्मिला: यार वो छोड़ तू ये बता कि तुम मुझे एक रात के लिए अपने घर पर एक रूम दे सकती हो या नही…..वो मेरे साथ मतलब समझ ना.

कहाँ हम जैसे ग़रीब और मजबूर लोग जो पैसे पैसे के लिए तरसते है और कहाँ वो उर्मिला जो अपने आशिक के साथ एक रात बिताने के लिए ५००० रुपये उड़ा रही है. पर फिर मुझे अहसास हुआ कि, ये मेने क्या कर दिया. मेरी दोनो बेटियाँ अब बारहवीं क्लास पास कर चुकी थी. और आगे पैसे ना होने के कारण में उन्हे आगे नही पढ़ा पा रही थी. उर्मिला मुझसे उम्र में ४-५ साल कम थी. में कैसे इतने बड़े लड़के को उसका बेटा बता सकती हूँ. फिर सोचा चलो जो होगा देखा जाएगा.

में बाहर आई, और किचन में चली गयी. ऑक्टोबर का महीना था. और बारिश से हवा भी ठंडी हो गयी थी. मतलब साफ था अब सर्दियाँ आने को है. जब में किचन में पहुची, तो मेरी बड़ी बेटी प्राची ने पूछा. “माँ किसका फोन था” मेने अपने आप को संभाले हुए कहा.”वो मेरी एक सहेली का फोन था. तुम नही जानती उनको. वो किसी काम से अपने बेटे के साथ यहाँ आई थी. और टाइम से वापिस नही जा पाई तो, आज रात वो यहा हमारे घर पर रुकेगी. तुम थोड़ा सा खाना ज़्यादा बना लो.

प्राजक्ता: माँ ठीक है. पर घर पर दूध नही है. उनको चाइ तो पिलानी है ना.

में: हां ठीक है में दुकान से दूध लेकर आती हूँ.

फिर में घर के बाहर आई, तो देखा बारिश अब धीमी पड़ चुकी है. तेज हवा के साथ बारिश की हल्की फुहार का भी अहसास हो रहा था. हमारा घर एक छोटे से कस्बे में था और एक घर दूसरे घर से काफ़ी दूरी पर थे. में रास्ते पर चलती हुई दुकान पर पहुचि, दूध का पॅकेट लिया, और फिर घर की तरफ चल पड़ी.

में जैसे ही घर के बाहर पहुचि तो पीछे से गाड़ी की आवाज़ आई. गाड़ी हमारे घर के बाहर आकर रुकी, मेने पलट कर देखा तो उसमे से उर्मिला नीचे उतर रही थी. उर्मिला ने मेरी तरफ मुस्कराते हुए देखा, और फिर मेरे पास आकर मुझे गले से मिली. "ओह्ह वंदना. कितने सालो बाद देख रही हूँ तुझे." तभी मेरी नज़र पीछे खड़े लड़के पर पड़ी. जो टॅक्सी ड्राइवर को पैसे दे रहा था. जैसे मेने उसकी तरफ देखा. में एक दम से हैरान हो गयी.

मुझे अपनी आँखों पर यकीन नही हो रहा था. सामने जो लड़का खड़ा था. वो मुश्किल से मेरे बेटी से एक दो साल बड़ा होगा. में आँखें फाडे उसे देख रही थी. कभी उर्मिला को देखती. उर्मिला मेरे मन में उठ रहे सवालो को समझ चुकी थी. उसने अपने होंठो पर मुस्कान लाते हुए कहा. "अंदर चल बताती हूँ, अभिषेक ये बॅग उठा कर अंदर ले आओ'

उसके बाद हम दोनो अंदर आ गये. हमारे पीछे वो लड़का भी अंदर आ गया. मेने गेट बंद किया. और अंदर जाने लगी. मेने देखा मेरी दोनो बेटियाँ बड़े ही उत्साह के साथ घर आए हुए मेहमानो को देख रही थी. जब से उन दोनो ने होश संभाला था. तब से पहली बार हमारे घर पर कोई आया था. हमारी जिंदगी बहुत ही नीरस होकर रह गयी थी. जब रात होती तो, घर में अजीब सा सन्नाटा छा जाता. खाना खाने के बाद हम तीनो अपने अपने बिस्तरों पर लेट जाते. और सोने की कोशिश करते. ना कभी हँसी मज़ाक होता. और ना ही कभी किसी तरह का एन्जॉयमेंट.

मेरे पति के गुजरने के बाद ये घर सिर्फ़ ईटो का मकान रह गया था. पर आज मेने कई सालो बाद अपनी दोनो बेटियों के चेहरे पर हल्की से मुस्कान देखी थी. हम लोग अंदर आए, और में उन्हें अपने रूम में ले गयी. अब ग़रीबो के पास सोफा तो था नही. इसलिए मेने उन्हे बेड पर बैठाया. और अपनी बड़ी बेटी प्राची को आवाज़ दी.

में: प्राची बेटा ज़रा दो ग्लास पानी ले आना.

प्राची: जी मम्मी.

थोड़ी देर में प्राची पानी लेकर रूम में आई, और उसने उर्मिला और उस लड़के अभिषेक को पानी दिया. "प्राची बेटा आंटी को नमस्ते कहो" प्राची ने उर्मिला को नमस्ते कहा.

उर्मिला: (प्राची को गले से लगाते हुए) ये प्राची है, देखो तो सही कितनी बड़ी हो गयी है. पहचान में नही आ रही. बहुत खूबसूरत है तुम्हारी बेटी. और छोटी कहाँ है प्राजक्ता.

मेने प्राजक्ता को आवाज़ दी, और प्राजक्ता भी रूम में आ गये.

प्राजक्ता: नमस्ते आंटी जी.

उर्मिला: (प्राजक्ता को गले लगाते हुए) नमस्ते बेटा. वंदना तुम्हारी दोनो लड़कियाँ कितनी खूबसूरत है. बिलकुल तुम पर गयी है.

प्राजक्ता: में नही आंटी जी. प्राची गयी है माँ पर.

और फिर उर्मिला और प्राजक्ता हसने लगी. आज पता नही कितने सालो बाद मेने अपने बेटियों के चेहरो पर खुशी देखी थी."एक मिनिट" कहते हुए उर्मिला अपना बॅग खोलने लगी. और उसने उसमे से दो पॅकेट निकाले, और प्राची और प्राजक्ता को देते हुए कहा "ये तुम दोनो के लिए" दोनो ये गिफ्ट लेकर बहुत खुश थी.

में: अर्रे इसकी क्या ज़रूरत थी ?

उर्मिला: अर्रे कितने सालो बाद देख रही हूँ. तो खाली हाथ आती क्या ?

में: प्राची जाकर आंटी के लिए चाइ नाश्ते का इंतज़ाम करो.

प्राची: जी मम्मी.

और फिर प्राची और प्राजक्ता दोनो किचन में चली गयी. मेने उर्मिला की तरफ देखा, तो उसने मुझे इशारे से बाहर चलने को कहा. में और उर्मिला दोनो बाहर आ गये. में जानती थी कि उर्मिला से नीचे बात करना ठीक नही होगा. क्योंकि नीचे प्राची और प्राजक्ता दोनो किचन में थी. तभी अंदर से अभिषेक ने आवाज़ लगाई "आंटी जी" मेने उसकी तरफ पलट कर देखा तो वो मुझे ही बुला रहा था. में थोड़ा सा अनकंफर्टबल महसूस कर रही थी.

में उसके पास गयी और बोली "क्या हुआ कुछ चाहिए क्या"

अभिषेक: नही वो में कह रहा था. कि क्या में टीवी देख सकता हूँ.

में: (थोड़ी देर सोचने के बाद) हां लगा लो. (जब से मेरे पति की मौत हुई थी. तब से ना तो कभी मेने टीवी देखा था और ना ही मेरे बेटियों ने. इसीलिए में थोड़ा झीजक रही थी)

में उर्मिला को लेकर ऊपर आ गयी. और ऊपर आते ही, उसने अपने पर्स से हजार हजार के पांच नोट निकाल कर मेरे सामने कर दिए. मुझे इन पैसो की सख़्त ज़रूरत थी. पर ना जाने क्यों में अपने हाथ आगे नही बढ़ा पा रही थी.

उर्मिला: अर्रे देख क्या रही है (और ये कहते हुए उसने मेरा हाथ पकड़ कर मेरे हाथ में पैसे थमा दिए) क्या सोच रही है.

में: तू ये सब क्यों मतलब उस लड़के की उमर तो देख ली होती. तेरे बेटे जैसा है वो. और आज कल के ये बच्चे भी.

उर्मिला: क्या क्या कहा तूने बच्चा.मेरी जान वो शिकारी है शिकारी. एक बार उसका हथियार देख लेगी ना तो खड़े खड़े तेरी योनि मूत देगी.

में: होश में रह कर बात कर उर्मिला. बच्चे नीचे है.

उर्मिला: (मुझे बाहों में भरते हुए) ओह्ह हो नाराज़ क्यों हो रही है. वैसे एक बात कहूँ, लड़के में दम बहुत है. मेरी जैसी औरत की भी तसल्ली करवा देता है. लिंग नही मानो लोहे का रोड हो. साले का लिंग जब भी योनि में जाता है, तो कसम से योनि पानी की नदी बहा देती है.

उर्मिला की बातें सुन कर मेरे बदन में अजीब से झुरजुरी दौड़ गयी. में उसकी ये बकवास बातें नही सुनना चाहती थी. पर नज़ाने क्यों उसके और अभिषेक के बीच की बातें जानने का दिल कर रहा था. अजीब सा अहसास हो रहा था. मेरा पूरा बदन रोमांच के कारण काँप रहा था. यही सोच कर कि, कैसे एक औरत अपने बेटे की उम्र के लड़के से ऐसे संबंध रख सकती है. एक अजीब सी उतेजना मुझमे भरती जा रही थी.

में: पर तू और वो लड़का कैसे ये कैसे हो सकता है. मतलब.

मेरे अंदर छुपी जिज्ञासा उर्मिला से छुपी ना रही. और वो मेरी तरफ मुस्कुराते हुए देख कर बोली.''सब बता दूँगी. आगे चल कर तेरे काम आएगा'' ये कहते हुए उसने शरारती मुस्कान के साथ मेरी कमर पर चुटकी काट दी.

में: आहह पागल है क्या कैसी बात करती है.

तभी नीचे प्राजक्ता की आवाज़ आए. ''माँ चाय तैयार है. नीचे आ जाओ'' में और उर्मिला नीचे आ गये. उर्मिला सीधा रूम में चली गयी. और में किचन में चली गयी. जब में किचन में पहुची तो , मेने देखा प्राजक्ता और प्राची दोनो टीवी पर चल रहे साँग की आवाज़ के साथ गुनगुना रही थी. आज सच में मेने उनको पहली बार इस तरह खुश देखा था.

टीवी पर चले रहे साँग्स और उर्मिला और अभिषेक की मौजूदगी ने मानो जैसे इस घर में थोड़ी से जान डाल दी हो. मेने चाइ को कप्स में डाला, और रूम में चली गयी. दोनो को चाइ दी, फिर वहीं बैठ कर उर्मिला के साथ इधर उधर की बाते करने लगी. चाइ पीने के बाद उर्मिला बोली ''चल वंदना छत पर चलते है. ऊपर मौसम बहुत अच्छा है''

में उर्मिला के साथ बाहर आई, मेने देखा प्राची और प्राजक्ता दोनो खाना बना रही थी. ''प्राची तुम खाना बनाओ में तुम्हारी आंटी के साथ ऊपर जा रही हूँ'' में और उर्मिला ऊपर आ गये. बारिश अब पूरी तरह बंद हो चुकी थी. और अंधेरा छा चुका था. मेने ऊपर वाले रूम से एक चारपाई निकाली और बाहर बिछा दी. और फिर में और उर्मिला वहाँ पर बैठ गये.

में: उर्मिला में कहती हूँ. तू जो ये कर रही है, ठीक नही कर रही. अगर तेरे पति और घर वालो को पता चला तो क्या होगा ?

उर्मिला: क्या मेरा पति. उसे कभी अपने बिजनेस से फ़ुर्सत मिले तब तो उसे पता चले. और यार हम औरतें ही क्यों यूँ अपने अरमानो को मार कर घुट घुट कर जीती रहे. कब तक हां. में तो नही जी सकती.

में: पर एक बार उसकी उम्र का तो ख्याल किया होता. वो बच्चा है अभी, और अगर ग़लती से उसने किसी को तेरे बारे में बता दिया तो,

उर्मिला: तूने आज कल की जनरेशन को क्या समझ रखा है. डियर ये आज की जनरेशन हमसे कही समझदार है. और वैसे भी में कौन सी इसके प्यार में पागल हूँ. बस मेरी ज़रूरत पूरी हो जाती है, और उसकी भी.

में: तू सच में बहुत कमीनी है. कहाँ से पकड़ लाई तू इसे.

उर्मिला: अर्रे यार कुछ नही. अनाथ है बेचारा. तेरे शहर का ही है. पिछली मर्तबा जब में यहाँ अपनी बहन के यहाँ आई थी तो, मेरी बेहन के घर नौकर था.

में: पर ये सब कैसे शुरू हुआ ?

उर्मिला: उस दिन जीजा जी, और दीदी किसी की शादी में गये हुए थे. तो में घर पर अकेली थी. और मेने थोड़ी सी वाइन पी ली.मुझे हल्का हल्का नशा सा होने लगा था. में घर के हॉल में बैठ कर टीवी देख रही थी. तभी मुझे बहुत तेज पेशाब लगा. में अपने रूम की तरफ जाने लगी. जैसे ही में ऊपर वाली मंज़िल पर अपने रूम की तरफ बढ़ रही थी. तो मुझे स्टोर रूम से अभिषेक के कराहने की आवाज़ सुनाई दी. मुझे लगा कि अभिषेक किसी तकलीफ़ में है. में स्टोर रूम की तरफ बढ़ी. पर मेरे कदम स्टोर रूम के डोर पर ही रुक गये….

मुझे अपनी आँखों पर यकीन नही हो रहा था. जो में ये सब देख रही थी. एक लड़का अपने हाथ से अपने लिंग को तेज़ी से हिला रहा था. जैसे ही मेरी नज़र उसके लंबे और मोटे लिंग पर पड़ी….मेरी तो मानो जैसे साँसे ही रुक गयी हो. उसका गोरे रंग का लिंग इतना बड़ा था कि, मेरी योनि में एक टीस सी उठी. और मेरी योनि में झुरजुरी सी दौड़

गयी…. लाइट की रोशनी में चमक रहा उसका गुलाबी सुपाडा तो और भी बड़ा लग रहा था.

पता नही क्यों ये सब देख कर मेरे अंदर एक अजीब से खुमारी छाने लगी. पर तभी बाहर से डोर बेल बजी. मुझे लगा के, जीजा जी और दीदी आ गये हैं. में जल्दी से नीचे आ गयी, और डोर खोला. दीदी और जीजा जी वापिस आ चुके थे. वो दोनो खाना खा कर आए थे….उसके बाद में अपने रूम में आ गयी. और सोने की कोशिश करने लगी. पर मेरे ध्यान में अभी भी अभिषेक का विशाल लिंग छाया हुआ था. मेने अपनी नाइटी को अपनी कमर तक ऊपर उठा रखा था. और अपनी योनि की आग को अपनी उंगलियों से शांत करने की कोशिश कर रही थी.

पर योनि की आग और बढ़ती जा रही थी……में एक दम से बोखला सी गयी. और उठ कर वाइन के दो पेग और मार लिए. पर फिर भी अभिषेक का वो फुन्कारता हुआ लिंग मेरी आँखों से हट नही रहा था. में काम वासना से एक दम विहल हो चुकी थी….अब मेरी योनि की खुजली और बढ़ चुकी थी….में बेड से खड़ी हुई, और अपनी नाइटी को ऊपर उठा कर अपनी पैंटी को उतार कर फेंक दिया. और फिर रूम से बाहर आकर स्टोर रूम की तरफ चल पड़ी.

अभिषेक उसी स्टोर रूम में सोता था. मेने उसके रूम का डोर नॉक किया. और थोड़ी देर बाद अभिषेक ने डोर खोला. मेरे बाल बिखरे हुए थे. मेने रेड कलर की नाइटी पहनी हुई थी. जो मेरी थाइस तक लंबी थी. मुझे इस हालत में देख कर अभिषेक मुझे घुरने लगा. “जी आंटी क्या हुआ” अभिषेक ने मेरे बदन को घुरते हुए कहा.

में: वो अभिषेक बेटा……मेरी पीठ बहुत दर्द कर रही है……तू थोड़ी देर के लिए मेरी पीठ दबा दे ना. मुझे नींद नही आ रही….

मेरे ये बात सुनते ही उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक आ गयी….और मुझे उसकी आँखों में वो वासना देख कर समझने में देर ना लगी की, ये भी मेरी तरह सहवास का मारा हुआ है….और इसे पटाने में कुछ ख़ास मेहनत नही करनी पड़ेगी…..में पलट कर अपने रूम की तरफ जाने लगी. वो मेरे पीछे चल रहा था. में जानबूझ कर अपनी नितंब को मटका कर चल रही थी. मेने तिरछी नज़रों से जब पीछे की ओर देखा, तो अभिषेक अपने शॉर्ट्स के ऊपर से अपने लिंग को मसल रहा था.

में अपने रूम में आकर पेट के बल बेड पर लेट गयी. मेने अभिषेक को डोर लॉक कर आने को कहा. अभिषेक ने डोर लॉक किया, और मेरे पास आकर बैठ गया. में बेड पर पेट के बल लेटी हुई थी....मेरी नाइटी मेरी जाँघो के ऊपर तक चढ़ि हुई थी. और वो मेरी चिकनी जांघे देख रहा था.

अभी उर्मिला मुझे अपने और अभिषेक के बारे में बता ही रही थी कि, प्राची ऊपर आ गयी. प्राची को देख कर उर्मिला चुप हो गयी.

में: हां बेटा कुछ काम था क्या......

प्राची: वो मम्मी खाना बन गया है. और लगा भी दिया है. नीचे आकर खाना खा लो.

में चाहती तो नही थी. पर फिर भी मुझे नीचे तो जाना ही था. मेने उर्मिला की तरफ देखा, तो उसने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा. "यार अब तुझमे इतनी भी ना समझ नही है कि, आगे क्या हुआ तुम्हे अंदाज़ा ना हुआ हो" मेने हां में सर हिला दिया और प्राची को बोला. "तुम चलो हम नीचे आ रहे हैं" प्राची नीचे चली गयी.

में: तो फिर ये तेरी बेहन के घर में नौकर है. और तू इसे यहाँ ले आई. तेरी बेहन को पता है क्या, ये तेरे साथ है.

उर्मिला: नही उसे नही पता. अब ये उसके पास नही रहता. और इसने वहाँ पर काम करना भी बंद कर दिया है.

में: तो फिर ये रहता कैसे है. कहाँ रहता है.

उर्मिला: यार ये शुरू से अनाथ नही है. बचपन में इसके माँ बाप की मौत हो गयी थी. इसके पिता सरकारी नौकरी करते थे. कुछ साल के होने पर इसे अपने पिता की नौकरी मिल जाएगी. अभी तो ये एक फॅक्टरी में काम कर रहा है. इसी शहर में. और अपने दोस्त के साथ उसके रूम में रहता है. और साथ में प्राइवेट स्टडी भी कर रहा है. अच्छा अब चल नीचे चल कर खाना खाते है......

में और उर्मिला नीचे आ गये. नीचे प्राची और प्राजक्ता ने उन दोनों का खाना रूम में लगवा दिया. और मेरा और अपना दोनो का खाना दूसरे कमरे में. हमने खाना खाया. और फिर मेने और प्राची ने मिल कर दूसरे रूम में उन दोनो के सोने का इंतजाज़ कर दिया. वो रात मुझ पर बहुत भारी रही. मुझे रह रह कर ये चिंता सता रही थी कि, कही प्राची और प्राजक्ता को किसी बात को लेकर शक ना हो जाए.

रात के करीब १ बजे में पेशाब लगने के कारण उठी, तो में रूम से बाहर निकल कर बाथरूम की तरफ जाने लगी. मेने देखा कि , उनके रूम में अभी भी लाइट जल रही थी. और अंदर से उर्मिला की सिसकारियों की आवाज़ आ रही थी. मुझे तो बस यही डर सता रहा था कि, कही प्राची और प्राजक्ता को कुछ पता ना चल जाए. पर किसी तरह रात काट गयी. सुबह हुई तो मेने उनके रूम के डोर पर नोक कर उन्हे उठाया.

प्राची और प्राजक्ता पहले ही चाइ नाश्ता तैयार कर चुके थे. अभिषेक और उर्मिला उठ कर फ्रेश हुए, नाश्ता किए और जाने की तैयारी करने लगी. में घर के काम में लगी हुई थी, तब उर्मिला मेरे पास आई. “अच्छा वंदना अब हमे चलना है” पर जाने से पहले मुझे तुझसे कुछ ज़रूरी बात करनी है.”

में: हां बोल ना.

उर्मिला: देख तू तो जानती है कि, अभिषेक का इस दुनिया में कोई नही है, और वो अपने दोस्त के साथ उसके रूम में रह रहा है. अभिषेक अपने लिए रूम ढूँढ रहा है, और तुम्हारे पास तो इतने रूम खाली पड़े है. हो सके तो इसको अपने घर में रूम किराए पर दे दे. तेरा खर्चा पानी भी चलता रहेगा. देख ये तुझे महीने के ५००० रुपये देता रहेगा. बस एक आदमी का खाना ही देना पड़ेगा तुझे.

में उर्मिला की बात सुन कर चुप हो गयी. में जानती थी कि, अभिषेक देखने में चाहे ही बच्चा लगता हो. पर उर्मिला के साथ रह कर वो कुछ ज़्यादा ही मेच्यूर हो गया है. और मेरे घर में दो जवान बेटियाँ भी तो थी. इसीलिए में उससे हां नही कर पा रही थी.

में: उर्मिला मुझे सोचने के लिए कुछ वक़्त चाहिए. तू तो जानती है ना कि, घर में दो दो जवान बेटियाँ है.

उर्मिला: हां में समझ सकती हूँ. वैसे अभिषेक वैसा लड़का नही है. बहुत ही समझदार है. में उसे समझा भी दूँगी. बाकी तू सोच ले.

उसके बाद उर्मिला और अभिषेक दोनो घर से चले गये.

२

उर्मिला ने जो ५००० रुपये मुझे दिए थे. उससे हमें बहुत राहत मिली. दिन रात फिर से उसी तरह काटने लगी. मेने बाहर कई लोगो से भी कह दिया था कि, अगर कोई फ़ॅमिली वाला रूम किराए पर रहने के लिए ढूँढे तो उसे हमारे घर के बारे में बता दें.

में नही चाहती थी कि, में अपने घर पर किसी अकेले लड़के को रखूं, जो मेरे ही लड़कियो की उमर का हो. में उन्हे समाज की इस गंदगी से बचा कर रखना चाहती थी. मेरा यही सपना था कि, वो अपने दामन पर किसी तरह का दाग लिए बिना अपनी ससुराल चली जाए. पर अभी ना तो मेरे पास इतने पैसे थे और नी ही अभी उन दोनो की शादी की उम्र थी.

अब वो ५००० हज़ार तो ख़तम होने ही वाले थे. और आख़िर कब तो उन पैसों से गुज़ारा होता. दिन बीत रहे थे. एक बार फिर से हमारी माली हालत खराब होती जा रही थी. कभी कभी मुझे लगता कि, उस दिन मेने अभिषेक को कमरा देने से इनकार कर मेने बहुत बड़ी ग़लती कर दी. पर अब ना तो उर्मिला का कोई पता था और ना ही अभिषेक का. में किसी तरह सिलाई का काम करके अपने घर का खरच चला रही थी.

नवंबर का महीना शुरू हो चुका था. अब सर्दियाँ शुरू हो चुकी थी. एक दिन में अपनी छत पर बैठे हुई, धूप में सिलाई का काम कर रही थी. प्राची और प्राजक्ता दोनो अपनी सहेली के भाई की शादी में गयी हुई थी. तभी बाहर से डोर बेल बजी. मेने छत की दीवार के पास आकर नीचे देखा तो, नीचे कोई खड़ा था. में उसका चेहरा नही देख पा रही थी.

में: (छत पर से आवाज़ लगाते हुए) जी किस से मिलना है.

मेरी आवाज़ सुन कर उसने ऊपर की तरफ देखा तो, मेने देखा कि नीचे जो लड़का खड़ा है, वो कोई और नही अभिषेक है. उसने मुझे नीचे से नमस्ते कहा. में नीचे आ गयी, और गेट खोला.

अभिषेक: नमस्ते आंटी जी.

में: नमस्ते बेटा ! तुम इधर कहाँ ?

अभिषेक: वो उस दिन शायद उर्मिला आंटी ने आपको बताया हो कि मुझे रूम की ज़रूरत है.

में: हां बताया था. तुम अंदर आओ.

में और अभिषेक अंदर आ गये. मेने उसे रूम में बैठाया. और उसे पानी के लिए पूछा, तो उसने मना कर दिया. “चाइ तो पी लो.” पर अभिषेक ने मना कर दिया ये कह के, उसे थोड़ा जल्दी है वापिस जाना है काम पर. वो लंच टाइम पर घर आया था. मुझे एक बार फिर से कुछ आमदनी की आस हुई. पर मुझे नज़ाने क्यों सही नही लग रहा था. मेरे अंदर हज़ारो सवाल थी. और आख़िर कार मेने उससे अपनी मन की बात कह दी.

में: देखो बेटा मुझे भी रूम को किराए पर देने की उतनी ही ज़रूरत है. जितनी तुम्हें. पर पहले मेरी बात ध्यान से सुन लो.

अभिषेक: जी आंटी बोलिए.

में: देखो अभिषेक में जानती हूँ कि, तुम्हारे और उर्मिला के बीच में किस तराहा का रिश्ता है…..में यी भी जानती हूँ कि तुम उम्र के किस दौर से गुजर रहे हो. और में नही चाहती कि, मेरी बेटियों पर इन बातों का असर पड़े.तुम समझ रहे हो ना में क्या कहना चाहती हूँ. मेरी दो जवान बेटियाँ है बेटा. हम बहुत ग़रीब लोग है. और हमारी इज़्ज़त के सिवा हमारे पास कुछ नही है. अगर तुम्हे मेरे घर में रूम चाहिए तो, अपनी हदों में रहना होगा.

अभिषेक: (मुझे बीच में टोकते हुए) आंटी जी आप फिकर ना करे. आपको अपने घर में मेरी मौजूदगी कर अहसास तक नही होगा. में अपनी आँखें हमेशा फर्श की तरफ रखूँगा. आप मेरा यकीन मानिए……

में: देख लो अभिषेक अगर मुझे तुम्हारी कोई भी हरकत अच्छी ना लगी तो, तुम्हे उसी वक़्त ये घर छोड़ कर जाना होगा….

अभिषेक: ठीक है आंटी जी. में आपको शिकायत का कोई मोका नही दूँगा. आप ये बताए कि आपको कितना रेंट चाहिए.

में: (थोड़ी देर सोचने के बाद) बेटा मुझे उर्मिला ने ५००० रुपये महीना कहा था.

अभिषेक: आंटी अब आप से क्या छुपाना. में फॅक्टरी में सिर्फ़ ८००० रुपये महीने का कमाता हूँ. बाकी आप जैसे कहे. वैसे ५००० हज़ार भी दे दूँगा. अगर आप खाना और मेरे रूम की साफ सफ़ाई और मेरे कपड़ों को धो सके तो.

में अभिषेक की बात सुन कर सोच में पड़ गई. आख़िर अकेला कितना खा लेगा. और अगर दो तीन दिन में इसका एक सूट धोना भी पड़े तो कौन सी आफ़त आ जाएगी.

में: पर में घर पर बेटियों को क्या कहूँगी , कि तुम यहाँ पर किराए पर क्यों रहे हो.

अभिषेक: आप उनसे कह देना कि में यहा पर पढ़ रहा हूँ. और उर्मिला आंटी ने आप से मुझे यहा रखने के लिए कहा है.

मुझे अभिषेक की बात सही लगी. मेने उससे हां कर दी. “ तो तुम कब अपना समान लेकर आ रहे हो “ मेने अभिषेक से पूछा.

अभिषेक: आंटी जी मेरे पास तो मेरे कपड़ो के सिवा कोई समान नही है. में कल सुबह आ जाऊंगा. कल सनडे है.

में: ठीक है तुम कल आ जाना. में तुम्हारे रहने वाले कमरे में एक सिंगल बेड लगवा देती हुई. पुराना है पर गुज़ारा कर लेना.

अभिषेक ने हां में सर हिला दिया. और अपनी जेब से ५००० रुपये निकाल कर मेरी तरफ बढ़ा दिए. मेने हिचकते हुए उससे पैसे ले लिए. उसके अभिषेक चला गया. पर में अजीब सी उलझन में थी. मेरे दिल के किसी कोने में शायद ये बात मुझे काट रही थी कि, में जो कर रही हूँ ठीक नही कर रही.अगर तब मुझे इस बात का अहसास होता कि मै अपने घर मे किसी शिकारी को पनाह दे रही हु,तो शायद यह गलती में कभी नही करती. मेने अपना ध्यान बटाने के लिए घर के काम में लग गयी. शाम हो चुकी थी, अब तक प्राची और प्राजक्ता वापिस नही आई थी. मुझे थोड़ी चिंता होने लगी.

मेने बाहर आकर गेट खोला और बाहर देखने लगी. पर मुझे ज़्यादा देर इंतजार नही करना पड़ा. थोड़ी देर में ही मुझे प्राची और प्राजक्ता आती हुई दिखाई दी. जब वो घर के सामने आई तो, मेने उनसे पूछा कि इतनी देर कहाँ लगा दी, तो प्राजक्ता बोली, माँ अब शादी में टाइम तो लगता है ना.

उसके बाद दोनो अंदर आ गयी. मेने रात के खाने की तैयारी पहले ही कर ली थी. थोड़ी देर रेस्ट करने के बाद मेने प्राची और प्राजक्ता को बुलाया, और उनको कहा. कि अभिषेक कल से यहाँ रहने आने वाला है.

में: तुम दोनो ध्यान से सुनो. उस दिन जो आंटी और उनका बेटा हमारे घर आए थे ना. उनका बेटा अभिषेक इसी शहर में आगे पढ़ रहा है. और वो कल से यही हमारे घर पर रहेगा.

प्राची: जी माँ.

में: देखो बेटा में चाहती हूँ कि, तुम दोनो उससे ज़्यादा बात मत करना. अपने काम से मतलब रखना.

प्राजक्ता: जी मम्मा.

में: मेने उसको नीचे वाला ही रूम दिया है. खाना तो मेने तैयार कर दिया है. अब तुम मेरे साथ मिल कर उस कमरे की थोड़ी सफाई कर दो. और हां जो बाहर बैठक में सिंगल बेड पड़ा है, उसे उसके रूम में शिफ्ट करना है.

दोनो ने हां में सर हिला दिया. उसके बाद हम तीनो ने कमरे की सफाई की, और उसके रूम में कुछ समान सेट करवा दिया. काम करने के बाद हम तीनो काफ़ी थक गये थे. थोड़ी देर आराम करने के बाद हमने रात का खाना खाया, और सोने के लिए अपने अपने कमरो में चले गये. प्राजक्ता और प्राची दोनो मेरे रूम के साथ वाले रूम में सोती थी.

३

अगली सुबह में थोड़ा सा असहज महसूस कर रही थी. में सोच रही थी कि, मेने कोई बड़ी ग़लती तो नही कर दी, अभिषेक को रूम रेंट पर देकर. फिर मेने सोचा, अभी हालत ऐसे है कि, में कुछ कर भी नही सकती, जब मेरे बाकी रूम रेंट पर चढ़ जाएँगे तो, में अभिषेक को दूसरा रूम लेने के लिए कह दूँगी.

सुबह के १० बजे में घर के आँगन में बैठी हुई, सिलाई का काम कर रही थी, कि तभी मुझे घर के बाहर बाइक के रुकने की आवाज़ आई. गेट बंद था, में गेट की तरफ देखने लगी. फिर थोड़ी देर बाद डोर बेल बजी, में खड़ी हुई, और गेट की तरफ जाकर गेट खोला, तो सामने अभिषेक अपने बॅग के साथ खड़ा था. मेने अपने होंठो पर ज़बरदस्ती मुस्कान लाते हुए उसे अंदर आने को कहा. उसने पहले अपना बॅग घर के अंदर रखा, और फिर बाइक घर के अंदर कर ली.

उसके अंदर आने के बाद मेने गेट लॉक कर दिया. ''नमस्ते आंटी जी'' अभिषेक ने मुस्कुराते हुए कहा.'' मेने उस के रूम की तरफ इशारा करते हुए कहा. ''चलो तुम्हे रूम दिखा देती हूँ. '' और उसके बाद में उसे उसके रूम में ले गयी.

में: अभिषेक ये तुम्हारा रूम है. तुम अपना समान सेट कर लो. में तुम्हारे लिए चाइ नाश्ते का इंतज़ाम करती हूँ.

अभिषेक: ठीक है आंटी जी.

में रूम से बाहर आ गयी. मेने देखा कि प्राची और प्राजक्ता दोनो अपने रूम के डोर के पीछे खड़े होकर बड़ी उत्सुकता से देख रही थी. मेने प्राजक्ता को आवाज़ लगाई , तो वो थोड़ी घबरा गयी. और मेरे पास किचन में आ गयी. ''जी माँ''

में: ऐसे छुप छुप कर क्या देख रही हो.

प्राजक्ता: कुछ नही माँ वैसे ही.

में: चल छोड़ ये सब और चाइ नाश्ता तैयार कर दे, अभिषेक के लिए.

प्राजक्ता: जी माँ.

में बाहर आकर फिर से अपने सिलाई का काम करने लगी….हमारा घर छत से पूरा कवर था. बस ऊपर जाने के लिए सीडया थी. और उन सीडयों पर पर लोहे का गेट लगा हुआ था. जो हमेशा खुला रहता था. जब कभी हम तीनो एक साथ बाहर जाते थे, तो छत वाला गेट भी बंद कर के जाते थे. घर के पीछे की तरफ दो रूम थे. जिसमे से एक में में सोती थी, और दूसरे में प्राची और प्राजक्ता. उसके बाद हमारा किचन था. और गेट के पास एक तरफ दो रूम और थी. गेट के साथ वाला रूम खाली था.

और उससे पिछले वाले रूम को अभिषेक को दिया था. तो में बाहर बरामदे में बैठी थी, ठीक अभिषेक के रूम के सामने, उसका रूम का डोर खुला था. और वो अपनी पेंट शर्ट उतार रहा था. उसने पेंट उतारने के बाद अपने बॅग में से एक शॉर्ट निकाला, और पहन लिया. फिर टीशर्ट पहन कर बेड पर लेट गया.

शाम ढाल चुकी थी……..आज में बहुत रिलॅक्स फील कर रही थी……प्राची और प्राजक्ता दोनो बहुत खुश लग रही थी. और ऊपर छत पर बातें कर रही थी….इतने में अभिषेक अपने रूम से बाहर आया, और बाथरूम में चला गया….में बाहर बैठ कर काम कर रही थी…..बाथरूम से आकर वो मेरे साथ थोड़ी दूरी पर नीचे फर्श पर बैठ गया…….

में: चाइ पीओगे बेटा…..

अभिषेक: नही आंटी जी….

फिर थोड़ी देर खामोशी रही………

अभिषेक: आंटी जी एक बात पुछू……

में: हां बोलो……..

अभिषेक: आंटी जी दोपहर घर में बहुत शोर हो रहा था कोई आया था क्या ?

में: हां वो मेरे जेठ जी और जेठानी आए थे.....

अभिषेक: ओह्ह अच्छा.......सॉरी आंटी ये आप की घर के निजी बातें है......पर मेने सुना कि आप किसी की शादी और रिश्ते की बात कर रही थी....किसकी शादी है.......

में: (खुश होते हुए) वो मेरी जेठानी है ना..उसकी बेहन के लड़के का रिश्ता आया है प्राची के लिए....बहुत अच्छे लोग है..अगले सनडे को प्राची की शादी है उससे....लड़का सरकारी नौकरी करता है......और पता है. दहेज भी कुछ नही माँग रहे....बोल रहे थे अपनी लड़की को तीन कपड़ों में विदा कर दे.....

अभिषेक: ये तो बहुत अच्छी बात है आंटी जी पर ?

अभिषेक बोलते बोलते चुप हो गया........"पर क्या अभिषेक"

अभिषेक: जाने दीजिए.....ये आप के घर की बात है...और वैसे भी आपने सोच समझ कर ही फ़ैसला लिया होगा.......

में: (अभिषेक की बात सुन कर सोच में पड़ गयी.कि कहीं मेने कोई जल्द बाजी तो नही कर दी) बोलो अभिषेक में बुरा नही मानूँगी.....तुम्हे तो पता है कि मेरी बेटियों का मेरे सिवाय कोई नही है....जो ऐसे फैंसले ले सके.....

अभिषेक: आंटी जी आप ने लड़के को देखा है ?

में: हां उसकी फोटो देखी है......अंदर रूम में है.....

अभिषेक: आंटी जी क्या में वो स्नॅप देख सकता हूँ........

में: हां में अभी लेकर आती हूँ........

में रूम में गयी......और उस लड़के का स्नॅप ले आई......और अभिषेक को देखते हुए बोली....."ये देखो" अभिषेक ने मेरे हाथ से स्नॅप ली, और बड़े गोर से देखने लगा. कोई ३-४ मिनिट देखने के बाद अभिषेक बोला......."आंटी जी हमारी प्राची वहाँ पर राज

करेगी” में उसके मूह से हमारी प्राची सुन कर थोड़ा हैरान हो गयी. पर अगले ही पल जैसे उसको अपनी ग़लती का अहसास हुआ.

अभिषेक: ओह्ह सॉरी आंटी जी……वो ऐसे ही मूह से निकल गया……….दरअसल में तो अनाथ हूँ ना….तो जब भी कोई मुझसे अपने दिल के बात करता है या फिर थोड़ा प्यार करता है….में जल्द ही उनको अपना मानने लगता हूँ……

में: अर्रे कोई बात नही…….अब तुम अकेले नही हो…….वैसे तुम्हे कैसे लगा कि प्राची वहाँ खुश रहेगी….क्या तुम जानते हो इस लड़के को……

अभिषेक: नही आंटी जी जानता तो नही….पर आप यकीन नही करोगे……

में: क्या…….

अभिषेक: में किसी के भी चेहरे को देख कर ये बता सकता हूँ कि, वो इंसान कैसा है…..उसकी फ़ितरत कैसी है…..और ये फोटो देख कर भी में किसी के बारे में बता सकता हूँ……….

में: तुम सच कह रहे हो अभिषेक…….

अभिषेक: हां आंटी जी……अभी तक तो मेने जिसके बारे में जो जो बताया है वो ठीक ही हुआ है……..

उसके बाद में और अभिषेक यूँ ही इधर उधर के बातें करते रहे…मुझे मालूम ना था कि, अभिषेक इतनी जल्दी मुझसे इतना घुल मिल जाएगा कि, में उससे अपने घर के बातें भी करने लगी…..

अभिषेक: ठीक है आंटी जी….अगर किसी तरह की मदद के ज़रूरत हो तो, मुझे बोल देना….शर्माइयेगा मत….मेने कुछ पैसे जोड़ रखे है बँक में…अगर ज़रूरत हो तो बता देना…..और समझ लेना कि मेने आपको रेंट अड्वान्स दिया है…..

में: ठीक है बेटा….फिलहाल तो अभी ऐसे कोई ज़रूरत नही है…….पर हां तुम मेरी मदद कर दोगे……

अभिषेक: हां आंटी जी क्यों नही…….

में: वो दरअसल बात ये है कि, अगले सनडे को प्राची की शादी करनी है. तो उसके लिए नये कपड़े खरीदने है. तुम मुझे मार्केट ले चलोगे……तुम्हारे पास तो बाइक है……

अभिषेक: हां आंटी पर ?

में: क्यों क्या हुआ ?

अभिषेक: में कह रहा था कि, आप प्राची को भी साथ ले चलो…..आख़िर शादी उसकी है, उसे अपनी पसंद की ड्रेसस खरीदने दो……

मुझे अभिषेक के बात सही लगी..इतनी कम उमर में ही कितना समझदार है. वरना ये बात तो मेरे दिमाग़ में भी नही थी………अक्सर में ही प्राची और प्राजक्ता के लिए कपड़े खरीद कर लाती थी…..और उन्हने ने भी कभी कोई शिकायत नही की थी…..

में: पर एक बाइक पर तीन लोग कैसे जा सकते है……

अभिषेक: फिर टॅक्सी या ऑटो में चलते है……..

में: हां ये ठीक रहेगा…..

उसके बाद मेने प्राची को तैयार होने के लिए कहा….जब उसने पूछा कि कहाँ जाना है तो, मेने उसे बताया कि तुम्हारे लिए नये कपड़े खरीदने है..जेठ जी मुझे ५०००० रुपये देकर गये थे….मेरी बात सुन कर प्राजक्ता भी ज़िद्द करने लगी साथ जाने के लिए……

फिर हम चारो ऑटो पकड़ कर मार्केट पहुच गये….वहाँ पर ढेर सारी शॉपिंग की, आज प्राची और प्राजक्ता के चेहरे पर खुशी देखते ही बनती थी. मेने कई बार गौर क्या कि, अभिषेक दोनो की बहुत मदद कर रहा था…..और वो इतने कम समय में ही दोनो से बहुत

घुल मिल गया था.....कौन सी ड्रेस अच्छी है...कौन सा सूट प्राची पर जचे गा....वगैरा वगैरा यहा तक कि कपड़ो का भाव तोल भी अभिषेक ने किया........में उसे बार बार देख रही थी.....और मन में यही सोच रही थी कि, काश मेरा भी अभिषेक जैसा बेटा होता....

तो वो अपनी बहनो की इसी तरह मदद करता....सुख दुख में उनका साथ देता...हमने प्राची की शॉपिंग के साथ साथ प्राजक्ता के लिए भी कुछ ड्रेस खरीद ली. उसके बाद हम चारो ने बाहर होटेल में ही खाना खाया.....रात के ८ बज चुके थे......और और फिर हम घर वापिस आ गये.....

४

भले ही में प्राची की शादी में कोई ताम झाम नही कर रही थी. पर फिर भी शादी के कुछ रीतिरिवाज करने के लिए अभिषेक मदद को हर समय तैयार रहता. आख़िर वो दिन भी आ गया…..जिसका मुझे बेसबरी से इंतजार था….जिसका हर माँ बाप को होता है, कि उनकी बेटी शादी करके खुशी खुशी अपनी ससुराल जाए….हम तैयार होकर सीधा मंदिर में पहुच गये….वहाँ पर मेरे जेठ जेठानी और उनके बच्चे और उनके जीजा और बेहन, और उनका बेटा जिससे प्राची की शादी होनी थी….वो सब पहले से मौजूद थे………और उनके साथ कुछ और लोग भी थे….

मंदिर के पीछे एक हॉल था.बहुत ज़्यादा बड़ा तो नही….पर ठीक ठाक था. अभिषेक ने हम सबसे वहाँ चलने के लिए कहा…..जैसे ही हम वहाँ पहुचे तो, मुझे यकीन ही नही हुआ….सामने मेरे बेटी का मंडप सज़ा हुआ था. एक तरफ टेबल पर खाने पीछे का समान था……..मेने अभिषेक की तरफ हैरान होते देखा. तो उसने मुस्कुराते हुए सर हिला दिया…..प्राची को और उसके होने वाले पति को मंडप में बैठा दिया गया……पंडित ने अपने मंतर पढ़ने शुरू कर दिए…. कुछ वेटर भी थे…जो सब को खाने वाली डिशस परोस रहे थे…..

में जब थोड़ा फ्री हुई तो, में अभिषेक के पास गयी…..और अपनी नम आँखों से उससे पूछा………”:ये सब तुमने कब किया अभिषेक” उस पर अभिषेक ने मुस्करा कर कहा…

अभिषेक: आंटी जी आप तो जानती ही हो…मेरा इस दुनिया में कोई नही है……और में ऐसा मोका कैसे छोड़ देता…अब मेरा कोई है तो नही जिसकी शादी में कोई मदद करता….सो बस दिल किया और मेने अपनी तरफ से ये छोटी से कोशिश करदी.

मेने अभिषेक के बारे में जैसे सोचा था, सब उसके उलट हो रहा था…..अब में उस पर और भरोसा करने लगी थी..उसने सब अरेंजमेंट बहुत अच्छे से किया था……शादी हो चुकी थी……..बेटी को भरे दिल से विदा करने के बाद हम लोग घर वापिस आ गये…..

पर आज घर में कुछ कमी लग रही थी…प्राची के घर में ना होने से पूरा घर सुना सुना लग रहा था. अभिषेक अपने रूम में चला गया. हम वहाँ से खाना साथ लेकर आए थे… इसीलिए खाना बनाने की ज़रूरत नही थी..मेने खाना लगाया और प्लेट में खाना लेकर

अभिषेक के रूम की तरफ जाने लगी. पर अभी उसके रूम की तरफ बढ़ ही रही थी कि, में रुक गयी. और फिर से वापिस आकर प्राजक्ता और प्राची के रूम में चली गयी..जिसमे अब सिर्फ़ प्राजक्ता को ही रहना था. मेने वहाँ खाने की प्लेट रखी, और फिर अभिषेक के रूम की तरफ चली गयी.

अभिषेक के रूम का डोर खुला था, और वो बेड पर लेटा हुआ था. पर फिर भी मेने डोर पर नॉक किया, तो उसने लेटे लेटे गर्दन घुमा कर देखा. इससे पहले कि वो कुछ बोलता….मेने उससे कहा.”अभिषेक चलो चल कर खाना खा लो.” में उसका जवाब सुने बिना वापिस आ गयी…..कल तक जिसे मेने अपने घर में मजबूरी में रखा था. आज में उसको खुद अपनी बेटी के रूम में बुला रही थी…थोड़ी देर बाद अभिषेक रूम में आ गया..प्राजक्ता बेड पर बैठ कर खाना खा रही थी…..

में: आओ बेटा बैठो.

अभिषेक हम दोनो के सामने आकर बैठ गया…….और अपनी प्लेट उठ कर खाना खाने लगा…..घर में सन्नाटा छाया हुआ था…जैसे इस घर में कोई रहता ही ना हो.खाना खाते खाते अचानक अभिषेक उठा और टीवी ऑन कर दिया……टीवी पर कोई सीरियल चल रहा था……जिसे देखते ही, प्राजक्ता उछल पढ़ी…

प्राजक्ता: ये ये रहने दो बहुत अच्छा सीरियल है…….

अभिषेक ने मुस्कुरा कर फिर से खाना शुरू कर दिया……..अब भले ही घर में कोई ना बोल रहा था. पर टीवी की आवाज़ से घर का माहौल बदल सा गया था. खाना खा कर अभिषेक ने कुछ देर तक टीवी देखा और फिर अपने रूम में चला गया. दिन भर की थकान के कारण जल्द ही हम सब नींद आ गयी….

INDIAN BEST TELEGRAM ADULT (18) CHANNELS

हिंदी Adult स्टोरी, Adult कॉमिक्स, सबसे अनूठे देसी मस्ती भरे XXX वीडियोज, हिंदी एडल्ट शायरिया, फन्नी एडल्ट जोक्स का अनूठा संगम..!! 🔞💯

(*Top To Click Here Join*)

X Night Clubs

Click Here

Adult Comics Club

Click Here

Adult Shayari & Stories

Click Here

Night Club Chat Group

Click Here

18 Vargin Girls

Click Here

५

अगले दिन जब सुबे में उठ कर फ्रेश हुई, तो मेने देखा अभिषेक अभी भी अपने रूम में सो रहा था…..उसके रूम का डोर खुला हुआ था…..मेने एक बार उसकी तरफ देखा, और फिर उसके रूम में जाकर उसको आवाज़ लगाने लगी….वो जल्दी ही उठ कर बैठ गया….और मेरी तरफ देखने लगा….

में: अभिषेक तुम्हें आज काम पर नही जाना क्या ?

अभिषेक: नही आंटी आज मुझे वो वो कहीं और जाना है.

में: कहाँ जाना है….

अभिषेक: वो वो आज मुझे उर्मिला आंटी ने बुलाया है, उनके घर पर ?

अभिषेक ने ये कह कर सर नीचे झुका लिया..उसकी ये बात सुनते ही, मेरे दिल को नजाने क्या हुआ, में गुस्से से बाहर आ गयी….इन चन्द ही दिनो में अभिषेक हमारे घर का हिस्सा बन गया था…..और में उसे ऐसे अपनी लाइफ को बर्बाद करते हुए नही देखना चाहती थी……मेरी नाराज़गी शायद अभिषेक भी समझ चुका था…

में बाहर बरामदे में बैठ कर अपना काम कर रही थी……थोड़ी देर बाद अभिषेक अपने रूम से निकल कर बाथरूम में चला गया…..मेने प्राजक्ता को अभिषेक का नाश्ता लगाने को कहा……प्राजक्ता किचन में चली गयी….थोड़ी देर बाद अभिषेक नहा कर बाथरूम से बाहर आया, और अपने रूम में जाकर कपड़े पहनने लगा…मुझे नज़ाने क्यों अभिषेक का ऐसे उर्मिला से मिलने जाना अच्छा नही लग रहा था…..

में उठ कर अभिषेक के रूम में चली गयी…..अभिषेक कपड़े पहन चुका था….”कब जाना है तुम्हे” मेने अभिषेक से रूखे अंदाज़ में पूछा… और अभिषेक ने मुस्कुराते हुए मेरी तरफ देखा और बोला, दोपहर को जाऊंगा…इतने में प्राजक्ता रूम के बाहर अभिषेक के लिए नाश्ता लेकर खड़ी हो गयी…मेने जाकर प्राजक्ता से नाश्ते की प्लेट ली, और अभिषेक के रूम में बेड पर रख दी……और फिर में बाहर आकर अपना काम करने लगी…….

अभिषेक नाश्ते के बाद ऊपर छत पर चला गया.....क्योंकि सर्दियों का मौसम था इसलिए बाहर धूप में बैठना सब को अच्छा लगता था.....प्राजक्ता अपने रूम में कुछ काम कर रही थी....नज़ाने क्यों मेरे मन में बार बार यही आ रहा था कि, मुझे उसे ऐसे करने से रोकना चाहिए......फिर मन में आता में कौन होती हूँ, उसकी जिंदगी में दखल देने वाली.......

पर नज़ाने क्यों में अपने मन के हाथों मजबूर होकर, ऊपर छत पर चली गयी.....वहाँ अभिषेक चटाई बिछा कर नीचे लेटा हुआ था..में उसके पास जाकर बैठ गयी....

में: अभिषेक एक बात कहूँ ?

अभिषेक: (मेरी तरफ देखते हुए) हां आंटी जी कहो ना क्या बात है ?

में: देखो अभिषेक वैसे तो मुझे तुम्हारी निजी जिंदगी में दखल देने का हक़ मुझे नही है.........पर फिर मुझे लगता है, कि तुम्हारे और जो उर्मिला के बीच में है, वो सही नही है.....अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है.....वो तुम्हारा इस्तेमाल कर रही है.....एक दिन तुम अपनी जिंदगी उसके चक्कर में खराब कर लोगे.......

मेने एक ही साँस में मेरे दिल में जो आया वो बोल दिया......मेरी बात सुन कर अभिषेक खामोश हो गया. फिर थोड़ी देर बाद उसने चुप्पी तोड़ते हुए बोला....

अभिषेक: आंटी जी में अब आपको कैसे बताऊ.......आप तो जानती है कि में अनाथ हूँ....और मेरा इस दुनियाँ में कोई नही है...जो मुझे अच्छा बुरा समझा सकता. पर उर्मिला आंटी से मेरा सिर्फ़ वही रिश्ता नही है.....उन्होने मेरा हर मुश्किल वक़्त में साथ दिया है... में आप को बता नही सकता कि, किस कदर उन्होने ने मेरे हर कदम पर मदद की है, आज अगर में खुद कमा कर खा रहा हूँ, तो ये सिर्फ़ उनकी बदोलत है......उन्होने ने ही मुझे मेरे पैरो पर खड़ा किया है....

में अभिषेक के बात सुन कर चुप हो गयी.....पर फिर भी मेरा मन उसकी बातों को मानने के लिए तैयार नही था......

में: ठीक है पर मुझे नही लगता ये सब ठीक है......

और फिर में नीचे चली आई…….अभिषेक दोपहर को घर से चला गया……प्राची तो पहले सी ही अपनी ससुराल में थी, और अभिषेक के जाने के बाद घर और सुना सा लग रहा था…..रात हुई, और फिर सुबह, फिर रात हुई….पर अभिषेक अभी तक वापिस नही आया था.मुझे उसकी थोड़ी चिंता होने लगी थी…..पर मेरे पास ना तो उर्मिला का कोई फोन नंबर था, और ना ही अभिषेक का……

में रात को सो रही थी कि, बाहर डोर बेल बजी……में आँखें मलते हुए बेड से उठी, और दीवार पर लगी घड़ी की तरफ देखा…रात के १२ बज रहे थे…में अपने रूम से बाहर आई, और गेट के पास जाकर पूछा कि कौन है….तभी बाहर से अभिषेक के लड़खड़ाती हुई आवाज़ आई…..

अभिषेक: में हूँ में हम अभिषेक आंटी जी….

मेने गेट खोला तो देखा, अभिषेक सर झुकाए खड़ा था…..बाहर कोहरा छाया हुआ था, और ठंड बहुत ज़्यादा थी….

में: अभिषेक तुम इस वक़्त टाइम तो देखो……..

अभिषेक बिना कुछ बोले और मेरी तरफ देखे बिना अंदर चला गया…..जब वो मेरे पास से गुज़रा तो मुझे एक अजीब सी स्मेल आई……मैं गेट लॉक कर वापिस मूडी तो देखा, अभिषेक अपने रूम में जा चुका था…..गेट बंद करने के बाद में वापिस आई, और रूम के बाहर से ही अभिषेक को देखा, अभिषेक बेड पर बैठा हुआ था…उसने अपने सर को नीचे झुका रखा था, और मूह में कुछ बुदबुदाये जा रहा था…..मुझे लगा कि कुछ तो ग़लत हुआ है…..

में अभिषेक के रूम में चली गयी…..जैसे ही में अभिषेक के पास पहुचि, तो मुझे फिर से अजीब सी स्मेल आई……और फिर मुझे समझते देर ना लगी कि, अभिषेक ने ड्रिंक कर रखी थी……”क्या हुआ अभिषेक. कुछ हुआ है क्या”

अभिषेक: (नीचे फर्श की ओर देखते हुए) आंटी जी में बहुत अपसेट हूँ, और रात बहुत हो चुकी है, सुबह बात करते है…….

में: हां ठीक है खाना तो खाया है ना…..

अभिषेक ने हां में सर हिला दिया…मेने भी उससे ज़्यादा सवाल पूछना ठीक नही समझा. और अपने रूम में आ गयी….में बेड पर लेटी सोचने लगी कि, ये अभिषेक को क्या हो गया…कही कुछ ग़लत तो नही हुआ उसके साथ. ड्रिंक भी करके आया है. बस यही सब सवाल मेरे जॅहन में था.

रोशन दान से अभी लाइट अंदर आ रही थी.जो अभिषेक के रूम की थी….नज़ाने वो कब तक जागता रहा…पर में अपने रूम में लेटी रही…नज़ाने कैसे कैसे ख़याल मेरे दिमाग़ में आ रहे थे…कहीं उर्मिला के ससुराल वालो या उसके पति को उन दोनो के रिश्ते के बारे में तो नही पता चल गया…..में यही सब सोचते सोचते सो गयी…….अगली सुबह जब उठी, तो देखा प्राजक्ता मुझसे पहले ही उठ कर घर के साफ सफाई कर चुकी थी…….और नाश्ता बना रही थी…….में किचन में गयी और बोली” क्या बात है आज सुबह सुबह ही घर के सफाई कर ली, मुझे उठाया भी नही…….”

प्राजक्ता: ओह्ह माँ तुम भी ना कुछ याद नही रहता…….आज प्राची दीदी और जीजा जी आने वाले है…..

में: ओह्ह हां में तो भूल ही गयी…..जल्दी से नाश्ता तैयार करो…में बाज़ार से कुछ खाने पीने का समान ले आती हूँ…..

में फिर से अपने रूम में गयी, और पैसे लेकर बाज़ार के तरफ जाने लगी, तो मेने देखा अभिषेक का रूम खुला था……पर अभिषेक अंदर नही था……..में थोड़ा जल्दी में थी, इसीलिए सीधा बाज़ार चली गयी…..बाज़ार से कोल्ड्रींक्स और कुछ और खाने का समान लेकर में घर आ गयी….अंदर आते वक़्त भी मेने अभिषेक के रूम में झाँका तो वो वहाँ नही था…..में किचन में गयी..और साथ लाया समान सेल्फ़ पर रख कर प्राजक्ता से पूछा…..

में: प्राजक्ता अभिषेक कहाँ है…..तुमने देखा है उसे……..

प्राजक्ता: हां ऊपर है छत पर…

में: अच्छा प्राची और तुम्हारे जीजा जी कब आने वाले है……

प्राजक्ता: वो तो दोपहर तक आएँगे क्यों क्या हुआ.

में: कुछ नही….अच्छा अभिषेक को चाइ दी……..

प्राजक्ता: हां दी थी……वो कप लेकर ऊपर ही चला गया था…….

में: अच्छा ठीक है में कप लेकर आती हूँ….

उसके बाद में ऊपर आ गयी……मेने देखा अभिषेक चारपाई पर बैठा हुआ था…. वो किसी बात को लेकर बहुत परेशान था…….मेरे कदमो की आहट सुन कर एक बार उसने मेरी तरफ देखा और फिर सर झुका लिया……में उसके पास जाकर बैठ गयी.

में: क्या हुआ बहुत उदास लग रहे हो ?

अभिषेक: कुछ नही ऐसे ही……

में: अभिषेक तुम कल रात को दारू पीकर आए थे ना ?

अभिषेक: (थोड़ा सा चोन्कते हुए) हूँ हां वो सॉरी आंटी….

में: क्या कुछ तो बात है . जो तुम इतने परेशान हो ?

अभिषेक: नही ऐसी कोई बात नही……

में: देखो अभिषेक भले ही तुम मुझे कुछ ना बताओ….पर तुम मेरे बेटे जैसे हो उसकी उमर के ही हो बताओ ना क्या हुआ…..

मेरे इस तरह सवाल करने पर अभिषेक ने मेरी तरफ देखा, उसकी आँखें नम हो चुकी थी……..में उसकी आँखों में आँसू की नमी अच्छी से देख पा रही थी…फिर वो एक दम से रोने लगा….

मेने उसे कंधे से पकड़ कर दिलासा देना शुरू कर दिया" क्या हुआ ऐसे क्यों रो रहे बच्चो की तरह…"

अभिषेक: आंटी अब में उस औरत के पास कभी नही जाऊंगा, (अभिषेक ने रोते हुए कहा)

में: क्यों क्या हुआ कुछ कहा उसने……(इस दौरान कब उसका सर मेरी छाती पर आ गया मुझे पता ही नही चला…….में उसे चुप करते हुए उसके सर पर हाथ फेर रही थी…..मुझे इसका अहसास तब हुआ जब उसकी आँखों से आँसू निकल कर मेरी स्तनों के दरमियाँ कमीज़ के गले से नीचे गये…. मेरा पूरा बदन काँप गया…..पर चाह कर भी उसे अपने से दूर ना कर पाई.)

अभिषेक: (चुप होकर सीधे बैठते हुए) कल जब में उसके पास गया था, तब वो मुझसे कहने लगी कि, में उसके घर ही आ जाउ……जब मेने पूछा कि तुम घर वालो को क्या कहोगी तो उसने कहा कि, कहूँगी तुम्हे घर के कामो के लिए नौकर रखा है….जब मेने उसे इस बात के लिए मना किया और कहा कि, में अब अपने पैरों पर खड़ा हो गया हूँ २ साल बाद मुझे पापा की सरकारी नौकरी भी मिल जाएगी….में ये नौकरा वाला काम नही करना…….तो वो मुझ पर बरस पड़ी..बहुत झगड़ा किया……और मुझे थप्पड़ भी मार दिया.

में: अच्छा अब रोना बंद करो…..मेने कहा था ना कि वो तुम्हारी जिंदगी खराब कर देगी……..अच्छा किया जो उसे जवाब दे दिया…..अच्छा अब रोते नही तुम तो इतने बहादुर हो……..

मेरे काफ़ी समझाने के बाद उसने रोना बंद कर दिया……और फिर वो मेरे साथ नीचे आ गया……..हम तीनो ने साथ मिल कर नाश्ता किया..और फिर प्राची और उसके पति की मेहमाननवाज़ी की तैयारी करने लगी……

६

दोपहर तक हम सब तैयार कर चुके थे……अभिषेक ने रात को ड्यूटी पर भी जाना था… इसीलिए वो खाना खा कर अपने रूम में जाकर सो गया…….दोपहर को प्राची और उसका पति विशाल दोनो घर पर आ गये……मेने बेटी को गले से लगा लिया….बेटी को देखते ही मेरी आँखें नम हो गयी…..

चाइ नाश्ते के बाद प्राची ने मुझसे पूछा…..माँ अभिषेक भैया कहाँ पर है….

में: अपने रूम में सो रहा है, उसकी रात की ड्यूटी है…..

उसके बाद मेने और प्राजक्ता ने प्राची से ढेर सारी बातें की, उसके ससुराल के बारे में पूछा….उसके चेहरे की खुशी ही बता रही थी कि, वो कितनी खुश है. उसने मुझे बताया कि उनका घर बहुत बड़ा है..घर में उनके अलावा उसके सास ससुर ही है, और काम करने के लिए नौकरानी भी रखी हुई है…….

अपनी बेटी की बातें सुन कर मेरा दिल खुशियों से भर गया….मेने कभो सपने में भी नही सोचा था कि, मेरी बेटी की शादी इतने बड़े घर में होगी. और वो इतनी खुश रहेगी……..रात को अभिषेक खाना खा कर काम के लिए चला गया….अब प्राची घर पर थी तो, प्राजक्ता के बारें ख़तम होने का नाम ही नही ले रही थी.. वो तो ऐसे बातें कर रही थी……जैसे अपनी बेहन से बरसो बाद मिली हो…

विशाल भी दिल का बहुत अच्छा था…….प्राजक्ता के हर मज़ाक और बात का मुस्करा कर जवाब देता….हम रात के १ बजे तक यूँ ही बातें करते रहे……उसके बाद जब तक नींद ने अपना पूरा असर नही दिखाई तब तक बैठे रहे….लेटते ही नींद आ गयी…..कब सुबह हुई पता ही नही चला…..सुबह नाश्ते के वक़्त अभिषेक भी आ गया…..फिर मेने उसे भी अपने साथ नाश्ते के लिए कहा…….थोड़ी झिझक के साथ वो भी मान गया…….

नाश्ते के बाद विशाल ने कहा “मम्मी अब हमें चलना चाहये”

मेने कहा एक दो दिन रुक जाते तो”

विशाल: नही मम्मी जी काम बहुत है. ……ऊपर से पापा अकेले है काम संभाल नही पाएँगे…….अगली बार लंबी छुट्टी लेकर आएँगे……पर पहले आप को और प्राजक्ता को हमारे घर आना होगा”

थोड़ी देर और हँसी मज़ाक चलता रहा…….फिर प्राची और विशाल अपने घर के लिए चले गये……..

दिन इस तरह कट रहे थे……सब कुछ नॉर्मल चल रहा था…..अब में अभिषेक पर पूरा यकीन करने लगी थी……और उसने भी कभी मुझे शिकायत मोका नही दिया था……… जब उसकी नाइट ड्यूटी होती, तो में कभी बाज़ार कुछ खरीदने के लिए जाती तो प्राजक्ता और अभिषेक दोनो घर पर अकेले होते….पर अक्सर अभिषेक सो रहा होता क्योंकि रात भर जाग कर काम करता था……… मेरे विश्वास भी उस पर बढ़ता जा रहा था…..हर दुख सुख में उसने मेरी बहुत मदद की थी. वो मुझे बहुत ही नेक दिल बच्चा लगता था. वो तो उसे उर्मिला ने अपने चुंगल में फँसा लिया……….नही तो वो ऐसी हरकत भी ना करता…

७

एक दिन में किसी काम से बाज़ार गये हुई थी, लौटने में बहुत देर हो चुकी थी….जब मेने घर के बाहर पहुँच कर डोरबेल बजाई तो, काफ़ी देर तक गेट नही खुला……..मेने फिर से डोर बेल बजाई पर गेट नही खुला…..जब में तीसरी बार डोर बेल बजाने वाली थी…….तब जाकर गेट खुला……..गेट अभिषेक ने खोला था….

वो मेरे से नज़रे नही मिला रहा था…..गेट खोलने के बाद वो अपने रूम में चला गया…… मेने गेट बंद किया, और अपने रूम की तरफ जाने लगी…..जब में उसके रूम के सामने से गुज़री तो, उसके रूम का डोर बंद था…..मेने प्राजक्ता के रूम में देखा तो, प्राजक्ता सो रही थी………मुझे कुछ अजीब सा लगा…..पर मेने ज़्यादा ध्यान नही दिया……

मेने अपने रूम में आ गयी……और बेड पर लेट गयी…..लेटते ही थके होने के कारण मुझे नींद आ गयी….शाम को जब उठी, तो चाइ बना कर किचन से प्राजक्ता और अभिषेक को आवाज़ दी……में चाइ लेकर बरामदे में आ गयी….प्राजक्ता तो उठ कर बाहर आ गयी……..पर अभिषेक शायद अभी तक सो रहा था…….ये सोच कर में उसके रूम के तरफ गयी……….पर अभिषेक रूम में नही था…में जैसे ही पलट कर वापिस जाने लगी तो, मेरा ध्यान बेड के नीचे पड़े ब्लॅक कलर के कपड़े पर गया…..वो क्या चीज़ थी…..जैसे ही मुझे इसका अहसास हुआ……..

मेरे हाथ पैर काँपने लगे……”नही ये नही हो सकता…ये मेरी आँखों का धोका भी हो सकता है” पर फिर भी मन नही माना…..और मेरे काँपते हुए पैर उस बेड की तरफ बढ़ने लगी…..बेड के पास जाकर में नीचे झुकी और उस कपड़े को अपने हाथों में उठा लाया…..मेरे दिल के धड़कने मानो जैसे बंद हो गयी हो…..मुझे यकीन नही हो रहा था…..वो एक ब्लॅक कलर की पैंटी थी..

जिसे पहचानने में मुझे एक पल ना लगा……”ये ये तो प्राजक्ता की पैंटी है” मेरी तो जैसे साँसे ही थम गयी हो….सब कुछ मानो थम सा गया हो…ये ये यहाँ पर कैसे……दोपहर को भी अभिषेक ने बहुत देर बाद डोर खोला था….कही अभिषेक और प्राजक्ता कुछ... नही नही ...ये नही हो सकता…….अभिषेक मेरे साथ ऐसा नही कर सकता…मेने उसे अपने बेटे जैसा माना है……

में बहुत परेशान हो गयी थी…..मुझे समझ में नही आ रहा था कि, में क्या करूँ….लाखो सवाल मेरे जहन में घूम रहे थे….तभी बाहर से प्राजक्ता की आवाज़ आई"माँ कहाँ रह गयी" में एक दम से हड़बड़ा गयी…..और जल्दी से पैंटी को अपनी सलवार के जबरन में फँसा कर बाहर आई और सीधा अपने रूम में चली गयी, और उसे वहाँ पर रख दिया….और बाहर आ गयी….बाहर आकर में नीचे बैठ गयी…..मुझे ऐसा लग रहा था, जैसे मेरी दुनिया ही लुट गयी हो… तभी अभिषेक बाथरूम से बाहर आया, और पास बैठ कर चाइ पीने लगा……

मुझे परेशान देखकर अभिषेक ने मुझ से पूछा कि क्या हुआ आप इतनी पेरेशान क्यों लग रही हो……….उस पर मेने कहा नही कोई बात नही है…….पर मेरे मन में हज़ारो सवाल चल रहे थे…….कि आख़िर हो क्या रहा है…….मुझे पता करना ही होगा….रात को अभिषेक खाना खा कर ड्यूटी पर चला गया……

अब मेरे दिमाग़ ने भी काम करना बंद कर दिया था….कहीं मेरी बेटी ग़लत रास्ते पर तो नही चल रही…….मेने मन में ठान लिया था कि, अब चाहे जो भी हो जाए…..में प्राजक्ता से बात करके रहूंगी……खाना खाने के बाद मेने सारा काम ख़तम किया, और प्राजक्ता के रूम में गयी…….

मुझे अपने रूम में देख कर प्राजक्ता ने पूछा क्या हुआ माँ, तो मेने उसकी पैंटी दिखाते हुए गुस्से से पूछा ये क्या है…..

जैसे ही प्राजक्ता ने वो अपनी पैंटी मेरे हाथ में देखी, उसके चेहरे का रंग उड़ गया….पर फिर अपनी घबराहट को छुपाते हुए बोली….."ये ये तो मेरी पैंटी है माँ ! आप भी ना"

में: (गुस्से से) वो तो मुझे भी दिख रहा है……पर ये अभिषेक के रूम में कैसे पहुची ?

प्राजक्ता: (मेरी ये बात सुन कर और घबरा गयी, और रुवासि से होकर बोली) वो वो जब मेने ऊपर छत से कपड़े उतारे थे,और अभिषेक के कपड़े देने उसके रूम में गयी थी… शायद उसी के बीच में चली गयी होगी….

भले ही प्राजक्ता कुछ और ही कह रही थी……पर उसकी घबराहट से साफ जाहिर हो रहा था कि वो मुझ से झूट बोल रही है….में अब गुस्से से पागल हुई जा रही थी ……मे तेज़ी

से प्राजक्ता की तरफ गयी……और उसके गाल पर जोरदार थप्पड़ मार दिया…..थप्पड़ पड़ते ही वो गाल पर हाथ रख कर सुबकने लगी……..

में: सच सच बता…..क्या चल रहा है तुम दोनो के बीच में…….

प्राजक्ता: (अब जोर जोर से रोने लगी थी) सच माँ कुछ नही है…..

में: (और गुस्से से चिल्लाते हुए) बताती है कि नही कि और लगाऊ……..

प्राजक्ता: (सुबक्ते हुए) वो माँ में में अभिषेक से प्यार करती हूँ……

उसकी ये बात सुन कर तो जैसे मेरे बदन में आग ही लग गयी हो…….मेने एक के बाद एक ४-५ थप्पड़ उसके गालो पर जड़ दिए……..

में: तुम जानती भी हो प्यार किसी कहते है……..ये सब गंदी हरकते करके तुम इसे प्यार का नाम दे रही हो…..तूने हमारी इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी….

प्राजक्ता सुबक्ते हुए मेरे पास आई, और मुझसे सॉरी कहने लगी…..”पर में उस पर और बरस पड़ी और बोली, तुझे तो बाद में देखूँगी…पहले कल उसकी खबर लेती हूँ”

में ये कह कर अपने रूम में आ गयी.मुझे रह रह कर उर्मिला की बात याद आ रही थी. सच कहा था उर्मिला ने.अभिषेक कोई बच्चा नही था,वो शिकारी था और इस शिकारी ने मेरी मासूम बच्ची का शिकार कर लिया था.अब उसे इस शिकारी के चंगुल से आजाद कराने की जिम्मेदारी मेरी थी.

अगली सुबह डोर बेल बजी……मेरा गुस्सा पहले ही सातवें आसमान पर था….में गेट पर गयी, और गेट खोला. बाहर अभिषेक खड़ा मेरी तरफ देख कर मुस्करा रहा था….जी तो चाह रहा था कि इस हरामजादे का यही मूह तोड़ दूं……पर में नही चाहती थी कि हंमरे घर की इज़्ज़त बाहर गली मुहल्ले में उछले…….

अभिषेक सीधा अंदर चला गया,और अपने रूम में जाने लगा….मेने जल्दी से गेट लॉक किया, और उसकी तरफ पलटी….

में: (गुस्से से चिल्लाते हुए) वही रुक जा हरामजादे…….

मेरी आवाज़ सुन कर अभिषेक मेरी तरफ पलटा, और हैरत से मेरी तरफ देखने लगा.

में: हां तुझे ही कह रही हूँ…..वेश्या की औलाद…….

अभिषेक: क्या हुआ आंटी आप मुझसे ऐसे क्यों बात कर रही है………

में गुस्से से उसकी तरफ बढ़ी, और उसको उसके बालों से पकड़ कर खेंचते हुए ४-५ झापड़ उसके मूह पर दे मारे……पर इस अचानक हमले से वो लड़खड़ा कर पीछे गिर गया…..पर गुस्सा अभी भी शांत नही हुआ था….में फिर उसकी तरफ लपकी…..पर उसने मुझे पीछे धक्का दे दिया…..

में: हरामज़ादे हमारी इज़्ज़त को उछालता है….में तुझे जिंदा नही छोडूँगी…….

में उसकी तरफ फिर लपकी, और उल्टे हाथ पैर चलाने लगी…….अभिषेक भी बचने के लिए हाथ पैर चलाने लगा….प्राजक्ता जो अब तक अंदर खड़ी तमाशा देख रही थी भागते हुए बाहर आ गयी.और मुझे पकड़ने लगी……..

प्राजक्ता: माँ क्या कर रही हो….पूरा माहौल्ला इकट्ठा हो जाएगा……

में: प्राजक्ता में कहती हूँ छोड़ मुझे…….में आज इसे जिंदा नही छोडूँगी…….

अभिषेक: अबे क्या नौटंकी लगा रखी है……..मेने तेरी लड़की के साथ कोई ज़बरदस्ती नही की, अगर मेरी ग़लती है तो तेरी भी लड़की की उतनी ही ग़लती है…….

में: तू अभी के अभी निकल यहाँ से…..में तेरी शकल भी नही देखना चाहती. आज के बाद इधर नज़र उठाई तो तेरी आँखें निकाल दूँगी……

अभिषेक: जा रहा हूँ.. जा रहा हूँ….मुझे भी कोई शाँक नही है यहाँ रहने का….वो तो प्राजक्ता से प्यार करता हूँ इसीलिए चुप हूँ…….

में: चुप कर हरामी ! गंदी हरकते करके उसे प्यार का नाम देता है..दफ़ा हो जा यहाँ से……

अभिषेक अपने रूम का डोर पटके हुए अंदर गया, और अपने कपड़े और समान बॅग में डालने लगा…..में बाहर बरामदे में चारपाई पर बैठ गयी…. अभिषेक अपना समान बॅग में डाल कर चला गया……कुछ दिन घर का महॉल ऐसे ही रहा. अभिषेक के जाने के बाद प्राजक्ता उदास रहने लगी थी…..मुझे डर था कि बचपने में वो कोई ग़लत कदम ना उठा दे…..

धीरे धीरे घर का माहॉल ठीक होने लगा……फिर हमारे दो रूम रेंट पर चढ़ गये…..दोनो ही रूम एक फॅमिली ने रेंट पर लिए थे….उनके बच्चे अभी बहुत छोटे थे……इसीलिए एक दिन मेने अपने जेठ और जेठानी के घर जाने का प्लान बनाया. में सुबह किरायेदार की बीवी को ये बोल कर चली गयी कि, में किसी काम से जा रही हूँ…..वो प्राजक्ता का ध्यान रखे………

जब में अपनी जेठानी के घर पहुचि, तो वो मुझे देख कर बहुत खुश हुई, मानसी ने मुझे अंदर बुलाया और खातिरदारी की, उसके बाद में हमने थोड़ा इधर उधर की बातें की……

मानसी: और दीदी बताए कैसे आना हुआ……

में: दरअसल में इसलिए आई थी कि, में चाहती हूँ कि तुम प्राजक्ता के लिए भी कोई अच्छा सा रिश्ता ढूँढ दो…..उसकी शादी भी जल्द से जल्द करवानी है मुझे…..

मानसी: क्या हुआ दीदी कोई बात है क्या ?

में: नही ऐसे ही, दरअसल मेरी तबीयत भी आज कल ठीक नही रहती……सोचती हूँ कि आँखें बंद करने से पहले प्राजक्ता भी अपने घर चली जाए…..

मानसी: क्या हुआ दीदी आग लगे दुश्मनो को……अभी तो आप जवान हो….फिर ऐसी बात क्यों कर रही है……

में: मानसी प्लीज़ प्राजक्ता के लिए अच्छा सा रिश्ता ढूँढ लो…….प्राची को अपने ससुराल में खुश देखती हूँ तो दिल का बोझ हल्का हो जाता है…..

मानसी: में समझती हूँ दीदी…..इनको आने दो आज रात को ही बात करती हूँ…

में: ठीक है और सूनाओ बच्चे कैसे है…….

मानसी: ठीक है दीदी…….स्कूल गये है…….

दोफर को खाने के बाद में घर वापिस आ गयी…..जब में घर वापिस आई तो, प्राजक्ता घर पर नही थी……जब मेने किरायेदार से पूछा तो बोली, वो उसकी सहेली आई थी, उसके साथ मार्केट गयी है…….मुझे पता नही क्यों चिंता होने लगी थी……उस वाक़ए को ३ महीने गुजर गये थे……..उसके बाद से ना तो मेने अभिषेक की शकल देखी थी, और ना ही नाम सुना था……थोड़ी देर बाद प्राजक्ता भी आ गयी……दिन गुज़रते गये…..

८

अप्रैल का महीना था……शाम के ४ बजे की बात है…..उस घटना को लगभग ६ महीने हो चुके थे…..में अपने घर में बैठी हुई सिलाई का काम कर रही थी……१० दिन पहले जो फॅमिली हमारे घर रहने आई थी.वो भी कमरा खाली कर जा चुके थे……..

कई जगह प्राजक्ता के रिश्ते की बात चली, पर बात नही बन पाई……उस दिन में बैठी कपड़े सिल रही थी….प्राजक्ता अपनी सहेली के घर में थी पड़ोस में तभी बाहर डोर बेल बजी…….मेने सोचा कि, प्राजक्ता आ गयी है…मेने जैसे ही बाहर जाकर गेट खोला तो, मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गयी…..सामने अभिषेक खड़ा था….उसको देखते ही मेरी रगो में खून का दौरा तेज हो गया …

में: तू तू क्या लेने आया है इधर……

अभिषेक कुछ नही बोला, और मेरी तरफ एक पॅकेट बढ़ा दिया……”क्या है ये” मेने गुस्से से उससे कहा…..”देखो लो…..तुम्हारे लिए बहुत ज़रूरी समान है इसमे” मेने उसके हाथ से वो पॅकेट नही लिया…..उसने एक बार मेरी तरफ देखा, फिर उसने वो पॅकेट गेट के अंदर नीचे फेंक दिया……फिर वो मुड़कर वापिस चला गया…..मुझे समझ में नही आया वो यहाँ क्या करने आया है….मेने गेट बंद किया, और पॅकेट को उठा कर खोला…….

जैसे ही मेने पॅकेट खोला, तो उसमे से एक डीवीडी डिस्क निकल कर बाहर आ गयी….और उसमे एक स्लिप भी थी जिस पर लिखा हुआ था ये डीवीडी देखने के बाद तुम्हे मेरी ज़रूरत पड़ेगी…..और उसके नीचे उसका मोबाइल नंबर लिखा हुआ था……

मेने गेट लॉक किया, और अंदर आ गयी…..नज़ाने क्यों मेरा दिल बहुत घबरा रहा था….प्राजक्ता भी पड़ोस के घर में थी….मेने वो डीवीडी ली, और उसे डीवीडी प्लेयर में लगाया….थोड़ी देर बाद उसमे कुछ शुरू हुआ…..कॅमरा कुछ घूम सा रहा था……फिर किसी का हाथ कॅमरा के सामने आया, और कॅमरा एक जगह सेट हो गया……ये किसी रूम का नज़ारा था……

पर मुझे समझ में नही आ रहा था कि कहाँ का सीन था. थोड़ी देर बाद अभिषेक उसमे दिखाई दिया…वो बेड पर बैठा हुआ था……और वो किसी से बात कर रहा था. जो शायद

कॅमरा के दूसरी तरफ था…..फिर वो शक्स सामने आया………जिसे देखते ही मेरी रूह तक काँप गयी…..वो प्राजक्ता थी…..प्राजक्ता अभिषेक के पास आकर बेड पर बैठ गयी…..में बड़ी हैरानी से ये सब देख रही थी….क्योंकि जिस रूम में वो क्लिप बनी थी वो हमारा नही था…….

फिर अभिषेक ने प्राजक्ता को पकड़ कर अपनी तरफ खेंचा, और उसके होंठो पर होंठ लगा दिए…..ये देखते ही मेरे पैरो की ज़मीन खिसक गयी…….प्राजक्ता कब उससे मिलने गयी……..मुझे याद भी नही था कि, कब वो इतनी देर तक घर से बाहर रही…मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था……प्राजक्ता भी अपने बाहें अभिषेक के गले में डाले हुए, उसका पूरा साथ दे रही थी……

मेरे आँखें टीवी पर इस कदर गढ़ गई थी कि, में अभिषेक की हर हरक़त को देखने की कोशिश कर रही थी………और मेरा दिल बैठा जा रहा था…..अभिषेक ने अपने हाथों को उसकी कमर से ऊपर लेजाते हुए, प्राजक्ता की स्तनों पर ले गया. जिसके कारण प्राजक्ता उससे और चिपक गयी……..वो प्राजक्ता के होंठो को चूस्ते हुए उसकी स्तनों को दबा रहा था…….और बार बार उसको अपनी तरफ खेंच रहा था….

फिर उसने प्राजक्ता की कमीज़ को दोनो तरफ से पकड़ कर ऊपर उठाना शुरू कर दिया…..और मुझे ये देख कर बहुत हैरानी हुई, ये सब करते हुए, प्राजक्ता भी उसका पूरा साथ दे रही थी….अगले ही पल उसने प्राजक्ता की कमीज़ को उसके बदन से अलग कर नीचे फेंक दिया……..प्राजक्ता की कमीज़ को नीचे फर्श पर देख कर मुझे ऐसा लगा कि हमारी इज़्ज़त नीचे फर्श पर पड़ी धूल चाट रही है….

फिर उसने उसकी स्तनों को ब्रा के ऊपर से पकड़ कर मसलना शुरू क्या..प्राजक्ता उसकी बाहों में छटपटाने लगी……..फिर अभिषेक ने एक हाथ नीचे लेजाते हुए, उसकी सलवार का नाडा खोल दिया……प्राजक्ता बेशर्मो की तरह उसकी गोद में बैठी हुई थी…..जब अभिषेक ने उसकी सलवार को नीचे सरकाना शुरू किया…उसने बड़ी बेशर्मी से अपनी नितंब को ऊपर उठा लिया……..और अभिषेक ने खेंचते हुए उसकी सलवार उसके पैरों से निकाल कर नीचे फेंक दी……

कॅमरा का फोकस सीधा उन पर था……मेरी अपनी बेटी उस हरामी की गोद में अधनंगी बैठी हुई थी…फिर अभिषेक ने पीछे से उसकी टाँगों को घुटनो से मोड़ कर फेला दिया……..और एक हाथ आगे लेजा कर उसकी पैंटी को एक साइड में कर दिया…..मेरी तो आँखें फटी की फटी रह गयी….पैंटी को साइड करके, उसने प्राजक्ता की योनि की फांकों को अपने हाथ की उंगलियों से खोला…उसका गुलाबी छेद में साफ साफ देख पा रही थी……..तभी टीवी पर ब्लॅक स्क्रीन आ गयी….

डीवीडी ख़तम हो चुकी थी……मैं सच में बहुत घबरा गयी थी…मुझे समझ में नही आ रहा था कि में क्या करूँ…….तभी फोन की रिंग बजी……मेने जल्दी से प्लेयर में से डीवीडी निकली, और अपने साथ लेकर अपने रूम में आ गयी….

मेने काँपते हुए हाथों से फोन उठाया, और बड़ी ही मुश्किल से हेलो कहा..उधर से अभिषेक की आवाज़ थी…..

अभिषेक: क्यों आंटी जी कैसे लगी फिल्म……

में: अपनी बकवास बंद कर, अगर तू मेरे सामने होता ना…तेरा मूह तोड़ देती में…..

अभिषेक:ओह इतना गुस्सा ! इतना गुस्सा ठीक नही है आपकी सेहत के लिए…..ये तो सिर्फ़ टेलर था…..अभी तो पूरी फिल्म बाकी है……तो बोलो कब आ रही हो ?

में: क्या ?

अभिषेक: पूरी फिल्म देखने जो मेरे पास है …….

में: हरामज़ादे में तुम्हारी रिपोर्ट पोलीस में करदुंगी,

अभिषेक: ना ना ना भूल कर भी ऐसी ग़लती मत करना…..नही तो मुझ से बुरा कोई ना होगा……..पूरे बाज़ार में तुम्हारी बेटी की सहवास की मूवी बना कर बेच दूँगा….और पता है नाम क्या रखूँगा…..प्राजक्ता ठुकी अपने यार के लिंग से…हा हा हा”

उसकी वो कमीनी हँसी ने मुझे अंदर तक झींझोड कर रख दिया……”में तेरी बातों में नही आने वाली कमीने.जब पोलीस के हत्ते चढ़ेगा ना तब पता चलेगा. ऐसी जगह लेजा कर मारूँगी कि तुझे पानी पूछने वाला कोई ना होगा.” में गुस्से में जो मन में आ रहा था बोले जा रही थी..

अभिषेक: ओह्ह अच्छा रस्सी जल गयी पर बल नही गया….देखते है कि तुम क्या कर सकती हो…..मेरे तो आगे पीछे कोई रोने वाला भी नही…..में तो मर जाऊंगा. पर तुझे और तेरी बेटी को कहीं का नही छोड़ूँगा…….अब तू देख में क्या करता हूँ

ये कह कर उसने फोन रख दिया…….में वही बैठ कर फुट फुट कर रोने लगी…और उस मनहूस घड़ी को याद कर कोसने लगी…..जब मेने उसे अपने यहाँ रहने के लिए रूम दिया था……में काफ़ी देर तक वही बैठी रोती रही….और पता नही कब मेरी आँख लग गयी…..में तब उठी जब प्राजक्ता ने बाहर आकर डोर बेल बजाई…..मेने उठ कर बाहर गयी, और गेट खोला……मेरी आँखें रोने से लाल हो चुकी थी……

जिसका पता प्राजक्ता को चल गया……..” क्या हुआ माँ आप रो रही थी” मेने अपने आप को संभालते हुए कहा…”नही बस वो प्राची की याद आ रही थी…..में ये बात प्राजक्ता को नही बताना चाहती थे…..में चुप चाप अपने रूम में आ गयी….मुझे यही डर सता रहा था कि, गुस्से में अभिषेक कुछ उल्टा सीधा ना कर दे…..में तो किसी को मूह दिखाने के लायक नही रहूंगी……

रात को प्राजक्ता ने खाना बनाया……..पर मेरा मन खाने को नही था..इसीलिए में तबीयत ठीक ना होने का बहाना बना कर अपने रूम में आ गयी… में दिल बुरी तरह घबरा रहा था…..मुझे कुछ समझ में नही आ रहा था कि, में इस मुसबीत से कैसे छुटकारा पाऊ….अब मेरे सामने मुझे कोई रास्ता नही आ रहा था….में काफ़ी देर तक बस यही सोचती रही…मेने घड़ी की तरफ देखा रात के १० बज रहे थे…..अब मुझे इस मुसीबत से निपटना ही था…

में बेड से खड़ी हुई, और उस पॅकेट में जो स्लिप थी उसे निकाला, और अपने काँपते हुए हाथों से उस पर लिखा मोबाइल नंबर डायल किया….थोड़ी देर रिंग बजने के बाद उधर से अभिषेक की आवाज़ आई……

अभिषेक: हेलो क्या हुआ नींद नही आ रही क्या ? सच सच बताना मेरे ही बारे में सोच रही थी ना?

में: अपनी बकवास बंद करो. और बताओ कि तुम क्या चाहते हो….आख़िर हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है…..आख़िर तुम हमारे साथ ये सब क्यों कर रहे हो ?

अभिषेक: अर्रे वाह तुम्हें तो भूलने की बीमारी अभी से लग गयी है.भूल गयी उस दिन कैसे तुम ने मुझे जलील करके घर से निकाला था….अब ध्यान से सुनो कल तुम मुझे मेरे घर पर आकर मिलो….अगर तुम चाहती हो कि, तुम्हारी बेटी की वो क्लिप दुनिया के सामने ना आए तो, और हां किसी से ये बात की तो, मुझसे बुरा कोई नही होगा…..

में: ठीक है ! में आउंगी….पर तुम वो क्लिप किसी को ना देना…में तो जीते जी मर जाऊंगी…..

अभिषेक: ठीक है…….अगर तुम चाहती हो कि, में वो क्लिप किसी को ना दिखाऊ…तुम्हे मेरी हर बात माननी होगी…..में जैसा कहूँ करना होगा……

में: (अभिषेक के इस तरह की बात करने पर मुझे अभिषेक की नियत पर शक होने लगा था.) तुम तुम चाहते क्या हो……

अभिषेक: में वही चाहता हूँ जो मेने तुम्हारी बेटी के साथ किया…….बस एक बार अपनी योनि का स्वाद चखा दो…..उसके बाद में वो क्लिप तुम्हे दे दूँगा….में प्रॉमिस करता हूँ……दोबारा तुम्हे तंग नही करूँगा……

अभिषेक ने उसी वक़्त फोन काट दिया….और उसके बाद में वही बैठी रोने लगी….नज़ाने में कितनी देर तक रोती रही……वो हराम की औलाद मुझसे ऐसे बात कर रहा था……. और फिर बेड पर लेटे लेटे नींद आ गये.

९

अगली सुबह जब में उठ कर रूम से बाहर आई तो देखा,प्राजक्ता अभी तक सो रही थी… मेने उसे आवाज़ देकर उठाया, और फिर फ्रेश होकर नाश्ता बनाने लगी. प्राजक्ता भी फ्रेश होकर मेरी हेल्प करने लगी….नाश्ता तैयार करने के बाद अपने रूम में गयी, और अपनी जेठानी को फोन लगाया….

मानसी: हेलो…..

में: हेलो दीदी में बोल रही हूँ वंदना…..

मानसी: हां वंदना बोलो. इतनी सुबह सुबह……..

में: हां दीदी दरअसल मुझे कुछ काम था….

मानसी: हां बोलो क्या काम है ?

में: दीदी आज तो सनडे है ना…..बच्चे और भाई साहब घर पर ही होंगे…

मानसी: बच्चे तो घर पर है, पर ये काम पर गये है…..रात को आएँगे…

में: दीदी क्या आप आज बच्चो के लेकर हमारे घर आ सकती हो……..दरअसल मुझे किसी काम से बाहर जाना है…….तो प्राजक्ता घर पर अकेली है…..

मानसी: हां हां क्यों नही….वैसे भी मेरा भी दिल कर रहा था.वहाँ आने को…तुमने कब जाना है…..

में: बस जैसे ही आप आएँगी में चली जाऊंगी…..और शाम तक आ जाऊंगी……

मानसी: ठीक है तो में इनको फोन कर देती हूँ……शाम वो हमे तुम्हारे घर से लेते आएँगे……..

में: ठीक है दीदी.......

१० बजे मानसी दीदी आ गयी अपने बच्चो के साथ......मेने थोड़ी देर उनके साथ बातें की, और फिर इजाज़त लेकर अभिषेक के बताए हुए पते पर जाने के लिए घर से निकली...... मुझे मालूम नही था कि जो में करने जा रही हूँ.....वो ठीक है या नही.....पर उस मुसबीत की घड़ी में मुझे जो सही लगा.....में करती गयी...

बाहर रोड पर आकर मेने एक ऑटो वाले को वो पर्ची दिखाई, और बोला इस पते पर जाना है.....ऑटो वाले, ने इशारे से बैठने को कहा..में ऑटो में बैठ गयी....और ऑटो वाला ऑटो चलने लगा.....मेरा दिल जोरो से धड़क रहा था. आगे क्या होगा यही सब सोच सोच कर मेरे हाथ पैर थर थर कांप रहे थे.

मुझे लग रहा था. जैसे में किसी दलदल में धँसती जा रही हूँ, और उम्मीद की कोई किरण नज़र नही आ रही थी....जैसे जैसे ऑटो उस बताए हुए पते की तरफ बढ़ रहा था...मेरे हाथ पैर सुन्न होते जा रहे थे....मेरा दिल पूरे जोरो से धड़क रहा था....तभी अचानक ऑटो वाले ने ब्रेक लगा दी, और पीछे पलट कर बोला.

ऑटो वाला: लो जी मेडम जी. पहुँच गये....वो जो सामने वाइट पैंट वाला घर दिखाई दे रहा है ना...वही घर है....

उसकी बात सुन कर मानो जैसे मेरी साँस ही रुक गयी हो.....में ऑटो से नीचे उतरी ,और ऑटो वाले को पैसे दिए.....ऑटो वाले ने ऑटो स्टार्ट किया, और वापिस मूड गया......मेने हिम्मत करके उस घर की तरफ चलना शुरू किया...पूरी गली सुनसान थी..ऐसा लग रहा था जैसे इस गली में कोई रहता ही ना हो....

जैसे जैसे में उस घर की तरफ बढ़ रही थी.......मेरा दिल डर के मारे बैठा जा रहा था....किसी तरह काँपते पैरों से चलते हुए, में उस घर के गेट के बाहर पहुचि, और वही खड़ी होकर सोचने लगी. कि जो में कर रही हूँ ठीक कर रही हूँ या नही......मुझे ये बात किसी को तो बतानी चाहिए थी...फिर अगले ही पल अभिषेक की वो धमकी याद आ गयी......

जब उसने कहा था कि, वो तो अनाथ है. मर भी जाएगा तो कोई रोने वाला भी नही…… मुझे सच में लग रहा था कि, अभिषेक कुछ भी कर सकता था…..मुझे उस पर गुस्सा भी आ रहा था और हैरत भी हो रही थी…..कि इतनी सी उम्र में ये सब उसके दिमाग़ में कहाँ से आ गया……..

मेने हिम्मत करते हुए डोरबेल बजाई, और थोड़ी देर बाद गेट खुला, तो सामने अभिषेक खड़ा मेरी तरफ देखते हुए अजीब से ढंग से मुस्करा रहा था.उसने एक बार मुझे सर से पाँव तक घूर कर देखा, और फिर चेहरे मुस्कान लाते हुए बोला.''चल अंदर आ जा''

में किसी बुत की तरह घर के अंदर आ गयी…..अंदर आते ही, उसने गेट बंद कर दिया, और बिना कुछ बोले, घर के अंदर जाने लगा…..में बिना कुछ बोले उसके पीछे चली गयी…..जैसे ही में उसके पीछे रूम में दाखिल हुई, तो मेरे पैरो के नीचे से ज़मीन खिसक गयी……

ये वही रूम था. जो मेने उस क्लिप में देखा था….मुझे यकीन नही हो रहा था कि, प्राजक्ता इतनी दूर यहाँ कैसे आ गयी…….दिल में हज़ारो सवाल घर किए हुए थे….

में: आख़िर तुम चाहते क्या हो ? क्यों कर रहे हो ये सब हमारे साथ ?

अभिषेक: (गुस्से से गुर्राते हुए) साली अब तो ऐसी भोली बन रही है…..जैसे तुझे कुछ पता ही ना हो……..मादरजात उस दिन तो तू मुझे जान से ही मार देती….अब में बताता हूँ कि अभिषेक से पंगा लेने का अंज़ाम क्या होता है…..

में: देखो अभिषेक में तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूँ……अपनी ग़लती की माफी मांगती हूँ ! प्लीज़ कुछ ग़लत ना करना……..हमारी तो दुनिया ही बर्बाद हो जाएगी..

अभिषेक: ये तो तुम्हे पहले सोचना चाहिए था……जब तूने मुझे पिटा था.

में: प्लीज़ अभिषेक मुझे माफ़ कर दो…..वो क्लिप मुझे दे दो…..तुम जो कहोगे में करूँगी……

अभिषेक: अच्छा जो में कहूँगा वो तुम करोगी ?

मुझे अपनी ग़लती का अहसास हुआ, कि मेने डर में क्या बोल दिया था……अभिषेक मुस्कुराते हुए खड़ा हुआ, और अलमारी के पास जाकर उसे खोल कर कुछ ढूँढने लगा….और फिर वो मेरी तरफ पलटा…..उसके हाथ में एक रेड कलर की पैंटी और ब्रा थी…..वो मुझे पैंटी और ब्रा दिखाते हुए बोला……

अभिषेक: तुम्हे पता है ये किसकी है ?

में मूह फाडे उसकी तरफ देखे जा रही थी…….में कुछ भी बोल ना पा रही थी……”ये तुम्हारी बेटी प्राजक्ता की है. मेने उसे गिफ्ट में लाकर दी थी. अब अगर तुम चाहती हो कि, में वो क्लिप तुम्हे दे दूं….तो इसे लेकर बाथरूम में जाओ और पहन कर मेरे सामने आओ” अभिषेक की ये बातें तीर की तरह मेरे कानो में लग रही थी……मुझे यकीन नही हो रहा था कि, मेरे बेटे की उम्र का लड़का मेरे सामने मुझसे ये बात कर रहा है…..

इसमे इतनी हिम्मत आई कहाँ से…….मुझे यकीन नही हो रहा था…..”अब सोच क्या रही है…जा जल्दी से जाकर इसे पहन कर आ……..साला आज लिंग ने सुबह से ही, तंग कर रखा है……देखना आज तेरी योनि का कैसे पानी निकालता हूँ..”

में: अपनी बकवास बंद करो……..में कुछ नही करने वाली……..और तुम जो मुझे ब्लॅकमेल कर रहे हो ना……तुम्हारे लिए बहुत बुरा होगा……तुम जानते नही में कौन हूँ……

अभिषेक: (हंसते हुए)हाँ हाँ जानता हूँ अच्छी तरह जानता हूँ…….साली घर में तेरे खाने के लाले पड़े है, और बन तो ऐसी रही है…….जैसे कमिश्नर की बीवी हो….चुप चाप जैसे में कहता हूँ कर वरना यहाँ मेने तुझे तेरी शकल देखने के लिए नही बुलाया……नही तू फुट यहा से…….में देखूँगा मुझे क्या करना है……साली पूरे देश में तेरी बेटी की नंगी क्लिप को ना बेचा तो मेरा नाम अभिषेक नही……तो आज ही देख लेना……

INDIAN BEST TELEGRAM ADULT (18) CHANNELS

हिंदी Adult स्टोरी, Adult कॉमिक्स, सबसे अनूठे देसी मस्ती भरे XXX वीडियोज, हिंदी एडल्ट शायरिया, फन्नी एडल्ट जोक्स का अनूठा संगम..!! 🔞💯

(*Top To Click Here Join*)

X Night Clubs

Click Here

Adult Comics Club

Click Here

Adult Shayari & Stories

Click Here

Night Club Chat Group

Click Here

18 Vargin Girls

Click Here

में: (अभिषेक की बातें सुन कर में बुरी तरहा घबरा चुकी थी) नही अभिषेक तुम ऐसा कुछ नही करोगे…..में में तुम जो कहो करने को तैयार हूँ….

अभिषेक: तो चल फिर ये ले, और जाकर बाथरूम में ये पहन कर मेरे सामने आ….आज तो तेरी योनि मार मार कर सूजा दूँगा…….

ये कहते हुए, उसने वो ब्रा और पैंटी बेड पर फेंक दी……..में नीचे फर्श की तरफ देखते हुए घबरा रही थी…..अब मुझे कोई रास्ता नही सूझ रहा था.''जल्दी कर मेरे पास ज़्यादा टाइम नही'' अभिषेक ने घुरते हुए कहा….मेने नीचे की ओर देखते हुए वो ब्रा और पैंटी उठा ली……और काँपते हुए कदमों से बाथरूम की तरफ जाने लगी……

अभिषेक: जल्दी कर…….टाइम वेस्ट ना करना……

में बाथरूम में घुस्स गयी……मेरी आँखें नम हो चुकी थी…..मेने जैसे ही मेने उस पैंटी और ब्रा को देखा……तो में सोचने लगी कि ये तो प्राजक्ता के साइज़ की है, मेरे कैसे आएगी…..मेने डरते हुए अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिए….और धीरे धीरे सारे कपड़े उतार दिए….फिर मेने उस वी शेप पैंटी को अपने हाथ में लिया….और झुक कर उसे पहनने लगी….

पैंटी तंग तो थी, पर स्ट्रिचबल थी, मेने झुक कर उसे पहनना शुरू किया. और में एक दम हैरान रह गयी…..वो छोटी सी वी शेप पैंटी मेरे नितंबो पर चिपकी हुई थी….फिर मेने वो ब्रा उठा कर पहनी, मुझे यकीन नही हो रहा था कि, वो ब्रा भी मेरे ३८ डी साइज़ की स्तनों पर आ गयी…..तभी बाथरूम का डोर एक दम से खुल गया…सामने अभिषेक खड़ा मेरी तरफ वासना भरी नज़रों से देख रहा था…वो अपने सारे कपड़े उतार कर सिर्फ़ अंडरवेर में खड़ा था…और उसका लिंग उसके अंडरवेर में बड़ा सा तंबू बनाए हुए था……

उसके इस तरह अंदर आजाने से में एक दम घबरा गयी, और उसकी तरफ पीठ करके खड़ी हो गयी…..फिर मुझे पीछे से उसकी कदमो की आहट नज़दीक आती हुई सुनाई दी, मेरा दिल जोरो से धड़कने लगा….में अध नंगी हालत में उसके सामने खड़ी थी….फिर कुछ देर खोमाशी के बाद उसने मुझे पीछे से अपनी बाहों में जाकड़ लाया…..उसके दोनो हाथ मेरी स्तनों पर थे….और उसने मेरी स्तनों को बेहरमि से मसलना शुरू कर दिया…

अभिषेक: आहह साली क्या स्तन है तेरे….आज तो इनको निचोड़ दूँगा……

में: अभिषेक तुम ये ठीक नही कर रहे हो….

अभिषेक: चुप साली वेश्या अब ज़्यादा नखरे करेगी तो, तेरा और तेरी बेटी का जीना मुश्किल कर दूँगा…..चल मेरे साथ……

ये कहते हुए, उसने मेरा हाथ पकड़ा और खेंचते हुए रूम में ले गया….रूम के अंदर आते ही उसने मुझे बेड पर धकेल दिया…..में अपने आप को अभिषेक के सामने इस हालत में पाकर अपनी नज़रे नही उठ पा रही थी…वो कमीनी मुस्कान के साथ मेरी तरफ देखा रहा था….में इस कदर घबराई हुई थी, कि मेरे सोचने समझने की शक्ति भी ख़तम हो गयी थी….

में अब बेड पर अधनंगी लेटी हुई थी……उसने मेरी तरफ देखते हुए, अपने लिंग को एक बार अपने अंडरवेर के ऊपर से मसला, और फिर एक ही झटके में अपने अंडरवेर को उतार कर फेंक गया….उसका का लिंग मेरी आँखों के सामने झटके खा रहा था…..मेने एक पल के लिए ही उसके लिंग की तरफ देखा और फिर अपने नज़रे घुमा ली..

अभिषेक: (बेड पर चढ़ते हुए) क्यों साली पसंद आया अपनी बेटे के यार का लिंग…देख इसे इसी के ऊपर तेरी बेटी चढ़ कर ठुकती है….

मेरे दिल की धड़कने अब और तेज चलने लगी थी…..में अपने आप को उसके सामने इस क़दर महसूस कर रही थी कि, में कुछ बोल भी नही पा रही थी….वो बेड पर धीरे धीरे मेरे पास आ रहा था….फिर अचानक से उसने मुझे मेरी टाँगों से पकड़ कर अपनी तरफ ज़ोर से खेंच दिया….में बेड पर घिसटते हुए लेट गयी….”अह्ह्ह्ह अभिषेक” मेरा सर बिस्तर से जा टकराया…..

पर उस पर तो जैसे कोई शैतान सवार हो गया था….उसने आव देख ना ताव, और मेरी टाँगों को घुटनो से पकड़ कर फेला दिया…मेने जो वी शेप पैंटी पहनी थी…वो मुश्किल से मेरी योनि की फांकों को ढक पा रही थी….मेरी टाँगों के फेलने के कारण मेरी योनि की फांके पैंटी की साइड से बाहर आ गयी…..

मेने शरम और हया से अपनी आँखें बंद कर ली, में जान चुकी थी, कि प्राजक्ता की वजह से जिस दलदल में फँस चुकी हूँ, उससे निकलने का यही एक रास्ता है.... मेने एक बार फिर आख़िरी बार अभिषेक को समझाने की कोशिश की, "देखो अभिषेक ये तुम ठीक नही कर रहे हो......तुम बहुत बड़ा पाप करने जा रहे हो.....अभी भी वक़्त है, में किसी से कुछ नही कहूँगी..."

अभिषेक: चुप साली वेश्या मुझे ज़्यादा समझाने की कोशिश ना कर....

ये कहते हुए, उसने एक हाथ से पैंटी को साइड में कर दिया....उसकी इस हरकत से में एक दम चोंक गयी......इससे पहले कि में कुछ कर पाती, अभिषेक ने अपने लिंग का सुपाडा मेरी योनि के छेद पर टिका कर ज़ोर दार धक्का मारा.....मुझे सहवास किए लगभग ६ साल हो चुके थे......मेरी योनि एक दम सुखी थी....जिसकी वजह से जब अभिषेक के लिंग का सुपाडा मेरी योनि की फांकों को फेलाता हुआ अंदर घुसा तो में दर्द से एक दम चिल्ला उठी......."अहह माआ ओह मर गईई"

एक तो मेरी योनि एक दम सुखी थी, और दूसरा अभिषेक का लिंग लंबा और मोटा था.....जब वो मेरी योनि की दीवारों से रगड़ ख़ाता हुआ अंदर घुसा मुझे ऐसा लगा, जैसे मेरी योनि के दीवारें छिल गयी हो.....में दर्द से छटपटा रही थी....पर अभिषेक को उससे कोई असर नही हो रहा था....उसने मेरी टाँगों को और ऊपर उठा कर फेला दिया.....और फिर से एक ज़ोर दार झटका मारा.. इस बार धक्का इतना जबरदस्त था कि, मेरा पूरा बदन दर्द से काँप गया.....और मेरी आँखों से आँसू निकलने लगी....

इस बार अभिषेक का लिंग पूरा का पूरा मेरी योनि में उतर चुका था....."अहह बहुत दर्द हो रहा है माआअ में मर जाऊंगी" में दर्द से सिसक रही थी. पर अभिषेक किसी बात की परवाह नही कर रहा था....उसका लंबा लिंग जड तक मेरी योनि में घुस चुका था.....में हैरान और परेशान ये सब देखते हुए सोच रही थी कि, इस उम्र में इसका लिंग इतना बड़ा कैसे हो सकता है....मेने दो बेटियों को जनम दिया था....इसके बावजूद भी मुझे अपनी योनि उसके लिंग के चारो और कसी हुई मालूम हो रही थी....

उसने अपने लिंग को बाहर की तरफ खेंचा....जिससे एक बार फिर उसका लिंग मेरी योनि की दीवारों से रगड़ खाने लगा......और में दर्द से तिलमिलाने लगी..."फिर उसने अपने लिंग को बाहर निकल लिया....और मेरी पैंटी को दोनो साइड से पकड़ कर मेरी टाँगों से

खेंचते हुए निकाल कर एक तरफ फेंक दिया…..फिर उसने मेरी टाँगों को पकड़ कर ऊपर उठा दिया….इतना ऊपर कि मेरे घुटने मेरी स्तनों पर दब गये…..

में: आह अभिषेक प्लीज़ ऐसे ना करो….मुझ पर थोड़ा सा रहम खाओ….

पर अभिषेक तो जैसे मेरे बात सुन ही नही रहा था….उसकी आँखें मेरी योनि पर गढ़ी हुई थी..और उसकी आँखों में वासना साफ झलक रही थी…उसने मेरी योनि पर झुकते हुए एक ही पल में मेरी योनि पर मूह लगा दिया….आज तक कभी मेरी योनि को मेरे पति ने भी सक नही किया था…..ऐसा अहसास मुझे पहली बार होने वाला था…..जैसे ही उसका मूह मेरी योनि पर लगा…..में तड़पते हुए एक दम से सिसक उठी…..”अहह अभिषेक ये ये क्या कर रहे हो ओह्ह अभिषेक में पागल आह आहह ओह”

मेरे पूरे बदन में सर्सराहट दौड़ गयी…..ना चाहते हुए भी मेरे मूह से सिसकारियाँ निकलने लगी…..पहली दफ़ा कोई मेरी योनि चाट रहा था…इसके बारे में सिर्फ़ सुना था….और सच बता रही हूँ…वो पल आज भी मेरे बदन को रोमांच से भर जाता है…..वो अपनी जीभ निकाल कर पागलों की तरह मेरी योनि की फांकों और योनि के छेद पर रगड़ रहा था…..में मज़े से तिलमिलाए जा रही थी…..मुझे ऐसा लग रहा था कि, अपने होशोहवास खो बैठूँगी…..और सच में हो भी ऐसे ही रहा था…..

फिर अभिषेक ने मेरी योनि की फांकों को अपने हाथों से पूरा फेला दिया, जिससे मेरी योनि का क्लिट जो कि उस समय फूल कर आधे इंच का हो चुका था…उसे अपने मूह में भर कर जोर जोर से चूसना शुरू कर दिया……

में: अहह ओह अभिषेक्त्त प्लीज़ छोड़ दो अहह सीईईईईईईई उंह अहह उंघह ओह्ह्ह अभिषेक……

मुझे अब साँस लेने में भी तकलीफ़ होने लगी थी….मुझे ऐसा लगने लगा था कि, अब में कई सालों बाद झड़ने के करीब पहुँच चुकी हूँ….पर अचानक अभिषेक ने अपना मूह मेरी योनि से हटा लिया, और अपने लिंग के सुपाडे को मेरी योनि के छेद पर लगा कर मेरी तरफ देखते हुए कहा…..

अभिषेक: क्यों वेश्या मज़ा आ रहा था ना……अब देख तेरी योनि कैसे फाड़ता हूँ….आज तेरी योनि में लिंग ठोक ठोक कर सूजा दूँगा…..

फिर अभिषेक ने अपने लिंग के सुपाडे को मेरी योनि के छेद पर दाबना चालू कर दिया. मुझे लगा एक बार फिर से मेरी जान निकल जाएगी…..पर इस बार मुझे दर्द नही हुआ… क्योंकि मेरी योनि अब अभिषेक के थूक से सनी हुई थी…और मुझे लग रहा था कि आज कई सालो बाद मेरी योनि ने भी पानी निकाला है…..अभिषेक का लिंग फिसलता हुआ मेरी योनि में समाता जा रहा था…..

उसका सेब जैसा मोटा सुपाडा जब मेरी योनि की दीवारों से रगड़ ख़ाता हुआ अंदर जा रहा था, तो मेरे बदन में मस्ती की लहर दौड़ती जा रही थी……मेरा बदन थरथर काँप रहा था…..योनि के अंदर लिंग के घर्षण के कारण में एक दम मदहोश हो गयी……और अपने होंठो को दाँतों से काटते हुए, बेड शीट को अपने हाथों में कस के पकड़ लिया…मुझे अभिषेक का लिंग अपनी बच्चेदानी से टकराता हुआ महसूस हुआ, और में एक दम से सिसक उठी……….

अभिषेक मेरे ऊपर झुक गया, और मेरे होंठो की तरफ अपने होंठो को बढ़ाने लगा…..उसके होंठो पर मेरी योनि का पानी अभी भी लगा हुआ था…जिसे देख कर मेने घिन से दूसरी तरफ मूह घुमा लिया…..मेरी इस हरक़त पर वो गुस्से से बोला..”क्या वेश्या तेरी ही योनि का पानी है” और ये कहते हुए उसने मेरे बालों को खेंच कर मेरे फेस को सीधा कर दिया……

सर के बाल खिच जाने के कारण में दर्द से कराह उठी…..और उसने मेरे होंठो को अपने होंठो में भर कर चूसना शुरू कर दिया…..अभिषेक मेरे होंठो को चूस्ते हुए,अपने दोनो हाथों को मेरी पीठ के पीछे लेगया, और ब्रा के हुक्स खोल कर ब्रा को निकालने लगा….में पहले से ही उसके सामने अध नंगी लेटी हुई थी. और में नही चाहती थी कि, मेरे तन पर बचा ये आख़िरी कपड़ा भी उतर जाए..इसलिए मेने अपने दोनो हाथों से ब्रा के कप्स को पकड़ लिया….

पर उसके सामने अब मेरी कहाँ चलने वाली थी…..उसने ब्रा को खेंचते हुए मेरे बदन से अलग कर बेड पर फेंक दिया…..मैं अपने दोनो हाथों से अपनी स्तनों को ढकने की कोशिश करने लगी…..”चल हाथ हटा साली, अब क्या बचा है जो तू नखरे कर रही

है….लिंग तो पहले ही योनि में लिया हुआ है तूने…..” ये कहते हुए उसने मेरे दोनो हाथों को पकड़ कर स्तनों से हटाते हुए मेरे सर के दोनो तरफ बेड पर टिका दिया……..

और मेरे हाथों को पकड़े हुए, मेरी स्तनों पर झुकते हुए, मेरे एक स्तन को मूह में भर लिया…..उसकी गरम जीभ को अपने स्तनाग्र पर महसूस करते ही, में एक दम से तड़प उठी……मेरी आँखें मस्ती में बंद हो गयी……ना तो मुझे अच्छा लग रहा था, और ना ही मुझे रोना आ रहा था…पता नही अजीब से स्थिती थी….वो जितना हो सकता था, मूह कर खोल कर मेरे राइट साइड वाले स्तन को मूह में भर कर चूसने लगा….

में: अहह अभिषेक प्लीज़ ऐसे ना करो……

अभिषेक: (अपने मूह को स्तनों से हटाते हुए) क्यों ना करूँ…..(और फिर उसने उस स्तन को मूह में भर लिया)

में: उंह श्ह्ह्ह्ह अभिषेक मुझे कुछ हो रहा है…

इस बार उसने कोई जवाब नही दिया, और मेरे स्तनाग्र को चूस्ते हुए, अपने लिंग को आधे से ज़यादा बाहर निकाला, और फिर धीरे धीरे अपने लिंग को मेरी योनि के अंदर बाहर करने लगा……आज कई बरसो के बाद ठुक रही थी…..इस लिए में अपना आपा खोती जा रही थी….अभिषेक के धक्को की रफ़्तार लगतार बढ़ती जा रही थी….जब उसके लिंग का सुपाडा मेरी योनि की दीवारों से रगड़ ख़ाता हुआ अंदर बाहर होता, मेरे पूरे बदन में सिहरन दौड़ जाती….और में मस्ती में तड़प उठती…

मेरे दोनो स्तनाग्र एक दम तन कर टाइट हो चुके थे……मुझे अपने स्तनाग्र में सरसराहट होती साफ महसूस हो रही थी…उसके हर झटके से मेरा पूरा बदन हिल जाता….में अब उसका बिलकुल भी विरोध नही कर रही थी…..उसने मेरे हाथों को छोड़ कर अपना मूह मेरी स्तनों से हटाया, और अपने लिंग के झटकों को रोक मेरी तरफ देखने लगा…….मेने अपनी आँखें खोल कर उसकी तरफ देखा, तो वो मेरे तरफ देखते हुए मुस्करा रहा था…..

फिर अभिषेक ने अपने होंठो को मेरे होंठो के तरफ बढ़ाना शुरू कर दिया…..अब में अपने होशोहवास पूरी तरह खो चुकी थी…..मेने अपनी आँखें फिर से बंद कर ली….और वो

भूखे जानवर के तरह मेरे होंठो को सक करने लगा…वो कभी मेरे नीचे वाले होंठ को चूस्ता, तो कभी ऊपर वाले होंठ को कभी वो अपने दाँतों को मेरे होंठो में गढा देता……तो मुझे दर्द का अहसास होता… मेरा पूरा बदन मस्ती के कारण काँप रहा था…..

वो ५ मिनिट तक मेरे होंठो को निचोड़ता रहा….और जब उसका मन भर गया तो, वो मेरे ऊपर से उठ गया…..उसका तना हुआ लिंग मेरी योनि से पच की आवाज़ से बाहर आ गया…..मेने बड़ी मुश्किल से अपनी आँखें खोल कर उसकी तरफ देखा,उसका लिंग मेरी योनि से निकल रहे पानी से एक दम भीगा हुआ था…..मेरे ऊपर से उठते हुए, उसने मुझे मेरे बालों से पकड़ कर खड़ा किया……और बेड से नीचे उतारते हुए मुझे सोफे पर धकेल दिया……

में सोफे पर घुटनो के बल जा गिरी, फिर उसने मेरे बालों को पकड़ कर सोफे पर डॉगी स्टाइल में कर दिया….और पीछे से अपने लिंग को मेरी योनि के छेद पर रख कर जोरदार धक्का मारा. धक्का इतना जबरदस्त था कि, में आगे की तरफ लूड़क गयी…..उसने मुझे मेरे बलों से खेंचते हुए फिर सीधा किया…..और फिर मेरी नितंब को दोनो हाथों से फेला कर पकड़ लिया…..

अभिषेक: अब देख में तेरी योनि का क्या हाल करता हूँ…..

ये कहते हुए, उसने अपने लिंग को सुपाडे तक बाहर निकाला, और फिर एक ही बार में मेरी योनि की गहराइयों में उतार दिया….उसके लिंग का सुपाडा सीधा मेरी बच्चेदानी से जा टकराया….दर्द और मस्ती से भरी लहर मेरे पूरे बदन में दौड़ गयी और में एक दम से सिसक उठी” अहह उंघह ओह” फिर तो जैसे उस पर कोई भूत ही सवार हो गया हो…..वो अपना लिंग पूरा निकाल निकालकर मेरी योनि में ठोक रहा था……….और में उसके हर धक्के के साथ आहह ओह्ह किए जा रही थी…..

उसका का लिंग किसी एंजिन के पिस्टन के तरह पूरी रफ़्तार से मेरी योनि के अंदर बाहर हो रहा था….उसके लिंग के सुपाडे की रगड़ अपनी योनि की फांकों पर महसूस करके में अब पूरी तरह गरम हो चुकी थी….अब मेरी सिसकारियाँ पूरे रूम में गूंजने लगी थी…….”अहह ओह अभिषेक धीरे आ सीईइ में गइईए आह आह अभिषेक्त मुझी मुझीई अहह”

अभिषेक: हां ले साली आहह औरं ले, आज तेरी योनि फाड़ कर ही रहूँगा..ले मेरा लिंग अपनी योनि में आह…..

मुझे अब बरदाश्त नही हो रहा था…..में झड़ने के बेहद करीब थी…मेने सोफे के साइड को अपने हाथों में कस के दोबच लिया….शायद अभिषेक ये जान चुका था कि, में झड़ने के बेहद करीब हूँ….इसीलिए उसने और तेज़ी से झटके लगाने शुरू कर दिए……मेरी योनि में बरसो से जमा लावा एक दम से फॅट पड़ा…..और में चीखते हुए झड़ने लगी…..मेरा पूरा बदन रह रह कर झटके खा रहा था…..तभी अभिषेक के धक्को की रफ़्तार और बढ़ गयी…..और वो घुरते हुए अपने वीर्य को मेरी योनि में छोड़ने लगा……मुझे अपनी योनि उसके वीर्य से भरती हुई साफ महसूस हो रही थी…

उसके लिंग से गरम पानी निकल कर मेरे पेट की ओर जाता हुआ साफ महसूस हो रहा था…..थोड़ी देर वैसे ही वो मेरी योनि में लिंग डाले खड़ा रहा……और फिर उसने अपने लिंग को बाहर निकाल लाया, और फिर मेरी नितंब पर एक जोरदार झापड़ मारते हुए बोला" उठ साली हो गया" चल बेड पर चल थोड़ी देर बाद फिर से तेरी योनि की ठुकाइ करता हूँ……

में तेज़ी से साँसे लेती हुई सोफे से खड़ी हुई, जैसे ही में खड़ी हुई, मुझे अपनी योनि से कुछ चिपचिपा निकल कर अपनी जाँघो पर जाता हुआ महसूस हुआ, जब मेने नीचे देखा तो उसका वीर्य और मेरी योनि का पानी मेरी जाँघो योनि की फांकों और यहाँ तक मेरी नितंब पर लगा हुआ था…..अपनी सहवास लाइफ में आज तक में इस तरह गीली नही हुई थी…….ये सब मुझे बहुत अजीब सा लग रहा था……में सीधा बाथरूम में चली गयी, और अपने आप को साफ किया….

जब में बाथरूम से कपड़े पहन कर बाहर आई, तो अभिषेक मुस्कुराते हुए मेरी तरफ देख कर बोला " तुझे किसने कहा कपड़े पहनने को" में उसकी ये बात सुन कर थोड़ा सा घबरा गयी…..

में: अभिषेक मुझे बहुत देर हो चुकी है, मुझे जाने दो….और वो क्लिप मुझे दे दो…

अभिषेक: जाना ही तो चली जाओ……पर अभी वो क्लिप में तुम्हे नही दे सकता…..मुझे अभी मेरे दोस्त का फोन आया था.मुझे वहाँ जाना है…..

में: देखो अभिषेक अब तुम ये ठीक नही कर रहे हो…..मुझे क्लिप दे दो….

अभिषेक: (उठ कर मेरे पास आते हुए) वो अभी मेरे पास नही…वो मेरे रूम में है, ये घर तो किसी दोस्त का है…..अगली बार जब आओगी, तो वो क्लिप्स ला दूँगा…..

ये कहते हुए, उसने मुझे फिर से बाहों में भर लिए, और अपने हाथों को मेरी कमर के पीछे लेजा ते हुए, मेरी नितंब को मसलने लगा…..फिर उसने मेरे होंठो को एक बार चूसा और बोला….”अब चलो, मुझे भी जाना है”

अब में कर भी क्या सकती थी, में रूम से बाहर आई, और उसके साथ घर से निकल गयी……जिस शिकारी के चंगुल से में अपनी बेटी को आजाद कराने आयी थी,में आज खुद उसका शिकार हो गयी थी.मेने अपने घर के लिए ऑटो पकड़ा और घर वापिस आ गयी….जब घर पहुचि तो मानसी घर जाने को तैयार थी……

मानसी: आ गयी दीदी में तो जाने ही वाली थी…..

में: अर्रे कुछ देर बैठ ना…..

मानसी: नही दीदी देर हो जाएगी……अच्छा दीदी क्या मैं प्राजक्ता को कुछ दिनो के लिए साथ ले जाउ….

में: (थोड़ी देर सोचने के बाद) हां हां क्यों नही…..

फिर मानसी प्राजक्ता और अपने बच्चो के साथ घर चली गयी…….उनके जाने के बाद में बाथरूम में गयी, और कपड़े उतार कर नहाने की तैयारी करने लगी…..मेने देखा मेरी जांघे अभी भी उसके वीर्य से चिपचिपा रही थी.. मेरी योनि से अभी भी पानी निकल कर बाहर आ रहा था….मेरी पैंटी पूरी तरह से भीग चुकी थी…..

में अभी नहाने ही वाली थी कि, फोन की रिंग बजी मेने अपनी टाँगों को साफ किया, और बाथरूम में रखी मॅक्सी पहन कर रूम में गयी….और फोन उठाया……

में: हेलो कौन…..

अभिषेक: हाँ रानी में हूँ ! घर ठीक से पहुँच तो गयी ना…..

में: (उसकी आवाज़ सुन कर मुझे फिर से गुस्सा आ गया) अब क्यों फोन किया है. तुम हमारा पीछा छोड़ क्यों नही देते…..

अभिषेक: छोड़ दूँगा साली, अच्छा अभी अभी मेने प्राजक्ता को तेरी जेठानी के साथ जाते देखा है…….

में: तो तुझे मतलब…..

अभिषेक: घर पर अकेली हो..बोलो तो आ जाउ…..

में: नही में तुम्हारी परछाई भी अपने घर पर नही पड़ने देना चाहती..

अभिषेक; ओह्ह इतना गुस्सा….मुझे लगता है कि, तेरे बेटी की क्लिप को बाज़ार में बेचना ही अच्छा रहेगा…..और हां सुन साली आज तो तेरी नंगी मूवी भी बन गयी.उसे भी साथ में बेच दूँगा

में: नही अभिषेक तुम ऐसा नही करोगे….

अभिषेक: क्यों क्यूँ नही कर सकता…..चल अब अपनी योनि की तेल से मालिश करके तैयार हो जा…में आ रहा हूँ….

ये कहते हुए उसने फोन बंद कर दिया……में वही बैठी अपनी किस्मत को रोती रही, और उस मनहूस घड़ी को कोसने लगी. जब मेने उसे रूम रेंट पर दिया था….मुझे अब ऐसा लगने लगा था कि, प्राजक्ता के साथ साथ मेने भी बहुत बड़ी ग़लती कर दी है……में वही

बैठी यही सब सोचती रही….. कि बाहर डोर की बेल की आवाज़ से मेरा ध्यान टूटा….मुझे पता था कि बाहर अभिषेक ही होगा….

मैं अपने आप को संभालते हुए, बाहर गयी और गेट खोला……सामने अभिषेक खड़ा था….वो बिना कुछ बोले अंदर आ गया…..में उसके इरादों को अच्छे से जानती थी…..अब मुझे ही कुछ करना था….में सोच रही थी कि में उसे बातों से मना लूँगी…..मेने गेट बंद किया और, उसके पीछे अपने रूम में आ गयी. वो बिफिकर होकर मेरे बेड पर बैठ गया…..

अभिषेक: तो बता कैसा लगा मेरा लिंग अपनी योनि में लेकर ?

में: मुझे तुम्हारी ये फालतू बकवास नही सुननी……

अभिषेक: ठीक है में भी ज़्यादा बोलने के मूड में नही हूँ…..

ये कहते हुए उसने अपनी पेंट खोल कर नीचे सरका दी, उसका लिंग एक दम तना हुआ था, और झटके खा रहा था…उसने मुझे इशारे से पास आने को कहा.जैसे ही में उसके पास गयी, उसने मेरे हाथ पकड़ कर अपने सामने नीचे ज़मीन पर बैठा दिया, और फिर मेरे खुले हुए बालों को पकड़ कर बोला….''ले चूस इसे''

मेने इससे पहले कभी लिंग को मूह में नही लिया था.इसके बारे में सिर्फ़ सुना था..और मुझे ये सब करना अच्छा भी नही लगता था…''नही अभिषेक में नही ले सकती'' अभिषेक ने मुझे गुस्से से देखा और घुरते हुए बोला….''साली जब अपनी योनि चुस्वा सकती है, तो मेरा लिंग नही चूस सकती चल चूस इसे'' ये कहते हुए उसने एक हाथ से अपने लिंग को पकड़ा , और दूसरे हाथ से मेरे बालों को खेंचते हुए, अपने लिंग के सुपाडे को मेरे होंठो पर रगड़ने लगा…..

में उसके सामने दर्द से छटपटा रही थी…पर उसके ऊपर तो जैसे कोई असर नही हो रहा था…..आख़िर कार मुझे अपना मूह खोल कर उसके लिंग के सुपाडे को मूह में लेना पड़ा….''अह्ह्ह्ह हां चूस इसे आह'' अभिषेक ने अपनी आँखें बंद करते हुए कहा…..मुझे जितना आता था में उसी तरहा से उसके लिंग को चूसने लगी….वो पैर नीचे लटका कर बैठा हुआ था…और फिर वो पीठ के बल बेड पर लेट गया…..

फिर उसने मेरे बालों को पकड़ कर खेंचा, तो उसका लिंग मेरे मूह से बाहर आ गया….दूसरे हाथ से उसने अपने बॉल्स को पकड़ कर बोला" चल इसे भी चाट" में किसी वेश्या के तरह उसकी हर बात मानने को मजबूर थी….मेने अपनी जीभ निकाल कर उसके टट्टो को चाटना शुरू कर दिया…..मुझे ये सब करने में बहुत घिन आ रही थी…..पर मजबूरी ही ऐसी थी….फिर उसने मुझे और ऊपर उठा कर अपने ऊपर चढ़ा लिया….में उसकी कमर के दोनो तरफ घुटनो के बल बैठ गयी…..मुझे समझ में नही आ रहा था कि, अब वो क्या करने वाला है….उसने मेरी नाइटी को दोनो तरफ से पकड़ कर मेरी कमर तक ऊपर उठा दिया. मेने नाइटी के नीचे कुछ नही पहना हुआ था

उसने मेरी योनि की क्लिट को अपनी उंगलियों में लेकर मसलते हुए कहा….."वाह तेरी योनि तो अभी तक पनियाई हुई है" फिर उसने मेरी नितंब को दोनो तरफ से पकड़ कर मुझे थोड़ा ऊपर उठाया, और अपने लिंग के सुपाडे को योनि के छेद पर टिकाते हुए, मुझे नीचे की और दबाने लगा…..

उसका लिंग मेरी योनि के छेद को फेलाता हुआ अंदर घुसने लगा…..जैसे ही उसके लिंग का गरम सुपाडा मेरी योनि के अंदर घुसा मेरे मूह से मस्ती भरी आह निकल गयी….और में अपने आप ही उसके ऊपर झुकती चली गयी….भले ही में सब मजबूरी में कर रही थी….पर कई सालो के बाद ठुकने से मेरे अंदर की आग और भड़क चुकी थी…..

उसने मेरे गले के पीछे हाथ डाल कर अपने ऊपर झुकाते हुए मेरे होंठो को अपने होंठो में भर लिया…..और नीचे से अपनी कमर को पूरी ताक़त के साथ ऊपर की तरफ उछाला…..जिसके कारण अभिषेक के लिंग का सुपाडा मेरी योनि की दीवारों से रगड़ ख़ाता हुआ अंदर घुस गया……मेरे बदन में करेंट सा दौड़ गया…..और मेने उसके बाजुओं को कस के पकड़ लिया….

उसका पूरा लिंग मेरी योनि में समाया हुआ था……और वो बेदर्दी से मेरे होंठो को चूस रहा था….उसका एक हाथ मेरे नितंबो पर था, और दूसरे हाथ से मेरे स्तनों को दबा दबा कर खेंच रहा था….वो मेरे नितंबो को मसलते हुए कभी, अपनी एक उंगली नितंब की दरार में फेर देता, तो मेरा पूरा बदन मस्ती में काँप जाता….और मेरी कमर झटके खाने लगती……
जिससे लगता कि, में खुद ही उसके लिंग पर बैठी हुई अपनी नितंब आगे पीछे कर रही हूँ. वो बार बार मेरी नितंब की दरार में उंगली फेर देता….और मेरे कमर आगे की तरफ झटका खाती, और उसके लिंग का सुपाडा मेरी बच्चेदानी से रगड़ खा जाता…

वो करीब ५ मिनिट से मेरे होंठो को चूस रहा था…..और मेरी योनि उसके लिंग को कभी अपने अंदर कस्ति और कभी ढीला छोड़ देती…..अभिषेक को भी इस बात का अंदाज़ा हो गया था कि, जब वो मेरी नितंब की दरार में उंगली फेरता है, तो में आगे की तरफ अपनी कमर को धक्का देती हूँ….मेरी इस बात का उसने फ़ायदा उठाते हुए मेरी नितंब के छेद पर अपनी उंगली लगा कर दबाने लगा…..मुझे इतना मज़ा आ रहा था कि में बयान नही कर सकती…..कहाँ तो कुछ देर पहले में अपनी मजबूरी पर रो रही थी…..और कहाँ अब योनि की आग के कारण में मदहोश हो गयी थी….

मेरी कमर अपने आप ही आगे की तरफ झटके खाने लगी…..जिससे मेरी योनि के अंदर अभिषेक का लिंग अंदर बाहर होकर रगड़ खाने लगा…..वो अभी भी मेरे होंठो को बुरी तरहा से चूस रहा था…बीच बीच में वो मेरे होंठो पर अपने दाँत भी गढ़ा देता….मुझे पता नही कब मेरे हाथ उसकी बाजुओं से हट कर उसके सर पर चले गये….और में भी उसके सर को पकड़ कर अपने होंठो को चुसवाने लगी….अभिषेक भी धीरे धीरे अपनी कमर को हिला रहा था…..

थोड़ी देर बाद उसने मेरे होंठो को छोड़ा, और मुझे अपने ऊपर सीधा बैठा दिया……मुझे उसका लिंग अपनी नाभि तक अंदर घुसा हुआ महसूस हो रहा था…. उसने मुस्कुराते हुए कहा……..”देख तेरी योनि कैसे पानी की नदी बहा रही है… साली मेरे टटटे भी गीले कर दिए…..” मेने अपना चेहरा घुमा कर पीछे की ओर देखा, पर में ठीक से नही देख पे…..फिर अभिषेक ने मेरा एक हाथ पकड़ कर कमर के पीछे लेजाते हुए अपने टट्टो पर लगा दिया……

जैसे ही मेने उसके बॉल्स को छुआ में एक दम हैरान रह गयी…..उसके बॉल्स एक दम गीले हो चुके थे….जैसे किसी ने पेशाब कर दिया हो…..मेने अपना हाथ आगे करके अपने सर को झुका लिया…..अभिषेक थोड़ा एडजेस्ट होते हुए बैठ गया…..हम दोनो बेड के बिलकुल किनारे पर थे….उसके पैर बेड के नीचे लटक रहे थे, और में उसके लिंग को अपनी योनि में लिए हुए उसकी गोद में बैठी थी….

अभिषेक: क्यों सही कह रहा हूँ ना…

में उससे नज़रे नही मिला पा रही थी….उसने मेरी नाइटी को दोनो तरफ से पकड़ कर ऊपर उठाना चालू कर दिया……वो मेरे नाइटी को उतारना चाहता था. पर में फिर से उसके सामने नंगी होने से शरमा रही थी……इसीलिए मेने हाथ ऊपर नही किए….पर उसने ज़बरदस्ती करते हुए मेरी नाइटी को मेरे गले से निकाल कर नीचे फेंक दिया….अब में एक बार फिर से उसके सामने नंगी थी…. उसने मेरे नितंबो को दोनो तरफ से पकड़ कर ऊपर नीचे करना शुरू कर दिया…….”उच्छल ना साली अब ऐसे लिंग योनि में लिए बैठी रहे गी क्या”

मेने उसकी बात कोई जवाब नही दिया….वो भी अपनी कमर को नीचे से ऊपर नीचे कर रहा था……..उसके लिंग के घर्षण को अपनी योनि की दीवारों पर महसूस करके में एक दम गरम हो गयी….में भी उसके साथ ऊपर नीचे होने लगी…….धीरे धीरे हम दोनो की रफ़्तार बढ़ती जा रही थी……और जब मेरी नितंब उसकी जाँघो से टकराती तो, ठप ठप की आवाज़ होने लगती…….

में काफ़ी देर से अपनी सिसकारियों को दबाए हुए थी……..पर अब में अपने आप पर काबू नही रख पा रही थी…..”अहह अभिषेक ओह्ह्ह मुझी माफ़ कर दूओ..ह ह धेरीई अभिषेक्त मेरी यो..नि अह्ह्ह्ह ओह ओह”

पूरा रूम ठप ठप और मेरी सिसकारियों की आवाज़ से गूँज रहा था…..अभिषेक का लिंग अब पूरी रफ़्तार से मेरी योनि के अंदर बाहर हो रहा था, और में भी उसके लय में लय मिलाती हुई, अपनी नितंब को उछाल उछाल कर उसके लिंग पर अपनी योनि को पटक रही थी……

मेरा बदन एक दम से अकड़ने लगा…..और मेरी योनि फिर से पानी छोड़ने लगी…. में हाए ओह्ह करती हुई झड गयी….अभिषेक भी तेज़ी से शॉट लगाते हुए झड़ने लगा..ठुकाई का ये दौर करीब ३० मिनट तक चला……में बुरी तरह से उसकी गोद में हाँफ रही थी…… मुझे कुछ होश ना था….थोड़ी देर बाद में जब मुझे होश आया तो देखा, कि में अभिषेक के ऊपर लेटी हुई थी…उसका आधा खड़ा लिंग मेरी नितंब की दरार पर रगड़ खा रहा था…..उसकी आँखें भी बंद थी. में उसके ऊपर से उठ कर बेड से नीचे उतर गयी…..और झुक कर अपनी नाइटी उठाने लगी…तो मुझे अपनी नितंब पर अभिषेक के हाथ महसूस हुए, जब मेने पलट कर देखा, तो अभिषेक बेड के किनारे पर बैठा हुआ, मेरी नितंब को सहला रहा था..उसकी आँखों में अजीब सी चमक थी….

मेने अपनी नाइटी उठाई, और पहन ली, अभिषेक खड़ा हुआ, और मेरी नाइटी को पकड़ कर कमर तक ऊपर उठा दिया…..''अभिषेक छोड़ो मुझे अब बहुत हो गया'' अभिषेक ने मेरी और मुस्कुराते हुए देखा, और अपने लिंग को मेरी नाइटी से साफ करने लगा. उसके बाद उसने अपनी पेंट पहन ली, और बाथरूम के तरफ जाते हुए बोला….

अभिषेक: जान मेरा भी खाना बना लेना…….आज रात यही रुकुंगा और तेरी योनि का भरता बना कर सुबह जाऊंगा…..

में अभिषेक से कुछ ना कह पाई…..बाथरूम से वापिस आकर अभिषेक बेड पर लेट गया….उसके बाद में बाथरूम में गयी….और नहा कर बाहर आई….मेने कभी ज़िंदगी में नही सोचा था कि, मुझे ऐसे दिन देखने पड़ेंगे…..

नहाने के बाद जब में अपने रूम में आई, तो देखा अभिषेक सो रहा था… एक बार तो सोचा कि अभी इसको जान से मार दूं तो सारा खेल यही ख़तम हो जाएगा. फिर मन में डर था कि एक चीज़ से बचाने के लिए दूसरी ग़लती नही कर सकती में मन मार कर किचन में आ गयी….

रात के ८ बज चुके थे……मेने खाना तैयार किया….और बाहर आकर बरामदे में बैठ गयी…थोड़ी देर बाद अभिषेक उठ कर बाहर आ गया….

अभिषेक: खाना बना लिया……

में: हां. बन गया है, अभिषेक अब तक तुमने जैसे कहा. मेने वैसे किया अब में तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूँ……वो क्लिप मुझे दे दो….

अभिषेक: ठीक है दे देता हूँ……पर एक शर्त है.

में: क्या शर्त है, में तुम्हारी हर बात मानने को तैयार हूँ….

अभिषेक: (मुझे क्लिप की डीवीडी देते हुए) ये लो, पर हां आज रात भर मुझे खुश रखना होगा…

मेने उसकी बात का कोई जवाब नही दिया, और अपने रूम में जाकर वो डीवीडी छुपा दी, अब मेरे पास वो डीवीडी आ चुकी थी…..एक बार तो सोचा अब इसको धक्के दे कर घर से निकाल दूं.…पर फिर भी मन में डर था, कि कही ये इसकी कोई और चाल तो नही…..मेने बाहर आकर खाना लगाया, और हम दोनो ने खाना खाया. अब रात बहुत हो चुकी थी…..बाहर सर्दी अब पूरे जोरों पर थी…..जब में काम निपटा कर अपने रूम में दाखिल हुई, तो मेरे कदम वही जम गये…

अभिषेक मेरे बेड पर नंगा लेटा हुआ था. उसने कमर से निचले हिस्से पर रज़ाई ओढ़ रखी थी….और अपने हाथ से अपने लंबे लिंग को हिला रहा था….मेने डोर बंद किया, और बेड के किनारे पर आकर बैठ गयी…..अभिषेक ने एक हाथ बढ़ा कर मेरी शॉल को पकड़ कर अपनी तरफ खेंचा…..में बिना कुछ बोले बेड पर चढ़ गयी……अभिषेक ने रज़ाई उठा दी, ताकि में रज़ाई के अंदर आ सकूँ….जैसे ही में रज़ाई के अंदर लेटी, वो मेरे ऊपर आ गया….और मेरी शाल को मेरे बदन से अलग करके नीचे फेंक दिया…..अब में सिर्फ़ नाइटी में थी….

उसने मेरे ऊपर लेटते हुए मेरे होंठ अपने होंठो में भर लिया….और मेरे होंठो को चूस्ते हुए नाइटी के आगे के हुक्स को खोलने लगा…..इस बार वो पहले की तरह बेदर्दी नही दिखा रहा था……उसने एक एक करके मेरी नाइटी के सारे हुक्स खोल दिए….मेने नीचे कुछ नही पहना था….उसने मेरे स्तनों को पकड़ कर नाइटी से बाहर निकाल लाया……और मेरे होंठो से अपने होंठ हटा कर मेरे लेफ्ट स्तनाग्र को मूह में भर चूसना शुरू कर दिया…..

अपने स्तनाग्र पर उसकी गरम गरम जीभ महसूस करते ही, में सिसक उठी……इस बार वो बड़े ही प्यार से मेरे स्तनाग्र को चूस रहा था…..और दूसरे हाथ से मेरी नाइटी को नीचे से ऊपर कर रहा था…..थोड़ी देर में ही नाइटी मेरी कमर तक चढ़ चुकी थी…..हम दोनो रज़ाई के अंदर थे.इसीलिए नीचे का कुछ दिखाई नही दे रहा था……मुझे इसका अहसास तब हुआ जब उसके लिंग का दहाकता सुपाडा मेरी योनि के छेद पर आ लगा…….मेरा जिस्म बुरी तरह से कांप गया.

मुझे पता नही में क्यों इतनी मदहोश हो गयी कि, मेने गले में बाहें डाल कर अपने से चिपका लिया”ओह्ह्ह अभिषेक” मेने मस्ती भरी आवाज़ में कहा…..अभिषेक ने मेरी स्तनों को मूह से निकाला और फिर मेरी तरफ देखते हुए, अपने होंठो को मेरे होंठो के तरफ बढ़ाना शुरू कर दिया…..

उसका लिंग मेरी योनि के छेद पर लगा हुआ झटके खा रहा था….में इस कदर मदहोश गयी थी, कि मेने भी अपने होंठो को खोल कर उसके होंठो की तरफ बढ़ा दिया…… अभिषेक फिर से मेरे होंठो को चूसने लगा…..इस बार नज़ाने क्यों में उसका साथ देने लगी थी……वो मेरे होंठो को चूस्ते हुए, मेरे स्तनाग्र को अपने हाथों की उंगलियों में लेकर मसल रहा था, और मरोड़ रहा था….

मेरी योनि फिर पनिया गयी…..और उसने कुछ देर मेरे होंठो को चूसा, फिर मेरे गालों और गर्दन को जीभ चाटने लगा……में उसकी इन हरकतों से मदहोश होती जा रही थी…..मेरे हाथ उसके कंधो और पीठ को सहला रहे थे….वो मेरे बदन के हर हिस्से को चूम रहा था चाट रहा था….फिर वो धीरे धीरे नीचे की और बढ़ने लगा……मेरे पेट को चूमते हुए, मेरी नाभि के अंदर जीभ डाल कर चाटने लगा…..

उसकी इस हरकत से में एक दम से सिसक उठी…..मेने उसके बालो को पकड़ लिया… और उसके बालों में अपनी उंगलियाँ चलाने लगी……जब मेरे पति जिंदा थे, तब उन्होने कभी मेरे साथ ऐसा फोरप्ले नही किया था…हम तो सीधा साधा सा सहवास करना जानते थे……इन सब चीज़ों में कितना मज़ा आता है.ये मुझे आज महसूस हो रहा था…….

मेरी सिसकारियाँ पूरे रूम में गूँज रही थी…..शुकर था कि, घर पर हम दोनो के सिवा कोई नही था…..फिर वो और नीचे की ओर बढ़ने लगा….मेरी जाँघो की जडो को जीभ से चाटने लगा…..में एक दम से तिलमिला उठी….”आह अभिषेक्त सीईइ वाहाा नही मुझसे सहा नही जाता अह्ह्ह्ह अभिषेक्त्तत्त ओह्ह्ह्ह.” पर अभिषेक तो मेरी कोई बात नही सुन रहा था…आख़िर कार मेरे सामने वो मंज़र घूम गया, जब उसने सुबह मेरी योनि को चाटा था…..

फिर वो मेरी योनि पर आ गया…..और किसी भूखे जानवर की तरह मेरी योनि को फांकों के साथ मूह में भर कर चूसने लगा…..

में: (एक दम मस्त होकर गरम होने लगी) आहह ओह्ह्ह नही अभिषेक्त ओह अह्ह्ह्ह अहह सीईईईई नही आईई माआ ओह क्या कर्र रहा है ओह्ह्ह मुंडिया मान जा अहह मेरीए जान काढ़ के रहेँगाआ आह खा गया आह तू मुझीई आ पूराअ काा पूराअ आह ख़ाा जाअ पूराअ अहह उफफफ़ मेरीए जानंनणणन् फंससस्स गाईए……..हाई मेरीए योनीईईइ खा गायाअ..

में पता नही क्या अनाप सनाप बके जा रही थी..मुझे खुद इस बात का होश नही था…..मेरी नितंब बेड से २ फुट ऊपर उठ चुकी थी….और मेरी कमर बुरी तरह झटके खा रही थी…..फिर उसने मेरी योनि से मूह हटा लिया…..मेने तेज़ी से साँसे लेते हुए उसकी तरफ देखा…फिर वो नीचे झुक कर मेरे टाँगों को घुटनो से मोड़ कर ऊपर उठाने लगा…..

में मदमस्त और बदहवास सी उसके इशारो पर काम करने लगी थी…..जैसे ही उसने मेरी टाँगों को ऊपर उठा कर फेलाया……उसने मेरे दोनो हाथों को पकड़ कर मेरी योनि पर रखते हुए मेरी फांकों को फेलाना शुरू कर दिया….में समझ गयी कि, वो क्या चाहता है….मेने अपनी योनि की फांकों को फेला दिया. फिर उसने मेरी उंगलियों को पकड़ कर योनि की फांकों पर क्लिट के बिलकुल पास दोनो तरफ सेट किया, और फेलाने के लिए हाथों को खेंचा….जैसे ही मेने फिर से क्लिट के पास के मास को खेंचा….मेरा क्लिट किसी फूले हुए दाने की तरफ बाहर आ गया.

जिसे देख कर उसकी आँखें चमक उठी……मेने अपनी आँखें बंद कर ली, मुझे पता था कि, अभिषेक का अगला स्टेप क्या होने वाला है, पता नही कि में बरदाश्त कर पाउंगी या नही….में अभी यही सोच रही थी कि, उसने अपनी जीभ निकाल कर मेरी क्लिट पर रगड़ना शुरू कर दिया…में बुरी तरह से हिल गयी…..मेरे हाथ वहाँ से निकल गये…”अहह अभिषेक्क”

अभिषेक: क्या साली क्या कर रही है…..चल फिर से निकाल अपना दाना बाहर…

उसने फिर से मेरी टाँगों को फेला दिया…..और मेरे हाथों को पकड़ कर वही पर रखते हुए बोला”चल अब निकाल बाहर” मेने फिर से क्लिट वाले पास के मास को खेंचा,और योनि का क्लिट फिर से बाहर आ गया….इस बार उसने अपने हाथों से और मास को खेंचा, तो क्लिट पूरी तरह से बाहर आ गया……इस बार उसने बिना किसी देर किए, पूरा का पूरा क्लिट मूह में भर लिया…..और साथ में मेरी टाँगों को ऊपर की तरफ उठा कर दबोच लिया….ताकि में हिल ना सकूँ…..

कुछ पलों के लिए तो मेरी साँस ही रुक गयी…..मूह खुला का खुला रह गया……मुझे ऐसा लग रहा था कि , जैसे अभी मेरे जिस्म से जान निकल जाएगी…फिर थोड़ी देर बाद मुझे ऐसा लगा जैसे आसमान में उड़ रही हूँ….मेरे मूह से सिसकारियाँ निकल कर पूरे घर में गूंजने लगी…..

में: अह्ह्ह्ह अभिषेक ओह खा जा मुझे पूरा खा जाआअ मेरी योनि को आह तू मुझीए अह्ह्ह्ह उहह वेश्या कहता है ना अह्ह्ह्ह हां तूने मुझे वेश्या बनाअ दिया है अहह ओह माआ. हाईए ओईई एह मुंडा पागल हो गयाआ हाईईइ….अहह अहह अहह अभिषेक्त मेरीए योनिईईइ जल गयी ओह्ह मेरा काम होने वाला हाई आह आह अभिषेक्त…….

में उसके सर को पकड़े हुए अपनी नितंब को उछाल रही थी…वो किसी तरह मेरे ऊपर काबू पाए हुए था………फिर कुछ देर बाद मुझे ऐसा लगा जैसे सच में मेरे जान मेरी योनि से ही निकल जाएगी…….''अहह अभिषेक्त ले गाईए मेन्णन्न् कंजरी बना देताअ मेनू…..आहह मेरीए इज़्ज़त लूट लेती तू कंज़ारा ह ओह मेरीए योनीई…..

में बुरी तरह काँपते हुए, झड़ने लगी….मेरा बदन थरथरा रहा था….योनि से पानी निकल कर मेरी नितंब की दरार और छेद पर चला गया था. इस बार में बहुत बुरी तरह से झड़ी थी…..

में: अभिषेक्त छड दे मेनू……मेरीए योनीई वाज गईईई. हाए ओईए…

पर अभिषेक तो जैसे बहरा ही हो गया था…..वो अपना मूह मेरी योनि से हटा नही रहा था……

में एक बार बुरी तरह से झाड़ चुकी थी, थोड़ी देर बाद उसने अपना मूह मेरी योनि से हटाया, और बेड पर मेरे बगल में लेट गया….''चल उठ जल्दी कर अभी तू तूने कुछ देखा ही नही है….'' ये कहते हुए, उसने मेरे हाथ पकड़ कर अपने ऊपर खेंच लिया….में उसके ऊपर आ चुकी थी, मेरे दोनो घुटने उसकी कमर के दोनो तरफ थे……उसने मेरी जाँघो के नीचे हाथ डालते हुए, मेरी नितंब को पकड़ कर ऊपर उठाया, तो में पैरों के बल बैठ गयी…..

फिर वो मेरे नीचे से खिसकता हुआ इतना नीचे हो गया कि, मेरी योनि ठीक उसके मूह के ऊपर आ गयी….मेरा बदन ये देख कर फिर से कांप गया. अब और कितना तड़पाएगा मुझे…..जैसे ही मेरी योनि उसके मूह के ऊपर आई तो वो बोला'' चल अब खोल अपनी योनी….चल खोल ना ड्रामा क्या कर रही है'' मेने काँपते हुए हाथों से अपनी योनि की फांकों को फेला दिया….

में उसके सर के दोनो तरफ पैर करके पंजो के बल बैठी थी…..ऊपर से मेरा पूरा बदन अभी भी झड़ने के कारण कांप रहा था.इसलिए मुझे बॅलेन्स बनाने में दिक्कत होने लगी….और में आगे की तरफ गिरने वली थी कि, मेने अपने हाथों से अभिषेक के सर को पकड़ लिया…..इससे पहले कि में कुछ बोल पाती, उसने मेरी योनि को फेलाते हुए, योनि पर मूह लगा दिया….मेरे बदन में मानो ४२० वॉट का करंट दौड़ गया हो…..

उसने मेरी योनि को चाट्ना शुरू कर दिया….और अपनी ज़ुबान को मेरी योनि के छेद पर रगड़ने लगा….”अहह मुंडिया क्या कर रहा है,,,,हाईए आज मेरी योनि दी खैर नही…..ओह मर गईई….क्यों मेरी योनि नू ख़ान ळगया है…..हाए ओईई एहह मुंडा किथे मूह मार रहााअ है..हाई हट जा… बस वी कर हुन्नं् अह्ह्ह्ह मेरीए गईई.,……लिंग पा दे मेरी योनि विच……आह अभिषेक अपना लिंग मेरी योनि च पा दे……..”

अभिषेक एक दम से रुक गया….और मुझे अपने ऊपर से हटाते हुए नीचे लेटा दिया. फिर मेरी टाँगों को खोल कर बीच में आकर बैठ गया……”हां बोल क्या कह रही थी तू मेरा लिंग चाहिए तुझे तेरी योनि में….बोल” जो कुछ पल पहले में अनाप सनाप बक रही थी…….अब में उसके मूह से सुन कर शर्मिंदा हो रही थी…में उसकी तरफ देख भी नही पा रही थी……

उसने मेरी योनि के फांकों पर अपने लिंग को रगड़ते हुए फिर पूछा “बोल अब क्या कह रही थी….नही तो तब तक ऐसे ही करता रहूँगा…..” में सच में इस क़दर मस्त हो चुकी थी, कि दिल कर रहा था कि उसका लिंग अपनी योनि में लेकर ज़ोर ज़ोर से ठुकवाऊ……”कुतिया हूँ की सुनना चहन्दा है……मार मेरी योनि….पा दे अपना लिंग मेरी योनि विच…..मेरे घरवाले ने मेरी आज तक इक दिन विच इनवारी नही लयी……..तू ता मेनू गस्ति ही बना दित्ता है”

मेरी ये बातें सुनकर वो हँसने लगा…और मेरी योनि पर अपने लिंग के सुपाडे को दबाने लगा….उसका लिंग फिसलता हुआ मेरी योनि के अंदर जाने लगा….जैसे ही उसका आधा लिंग मेरी योनि में गया….उसने मेरी कमर को पकड़ कर एक ज़ोर दार धक्का मारा…फॅच की आवाज़ से पूरा लिंग मेरी योनि में समा गया…..मेने तड़प्ते हुए, उससे अपने ऊपर खेंच लाया, और उसके होंठो को खुद ही होंठो में भर भर कर चूसने लगी…..वो मेरी इस हरक़त से जोश में आ गया…और अपने लिंग को पूरा निकाल निकाल कर अंदर डालने लगा….उसके हर धक्के से मेरा पूरा बदन हिल जाता……

में भी पागलों के तरफ उसके होंठो को चूस्ते हुए, अपनी नितंब को ऊपर की ओर उछाल उछाल कर उसका लिंग अपनी योनि में लेने लगी…..उसने मेरे होंठो से अपने होंठो को अलग किया, और मुझे बाहों में भरते हुए, ऊपर उठाने लगा…..अब में उसकी गोद में आ चुकी थी…मेरी टाँगें उसके कमर के इर्द गिर्द घेरे की शकल में आ चुकी थी……वो अपनी कमर को लगतार हिलाते हुए मुझे ठोक रहा था. और साथ में वो मेरी नाइटी को ऊपर उठाने लगा…. में वासना की आग में इस कदर झुलस रही थी, कि मेने अपनी नाइटी को खुद ही उतार कर नीचे फेंक दिया….

में: आहह अभिषेक लेले जी भर कर मेरी ले आज अह्ह्ह्ह मेरे स्तन चुस्स नाअ…

मेरी बात मानते हुए, उसने मेरा एक स्तनाग्र मूह में भर कर चूसना शुरू कर दिया…अब उसकी कमर हिलनी बंद हो चुकी थी…..पर मेरी नितंब तो मानो मेरे काबू में नही थी…..में लगतार अपनी नितंब को आगे पीछे करते हुए, उसके लिंग से ठुक रही थी…..उसका लिंग बुरी तरह से मेरी योनि की दीवारों से रगड़ खा रहा था…..मेरे इस तरह करने पर वो और जोश में आ गया…….और फिर मुझे अपने बाहों में उठाते हुए वैसे ही खड़ा होने लगा……उसका लिंग अभी भी मेरी योनि में था…..

मुझे यकीन नही हो रहा था कि, मेरे बेटे के उम्र का लड़का मुझे अपनी बाहों में उठाए हुए ठोक रहा था….”हाईए फाड़ दित्ति मेरी योनी…..गश्ती बना दित्ता तू मेनू फाड़ दे अपनी गस्ति की योनि….अहह एह बेहन दे लौडी नू वी आग लगी हुई है” आज मेरी योनि विच ठंड पा दे…….”

वो कुछ मिनिट मुझे ऐसे ही उठा कर ठोकता रहा…फिर उसने मुझे नीचे उतार दिया…..और दीवार की तरफ मुझे घूमाते हुए बोला “चल कोड़ी हो जा” में दीवार से हाथ लगा कर झुक गयी..”उसने पीछे से मेरी नितंब को पकड़ कर फेलाया, और अपना लिंग एक ही धक्के में अंदर पेल दिया….

में: आह आह एह किथो सीख के आया है सब कुछ किद किद मेरी ले रहा है… हाए ओई मार सुटिया मेनू…..ज़िदा मर्ज़ी ले मेरी योनि….बस इन्हो ठंडी कर दे….नये नये तरीके कितो सीख की आया हाई हाई मररर देता….वज गयी आज मेरी योनि…….ओह्ह्ह्ह मार होर ज़ोर दे अपना लिंग मेरी योनी च मार….”

आज भी जब में उन पलों के बारे में सोचती हूँ, तो अपने आप से शरमा जाती हूँ….मेने अपने पति के सामने भी कभी ऐसे वर्ड यूज़ नही किए थी..पता नही मुझ बावली को क्या हो गया था…..जो मूह में आ रहा था बके जा रही थी..”हाई अभिषेक मेरे स्तन दा कसूर तां दस्स…….पात हुन इन्हा नू. मसल दे इनको…..अह्ह्ह्ह”

अभिषेक कभी मेरी नितंब को दबाने लग जाता तो, कभी मेरे स्तनों को खेंच खेंच कर दबाता….में दूसरी बार झड़ने के बहुत करीब थी…..अब खड़े खड़े थक भी गयी थी….अभिषेक ने मेरी योनि से अपना लिंग निकाला, और बेड पर लेट गया….मुझे इशारे से ऊपर आने को कहा…….मेरी योनि में पहले ही आग लगी हुई थी. मेने भी बिना किसी शरम के उसके ऊपर आते ही, उसके लिंग को पकड़ कर अपनी योनि के छेद पर लगा कर अपनी कमर को पूरी ताक़त से झटका दिया….

लिंग फॅच की आवाज़ से अंदर जा घुसा….और फिर मेने आव देखा ना ताव अपनी नितंब को उछल उछल कर उसके लिंग पर पटकने लगी…”अहह ले मेरी योनि आज सारी रात लेना…..सारी रात मेरी योनी च लिंग पा के रखी……तेरी गश्ती तेनू मना नही करेगी…..आहह ले, मेरी योनि वजन वाली है…आह ले गाईए तेरी गस्ति दी योनि, हाए आहह निकल गयी सारी मलाई….ओह्ह्ह वज गयीए..”

में अभिषेक के ऊपर निढाल होकर गिर पड़ी…..मेरी योनि से इतना पानी निकला कि, बेडशीट भी गीली हो गयी…….अभिषेक के लिंग से भी वीर्य की बोछार होने लगी….उसने मेरे होंठो को अपने होंठो में भरते हुए, मेरे निचले होंठ पर अपने दाँत गढ़ा दिए…..मुझे हल्का सा दर्द हुआ, पर वो दर्द उस समय मुझे कुछ भी नही लग रहा था….

थोड़ी देर बाद में अभिषेक की बगल में लेट गये…..हम दोनो ने अपने ऊपर रज़ाई ओढ़ ली……..”एक बात बोलू वंदना” अभिषेक के मूह से अपना नाम सुन कर मुझे थोड़ा अजीब सा लगा” ह्म्म बोलो”

अभिषेक: वंदना तेरी योनि सच में जलती हुई भट्टी है….मुझे लग रहा था कि, मेरा लिंग अंदर ही पिघल जाएगा…..प्राजक्ता की योनि भी तेरी योनि के आगे कुछ नही है….सच में मज़ा आ गया तेरी लेकर…

में: अभिषेक तुम अब प्राजक्ता के साथ कुछ नही करोगे……तुमने जैसा कहा मेने वैसे कर दिया…..

अभिषेक: चल ठीक है, वैसे तेरी योनि है कमाल की, साली जैसे आग हो…

अभिषेक की ये बात सुन कर मुझे हँसी आ गयी….और में दूसरी तरफ फेस घुमा कर मुस्कुराने लगी…….”क्या हुआ”

में: कुछ नही….

अभिषेक: तो फिर हंस क्यों रही हो ?

में: तुम्हें तो औरतों की तारीफ भी नही करनी आती…..

अभिषेक: तो फिर तुम सिखा दो ना…….

में उसकी बात का कोई जवाब नही दे पाई……दोस्तो उस रात अभिषेक ने मुझे कई बार ठोका….हर तरीके से हर नये पोज़ में जिसके बारे में मेने कभी सुना भी नही था…….मुझे तो याद नही, कि रात को कितनी देर के लिए उसका लिंग मेरी योनि से बाहर रहा होगा…..सुबह मेरी हालत ये थी कि, मेरी योनि पाव रोटी की तरह सूज कर फूल गयी थी……

१०

सुबह होते ही अभिषेक चला गया…उसके जाने के बाद में नहा कर नाश्ता बनाने लगी… तभी मेरे जेठ जी, प्राजक्ता को लेकर वापिस आ गये….और प्राजक्ता को छोड़ कर वापिस चले गये…..में अब नये सिरे से जिंदगी शुरू करना चाहती थी…..और सब कुछ भुला कर आगे बढ़ना चाहती थी……

किस्मत भी अब हमारा साथ देने लगी थी……..हमारे चारो रूम रेंट पर चढ़ गये थे….सिलाई के काम की आमदनी मिला कर अच्छी इनकम होने लगी थी…..धीरे धीरे कुछ दिन गुजर गये…..मेने वो डीवीडी भी तोड़ कर फेंक दी थी. मुझे लग रहा था कि, अब सब कुछ ठीक हो गया है……

एक दिन में कुछ खरीद दारी करने मार्केट गयी हुई थी, खीरदारी करते हुए मुझे किसी ने मेरा नाम लेकर पुकारा, जब मेने पीछे देखा, तो पीछे अभिषेक मेरी तरफ हाथ हिलाते हुए, मुझे बुला रहा था…..में उसके पास गयी और कहा.

में: ये क्या बदतमीजी है…..तुम यहाँ मुझे ऐसे क्यों बुला रहे हो…..

अभिषेक: ओह्ह इतना गुस्सा वंदना जी………इतना गुस्सा सेहत के लिए ठीक नही होता.

में: हां बोलो क्या कहना है….

अभिषेक: यार तुम तो मुझे भूल ही गयी. कहो तो कल तुम्हारे घर आ जाऊ.

में: नही ऐसा मत करना…..घर पर बहुत से किरायेदार रहते है….

अभिषेक: फिर तुम वही आ जाओ…..जहा मेने पहली बार तुम्हें ठोका था…..

में: में नही आउंगी. अब मुझे तुम से कुछ लेना देना नही…..

अभिषेक: चलो जैसी तुम्हारी मर्ज़ी…..बस एक बार मेरे लिंग के बारे में सोच लेना…क्यों कहर ढा रही हो मेरे लिंग पर……कल आ जाओ ना……तुम्हारी योनि की बहुत याद आती है…..तुम्हें कभी वो पल याद नही आते…जब तुम मेरे लिंग पर उछल उछल कर ठुक रही थी……याद नही आता वो सब…..कल आ जाना…देखो इतनी सर्दी में अगर ठुकाई का मज़ा नही लिया तो फिर कब लोगी….में तुम्हारा कल इंतजार करूँगा……

अभिषेक बिना कुछ बोले वहाँ से चला गया……में घर वापिस आ गयी…..मेरे जहन में रह रह कर उसकी बातें घूम रही थी….और उसकी बातें सच भी थी. में उस रात की ठुकाई को याद करके रात को तड़पती थी…पर अपने मन को ये समझा कर शांत कर लेती थी…कि अब मुझे इन सब बातों को भूल कर आगे बढ़ना चाहिए…….

उस रात में सो नही पे…..वासना के कारण मेरी बुरी हालत हो चुकी थी….मेरी योनि की आग ऐसे भड़क रही थी….जैसे कभी शांत ही ना होगी. पूरे एक महीने बाद जब अभिषेक को देखा तो, फिर से उस रात की यादें ताज़ा हो गयी…..किसी तरह रात गुज़री…..और मेने सुबह उठ कर नाश्ता बनाया, घर के काम निपटा कर नाश्ता कर लिया…….

उसके बाद में अपने सिलाई के काम में लग गयी……पर मेरा मन काम में नही लग रहा था…….सारी रात मेरी योनि में आग सी लगी रही थी…जो अभी तक शांत होने का नाम नही ले रही थी…..में उठ कर बाथरूम की तरफ जाने लगी…….आज सनडे था, हमारे जो किरायेदार नीचे वाले रूम में रहते थे……उसका पति घर पर ही था…..

जब में उनके रूम के सामने से गुज़री, तो मेरी नज़र अंदर चली गयी. वो दोनो पति पत्नी रज़ाई ओढ़े एक दूसरे को बाहों में लिए हुए लेटे हुए थे..मेने देखा किरायदार अपनी पत्नी के होंठो को चूस रहा था. और उसका एक हाथ उसके स्तनों पर था….जो उससे ज़ोर ज़ोर से दबा रहा था…….

ये देख कर मेरे अंदर की आग और भड़कने लगी…..में जल्दी से बाथरूम में गयी…..अपनी सलवार खोली, और फिर पैंटी को नीचे जाँघो तक सरका दिया. मेने वाइट कलर की पैंटी पहनी हुई थी……जो कि नीचे से एक दम गीली हो चुकी थी” हाए रब्बा हुन इस उम्र विच क्यों पानी छड रही है” में पेशाब करने के लिए नीचे बैठ गयी…….पेशाब करके पैंटी ऊपर की, फिर सलवार ऊपर करके बाँध कर बाथरूम से बाहर आ गयी……

मुझे समझ में नही आ रहा था कि, में कैसे अपनी योनि की आग को ठंडा करूँ……दूसरी तरफ प्राजक्ता अपने रूम में टीवी देख रही थी…..मेरा दिल बार बार यही कर रहा था कि, काश अभिषेक यहाँ होता, और मुझे ज़बरदस्ती ही ठोक देता. कम से कम मेरी योनि की आग तो ठंडी हो जाती,

में अपने आप से हार रही थी…….में इस कदर गरम हो चुकी थी कि, में अपना सब कुछ ताव पर रखते हुए अपने रूम में गयी, और अभिषेक को फोन किया…..पर अभिषेक ने फोन नही उठाया…….मेने दो तीन बार ट्राइ किया. पर उसने फोन नही उठाया……..अब में करू……मुझे कुछ समझ में नही आ रहा था. मुझे याद आया कि, कल अभिषेक ने मुझे वही वाले घर में आने को कहा था..

अब तो जैसे में लिंग के लिए पागल सी हो गयी थी……पति की मौत के ६ साल बाद तक मेने अपने अरमानो को मारे रखा था..पर आज में अपनी उतेजना को दबा नही पा रही थी……..में प्राजक्ता के रूम में गयी,

में: प्राजक्ता वो में बाज़ार जा रही हूँ..कुछ सामान लेने जाना है….

प्राजक्ता: ठीक माँ….

में: घर पर ही रहना……

प्राजक्ता : ठीक है माँ आप जाओ में घर पर ही हूँ……..

मेने घर से निकल कर ऑटो किया, और सीधा उस पते पर चली गयी. जहाँ पहले गयी थी……मुझे समझ में नही आ रहा था कि, में कैसे उसके सामने जाऊ. अगर उसने मुझसे पूछ लिया कि में मना करने के बाद क्यों आ गयी, तो में उसे क्या जवाब दूँगी……..

पर अपने ही दिल में पैदा हुए सवालों के जवाब मेरे पास भी ना थे. थोड़ी देर में ही में वहाँ पहुँच गयी…….मेने ऑटो वाले को पैसे दिए. और गली में अंदर बढ़ने लगी……..जैसे जैसे में उसके घर की तरफ बढ़ रही थी….वैसे वैसे मेरे दिल की धड़कने बढ़ती जा रही थी…….मुझे आज खुद पर ही शरम आ रही थी…..मेने गेट के सामने पहुँच कर डोर बेल बजाई….थोड़ी देर बाद गेट खुला तो सामने अभिषेक खड़ा था…..

INDIAN BEST TELEGRAM ADULT (18) CHANNELS

हिंदी Adult स्टोरी, Adult कॉमिक्स, सबसे अनूठे देसी मस्ती भरे XXX वीडियोज, हिंदी एडल्ट शायरिया, फन्नी एडल्ट जोक्स का अनूठा संगम..!! 🔞💯

(***Top To Click Here Join***)

X Night Clubs

Click Here

Adult Comics Club

Click Here

Adult Shayari & Stories

Click Here

Night Club Chat Group

Click Here

18 Vargin Girls

Click Here

अभिषेक: (मुझे देख कर मुस्कुराते हुए) अंदर आ जाओ…..

में बिना कुछ बोले अंदर आ गयी……मेरे अंदर आते ही उसने गेट को अंदर से लॉक कर दिया….और रूम की तरफ जाने लगा…..में भी सर झुकाए हुए उसके पीछे रूम में जाने लगी….अगर अभिषेक घर पर ही था तो उसने मेरा फोन क्यों नही उठाया…ये सवाल मेरे दिमाग़ में घूम रहा था…..”तुमने फोन क्यों नही उठाया मेरा” मेने रूम में एंटर होते हुए कहा…

अभिषेक: हां मेने देखी तुम्हारी मिस कॉल. वो में सो गया था..और फोन साइलेंट मोड पर था….

अंदर आते ही अभिषेक ने अपने पायजामा को उतार कर एक तरफ फेंक दिया…..और फिर सोफे पर बैठते हुए, अपने अंडरवेर को घुटनो तक नीचे सरका दिया…उसका का लिंग जो अभी पूरी तरह से खड़ा नही था मेरी आँखों के सामने आ गया…मेने अपनी नज़रे झुका ली…..

अभिषेक: वो मुझे ज़रूरी काम से जाना है थोड़ी देर बाद..इसीलिए मेरे पास ज़्यादा टाइम नही है…..चल आजा ज़्यादा टाइम ना लगा….

में: (एक दम से घबराते हुए) क्या…..(में मन में सोचने लगी कि ये क्या तरीका है एक तो बुलाया खुद और अब बिना कोई बात किए सीधा सीधा मुझे ठुकने के लिए कह रहा है)

अभिषेक: चल आ ना वहाँ क्या खड़ी है…चल खोल अपनी सलवार…..अच्छा चल इधर तो आ मेरे पास पहले…….

जैसे ही में अभिषेक के पास गयी, अभिषेक ने खड़े होते हुए मुझे बाहों में भर लिया….और फिर अपने होंठो को मेरे होंठो पर लगा दिया….मेने हल्का सा विरोध किया..पर उसके हाथों की गर्मी अपने बदन पर महसूस करके में ढीली पड़ गयी….उसने मेरे होंठो को चूस्ते हुए, अपने एक हाथ नीचे लेजा कर मेरे सलवार का नाडा खोलना शुरू कर दिया….

जैसे ही मेरे सलवार का नाडा खुला, अभिषेक पीछे हट कर सोफे पर बैठ गया. और अपने लिंग को हाथ से हिलाते हुए बोला.”चल अब जल्दी कर…” मेरी सलवार ढीली होकर मेरी

जाँघो पर आ चुकी थी….मेने सर झुकाए हुए पहले अपनी सलवार को निकाला, और फिर पैंटी को उतार दिया……अभिषेक ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने ऊपर खेंच लिया…..

में घुटनो को उसकी दोनो जाँघो की तरफ करके उसके ऊपर आ गयी….अभिषेक ने अपने लिंग को पकड़ कर मेरी योनि के छेद पर लगा दिया……में कल रात से अभिषेक के मोटे लिंग के लिए तरस रही थी…..जैसे ही उसके तने हुए लिंग का दहकता हुआ सुपाडा मेरी योनि के छेद पर लगा…….मेरे पूरे बदन में मस्ती की लहर दौड़ गयी……मेने आगे झुकते हुए, अभिषेक के सर को अपनी बाहों में लेते हुए अपनी स्तनों पर दबा दिया…..

में: "अह्ह्ह्ह अभिषेक तू साची मेनू गश्ती बना दित्ता है……अह्ह्ह्ह दस में की करा…… क्यों तुम मेरे साथ ऐसा कर रहे हो…

मेरी बात का उसने कोई जवाब नही दिया……और मेरी कमीज़ के ऊपर से मेरे स्तनों को मूह में भर कर नीचे से अपनी कमर को ऊपर की तरफ उछाला. मेरी योनि पहले से ही पानी छोड़ रही थी…..उसके लिंग का सुपाडा मेरी योनि की दीवारों को फेलाता हुआ अंदर घुसने लगा…में मस्ती में एक दम से सिसक उठी "आहह श्ह्ह्ह्ह अभिषेक तेरी लिंग नी मेरी योनि नू पागल कर छड़िया है हाए ओई होले"

मेने भी अपनी योनि को उसके लिंग पर दबाना शुरू कर दिया……और कुछ ही पलों में मेरी योनि उसकी के लिंग को निगल गयी……मेरा पूरा बदन मस्ती में थरथरा कर काँपने लगा…..अभिषेक ने मेरी कमीज़ को ऊपर उठाना शुरू कर दिया……जैसे ही मेरी कमीज़ ब्रा के ऊपर हुई, मेने खुद ही मदहोश होते हुए, अपने हाथों को पीछे लेजा ते हुए, अपनी ब्रा के हुक्स खोल दिए. और फिर ब्रा के कप्स को ऊपर उठा कर अपना एक स्तन निकाल कर उसके होंठो से भिड़ा दिया

में: आहह सीईईईई अभिषेक ले चूस ली अपनी आंटी की स्तन अह्ह्ह्ह मार मेरी योनि…..कल तो आग लगनी पानी छड रही है……..

अभिषेक ने भी बिना एक पल देरी किए, मेरी स्तनों को जितना हो सकता था..मूह में भर लिया…..और चूस्ते हुए, अपनी कमर को हिलाने लगा…..पर मेरा सारा वजन उसकी जाँघो के ऊपर था…..इसलिए वो शॉट नही मार पा रहा था…इधर मेरी योनि में आग और भड़क चुकी थी….

मेने अभिषेक के सर को अपनी बाहों में भरकर उसे अपनी स्तनों पर दबाते हुए अपनी नितंब को उछालना शुरू कर दिया…..में पागलों की तरह अपनी नितंब उछाल उछाल कर अपनी योनि को उसके लिंग पर पटकने लगी…..वो भी मस्ती में आकर नीचे से अपनी कमर हिला रहा था…….

में: आहह ठोक अपनी गश्ती नू अह्ह्ह्ह ठोक्द्द मेनू मार ले मेरी योनि हाए ओईए हां में गश्ती बन गेययी हाए ओईई तेरा लिंग मेनू जीन नही देन्दा आह आ अहह ह सीईईईई सीईईईईई मार्र होर्र ज़ोर दीए मार्र हइईई. तेरा लिंग मैं रोज योनि च लेनाआ है हइई ओईई आग लग जाए मेरीए योनि नू..

में फिर से मदहोश होकर जो मूह में आ रहा था बके जा रही थी…और अपनी नितंब को तेज़ी से ऊपर नीचे उछाल कर उसके लिंग को अपनी योनि में ले रही थी…में कल रात से तड़प रही थी……इसीलिए ३-४ मिनिट बाद ही मुझे लगाने लगा कि, में झड़ने वाली हूँ…..

में: हाई अभिषेक मार ज़ोर दे मार…..आह देख मेरी योनि वजन लगी हाए चढ़ता पानी मेरी फुददी तो हो गयी में हो गयी मेरी योनि……..

में बिखरकर झड़ने लगी….अभिषेक ने मुझे होंठो से चूसना शुरू कर दिया….में झड़ कर उसके ऊपर निढाल हो गयी…..पर अभिषेक अभी तक नही झड़ा था….."चलो हटो मुझे अभी जाना है…..बाकी फिर किसी दिन तेरी योनि के खबर लेता हूँ" ये कह कर उसने मुझे अपने ऊपर से उठा दिया…..

में: पर तुम्हारा तो अभी तक हुआ नही…….

अभिषेक: कोई बात नही तुझे तो खुश कर दिया ना मेरे लिंग ने…..

में अभिषेक के बात सुन कर शरमा गयी….और उसके ऊपर से उठ कर खड़ी हो गयी….उसका लिंग अभी तना हुआ झटके खा रहा था….पता नही मुझे क्यों अभिषेक का लिंग इतना प्यारा लगने लगा था…..मेने नीचे बैठते हुए, उसके लिंग को अपने हाथ में पकड़ लिया…अभिषेक ने मुस्कुराते हुए कहा"क्या हुआ"

पर मेने उसकी बार का कोई जवाब नही दिया……और अपनी आँखें बंद करते हुए, उसके लिंग के मोटे सुपाडे को अपने मूह में भर लिया….मेरी योनि के पानी का स्वाद मेरे मूह में घुलने लगा…..में झड़ने के बाद एक दम मस्त हो चुकी थी…..और उसके लिंग के सुपाडे को अपने होंठो में दबा दबा कर चूसने लगी.”अहह आंटी चूस इसी इसका ख़याल तुझे ही रखना है”

अभिषेक ने मेरे सर को दोनो हाथों से पकड़ लिया……..में कभी उसके लिंग के सुपाडे को चुस्ती, तो कभी उसके लिंग के सुपाडे पर जीभ घुमाने लगती….और अपने दोनो हाथों से उसके बॉल्स को सहलाने लगी……में करीब ५ मिनिट तक उसके लिंग को ऐसे ही चुस्ती रही…..और फिर जब मुझे लगा कि, अब अभिषेक झड़ने वाला है, मेने उसके लिंग को मूह से बाहर निकाल लिया…..और उसके पेशाब वाले छेद को अपने जीभ के नोक से कुरदेने लगी…….

अभिषेक: अह्ह्ह्ह सीईईई आंटी मेरा छूटने वाला है……..

पर में नही रुकी, और फिर उसके लिंग से वीर्य की पिचकारिया छोटने लगी…जिससे मेरा पूरा फेस भर गया…..अभिषेक का लिंग रह रह कर झटके खा रहा था….जब वो शांत हुआ तो, में खड़ी हुई, और बाथरूम में चली गयी……अपने आप को साफ करके बाहर आई तो, अभिषेक अपने कपड़े पहन चुका था…..

हम दोनो के बीच कोई बात नही हो रही थी……मैने अपनी पैंटी और सलवार पहनी, और अभिषेक के साथ बाहर आकर अपने घर के तरफ चली गयी…..जाते हुए अभिषेक नी भी कुछ नही बोला…..

उस दिन के बाद मुझे पता नही क्या हो गया….मुझे अब रोज लिंग की ललक लगाने लगी थी…..जिसके लिए में बेशरम होकर तीन चार बार अभिषेक के पास जा चुकी थी…… अभिषेक भी मेरी योनि के पूरी तसल्ली करवा देता था…..फिर एक दिन की बात है, मौसम बहुत ठंडा था……उस दिन भी सनडे था……और मेरी योनि में सुबह से खुजली होने लगी थी…..मेने अभिषेक को फोन किया…….पर अभिषेक ने इस बार मुझे साफ इनकार कर दिया……

उसके इस इनकार के कारण में एक दम से तड़प उठी, ऐसे ही दो तीन तक चला. पर अभिषेक ने मुझे इनकार करना जारी रखा…..आख़िर एक दिन में अपनी योनि की आग से मजबूर होकर उसके घर पहुच गयी….जब में और अभिषेक रूम में आई, तो में अभिषेक से पागलो के तरह चिपक गयी….और उसके पूरे चेहरे पर चुंबनो की बोछार कर दी…..

में: अभिषेक तुम क्यों मुझे तडफा रहे हो…….पहले तुमने खुद ही मेरी योनि में आग लगाई. अब तुम पीछे हट रहे हो..तो तां मेनू कमली कर देता…..दस की करा में…..

अभिषेक: आंटी आप यहाँ से चली जाओ….अब मुझे तुम से कुछ लेना देना नही है..

में: (अभिषेक की ये बात सुन कर में गुस्से में आ गयी) क्यों लगता है उस गस्ति उर्मिला से तेरी सुलहा हो गयी है……अभिषेक मेने पहले भी कहा था कि, वो तुम्हारी जिंदगी खराब कर देगी…..

अभिषेक: और तुम? तुम क्या कर रही हो?

अभिषेक की ये बात सुन कर में एक दम से चुप हो गये……पर अब में उसके लिंग की इस कदर दीवानी हो चुकी थी कि, में उसे इस तरह खोना नही चाहती थी.

में: फिर आख़िर तुम चाहते क्या हो…..क्यों मेरे अरमानो के साथ खेला…

अभिषेक: वेट वेट में कहाँ खेला तुम्हारे अरमानो के साथ….साफ साफ क्यों नही कहती जब योनि की आग ठंडी नही होती तो तुम्हे मेरे याद आती है….

में: अभिषेक तुम समझ नही रहे……….में नही रह सकती तुम्हारे बिना…..

अभिषेक: ओह्ह भूल जाओ मुझे…….मेरे आगे मेरे सारी जिंदगी पड़ी है….मुझे अपने बारे में भी सोचना है….तुम कब तक मेरा साथ दोगी….

में: अभिषेक में सारी उम्र तुम्हारा साथ देने के लिए तैयार हूँ….तुम जैसे कहोगे में वैसे करने को तैयार हूँ……

अभिषेक: हम्म अच्छा….जैसे में कहूँ…..वैसा तुम करोगी ?

में: हां एक बार बोल कर तो देखो……

अभिषेक: ठीक है तो फिर सुनो….में और प्राजक्ता एक दूसरे से प्यार करते है….अगर तुम मुझे चाहती हो तो, मेरी शादी प्राजक्ता से करवा दो….

में: अभिषेक मेने पहले भी तुमसे कहा था कि, तुम प्राजक्ता से दूर रहोगे…उसकी तरफ देखने की सोचना भी मत….अर्रे तुम हो कौन जो उसके साथ शादी करने के ख्वाब देख रहे हो….

अभिषेक: क्यों ...! क्या कमी है मुझ मे……सब कुछ तो है…कुछ महीनो बाद मुझे गवर्नमेंट जॉब मिल जाएगी…दिखने में भी ठीक ठाक हूँ…..और मेरे लिंग का तो तुझे पता ही है……खुश रखूँगा तेरे बेटी को और साथ में तुझे भी….

में: नही अभिषेक ये नही हो सकता…..

अभिषेक: ज़रा सोच जब में तुम्हारी और तुम्हारी बेटी की योनि को एक साथ ठोकुंगा. तो मज़ा दुगना हो जाएगा….और अगर तू सोचती है कि ऐसा नही हो सकता तो, मुझे भूल जा……और हां ये बात याद रखना, कि प्राजक्ता आज भी मुझे उतना ही प्यार करती है……तू कैसे भूल गये कि, उसकी योनि के सील भी मेने तोड़ी है……और वो भी तेरी तरह मेरे लिंग के दीवानी है…….

अभिषेक: चल अभी मुझे काम पर जाना है……अगर तू मेरी शादी प्राजक्ता से नही करवा सकती तो मुझे भूल जा…..

में अभिषेक की बातें सुन कर बहुत परेशान हो गई…..मेने मन ही मन फैंसला कर लिया था…….कि चाहे कुछ भी हो जाए…..में प्राजक्ता की शादी उससे नही होने दूँगी………..

११

में घर वापिस आ गयी, और अपने मन को समझा कर आगे की जिंदगी के बारे में सोचने लगी……कुछ दिन और बीत गये……पर मेरी योनि की आग मुझे जीने नही दे रही थी……में अक्सर रात को अभिषेक के लिंग के बारे में सोचते हुए, अपनी योनि में उंगली करती,

पर आग शांत होने की बजाए…….और भड़क उठती……..एक दिन में ऊपर छत पर बैठी धूप सेंक रही थी……छत पर आगे की तरफ एक रूम था….जिसमे अरशद नाम का आदमी अपनी नयी नयी पत्नी सलमा के साथ रहता था.उनकी शादी को अभी तीन महीने हुए थे….. मुझे उनके रूम से सलमा के सिसकने के आवाज़ आ रही थी…..रूम के एक साइड में विंडो थी……जो बारिश के पानी से भीग कर थोड़ी खराब हो गयी थी……

और उसमे जगह जगह दरार पड़ गयी थी…….

में अपने आप को रोक ना पे, और विंडो के पास जाकर दरार में अंदर झाँकने लगी…… अंदर का नज़ारा देख मेरे पूरे बदन में आग लग गयी….अंदर अरशद बेड के किनारे नीचे खड़ा था…और सलमा बेड पर घोड़ी बनी हुई सीसीया रही थी…..

सलमा: जी नितंब में मत डालिए….बहुत दर्द होता है..

अरशद: चुप कर साली क्यों नौटंकी कर रही है………तेरी नितंब को पिछले दो महीनो से मार रहा हूँ..और अभी तक तुझे नितंब में लिंग लेने से दर्द होता है. में नही मानता…….

सलमा: सच कह रही हूँ…….

अरशद ने उसकी बात का कोई जवाब नही दिया, और अपने लिंग पर तेल लगाकर, अपने लिंग के सुपाडे को उसकी नितंब के छेद पर भिड़ा दिया…सलमा एक दम सिसक उठी. ओह्ह जी धीरे धीरे मारना……"

अरशद ने अपने लिंग को सलमा की नितंब के छेद पर दबाना शुरू कर दिया. मेरे देखते ही देखते, अरशद का पूरा लिंग सलमा की नितंब में समा गया…..और अरशद ने अपना लिंग सलमा की नितंब के अंदर बाहर करना शुरू कर दिया……

सलमा: जी और ठोकिए ...आह बहुत मज्जा आ रहा है…

सलमा भी अब अपनी नितंब को पीछे की तरफ धकेलनी लगी थी. में ये सब देख कर बहुत हैरान थी, कि आदमी औरत की नितंब भी मारते है, और उससे ज़यादा हैरान सलमा पर थी, जो पहले दर्द से कराह रही थी….अब अपनी नितंब को पीछे की तरफ फेंक फेंक कर अरशद का लिंग नितंब में ले कर मज़े कर रही थी….ये सब देखते हुए मेरी बुरी हालत हो गयी……

में फॉरन नीचे आ गयी…….अपने रूम को अंदर से लॉक किया….तेज़ी से अपनी सलवार खोली, फिर सलवार के साथ साथ अपनी पैंटी को भी नीचे सरका दिया. मेने अपनी योनि पर अपनी उंगलिया घुमाना शुरू कर दिया…..मेरी योनि इतनी गीली हो चुकी थी, कि कुछ ही सेकेंड्स में मेरी उंगलिया भी पानी से सन गयी.

पर मेरी योनि में सरसराहट और बढ़ती जा रही थी…..मुझे कुछ समझ में नही आ रहा था कि, में अपनी योनि में हो रही खुजली को कैसे शांत करूँ… में बेड पर गिरते हुए लेट गयी…..मेरे बदन में आग लगी हुई थी…..रह रह कर मुझे अभिषेक के याद सता रही थी…..उसके साथ बिताए हुए हर पल मेरी आँखों के सामने घूमने लगा था……..

मेरे ज़हन में उसकी कही बातें घूमने लगी……में उन सब बातों में उलझ कर रह गयी थी….में मन मार कर बाहर आ गयी…मेने देखा प्राजक्ता अपने रूम में उदास सी लेटी हुई थी………जब से अभिषेक यहाँ से गया था, वो बेहद उदास थी….में उसके पास गयी, और उसके सर पर प्यार से हाथ फेरते हुए.

में: क्या हुआ बेटा उदास क्यों हो…..

प्राजक्ता: (रूखे अंदाज़ में) कुछ नही……

में: देख प्राजक्ता में कई दिनो से देख रही हूँ…..तू बहुत उदास रहती हो… बेटा मेने जो किया वो तुम्हारे भले के लिए ही किया है……अभिषेक तुम्हारे लायक नही है….

प्राजक्ता: (एक दम से प्राजक्ता की आँखों में आँसू आ गये) माँ में उससे प्यार करती हूँ…….में नही रह पाउंगी उसके बिना……..

में: (थोड़ा गुस्सा दिखाते हुए) चुप कर, तू जानती क्या है उसके बारे में…तुझे पता है, वो जो उर्मिला आंटी आई थी, उसकी साथ वो कौन थी…..

प्राजक्ता: (सुबकते हुए) हां जानती हूँ माँ……सब जानती हूँ…….अभिषेक ने मुझे सब बताया था……उनके बीच में जो होता था……

में: (प्राजक्ता की बात सुन कर जैसे मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गयी) फिर भी तू उससे प्यार करती है….तू ये कैसे कर सकती है….

प्राजक्ता: मुझे नही पता माँ…..उसने मुझे सच तो बताया ना…..तुम ही बताओ कौन अपने ऐसे राज़ किसी को बताता है……में अगर शादी करूँगी तो उससे ही करूँगी, नही तो में जहर खा कर मर जाऊंगी……

में: तू पागल हो गयी है प्राजक्ता….

प्राजक्ता: हां में पागल हूँ, उसके प्यार में पागल……अब जब में उसे अपना सब कुछ दे चुकी हूँ, तो कैसे किसी और के साथ शादी कर लूँ. तुम ही बताओ माँ….

मेने चुप कर बाहर आना ही ठीक ही समझा…….हमारी जिंदगी में ऐसा तूफान आया था.जो थमने का नाम ही नही ले रहा था…..प्राजक्ता से मेरी अगले दो दिन तक बात ही नही हुई,….प्राजक्ता ने दो दिन से कुछ नही खाया था…. वो मेरे सामने अंदर ही अंदर घुट रही थी…….में अपनी हालत से इतना मजबूर हो गयी थी, कि आख़िर मेने सोच ही लिया कि, अब प्राजक्ता को ही अपनी जिंदगी का फैंसला लेने दूं…..आख़िर अभिषेक भी ठीक ही कह रहा था……..

उसमे कोई कमी भी नही थी…..में प्राजक्ता के रूम में गयी, तो उसने मुझे देख कर फेस घुमा लिया….मेने उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहा”प्राजक्ता नाराज़ हो अपनी मम्मी से” प्राजक्ता ने कुछ नही बोला……

में: चल उठ कर खाना खा ले,

प्राजक्ता: मुझे भूख नही है……

में: तूने कल से कुछ नही खाया बेटा बीमार पड़ जाएगी…..

प्राजक्ता: मर भी जाऊ तो उससे आपको क्या फरक पड़ता है…

मेने प्राजक्ता को पकड़ कर अपने गले से लगा कर “ना बेटा ऐसा नही बोलते.तुझसे पहले में ना मर जाउ….तू अभिषेक से शादी करना चाहती है ना….जा कर ले. मुझे कोई ऐतराज नही….पर अगर अभिषेक ने तुझसे शादी करने के लिए मना कर दिया तो,

प्राजक्ता: (प्राजक्ता को तो जैसे मेरी बात पर यकीन ही नही हो रहा था…) क्यों नही करेगा…..वो भी मुझसे प्यार करता है……

में: चल ठीक है, जैसे तू कहेगी में राज़ी हूँ……

प्राजक्ता मेरे बात सुन कर एक दम से उछल पड़ी….और बेड से उतरते हुए बाहर जाने लगी…”अर्रे कहाँ जा रही है….खाना तो खा ले…….

प्राजक्ता: माँ अभिषेक को फोन करने जा रही हूँ….बाद में खाना खाती हूँ..

प्राजक्ता मेरे रूम में फोन करने चली गयी…….में वही उसके रूम में बैठी सोचने लगी कि, क्या जो में कर रही हूँ , वो सही है या ग़लत….पर इन सब सवालों के जवाब मेरे पास भी ना थे….प्राजक्ता करीब १५ मिनिट तक अभिषेक से फोन पर बात करती रही थी…..और जब वो मेरे रूम में आई तो, उसका चेहरा उतरा हुआ था…..उसके आँखें आँसू से भरी हुई थी…..

वो मेरे पास आई, और फिर मेरे गले लग कर रोने लगी…..में उसे चुप कराने की कोशिश कर रही थी…….पर वो बेसूध रोए जा रही थी….”आख़िर हुआ क्या है बता तो सही….”

प्राजक्ता: (रोते हुए) माँ तुमने तुमने ऐसा क्यों किया मेरे साथ ?

में: क्या हुआ मेने क्या क्या बता तो सही…..

प्राजक्ता: माँ मुझे अभिषेक ने सब बता दिया है…..तुम उससे मिलने जाती थी ना…

प्राजक्ता की बात सुन कर मेरे होश उड़ गये…….मुझे यकीन नही हो रहा था कि, उसने सब प्राजक्ता को बता दिया था….”अर्रे में तो वैसे ही गयी थी उससे मिलने के लिए सच”

प्राजक्ता: (मुझे अपने दूर धकेलते हुए) झूट मत बोलो…..तुम बहुत गंदी हो….अपनी बेटी की उम्र के लड़के के साथ छि…..तुमने मेरा सब कुछ लूट लिया माँ……

में: (में प्राजक्ता के सामने एक दम शर्मिंदा हो गयी) पर उसने कहा क्या ?

प्राजक्ता: अब मुझे सब बताना पड़ेगा क्या….

में कुछ ना बोल पाई, और उसके रूम से बाहर आकर अपने रूम में आ गयी…गुस्से से मेरे हाथ पैर काँपने लगे…..मेने अभिषेक को फोन लगाया.

अभिषेक: हेलो…..

में: हरामजादे आख़िर दिखा ही दी ना तूने अपनी औकात…..

अभिषेक: हेलो तमीज़ से बोलो…….

में: अब तू मुझे तमीज़ सिखाएगा……मेने सोचा था कि, अगर तुम्हारी शादी प्राजक्ता के साथ कर दूं, तो तू शायद सुधर जाए…..पर कुत्ते के पूंछ कभी सीधी नही होती…..में ये भूल गयी थी…क्या कहा तूने प्राजक्ता को…

अभिषेक: मेने क्या कहा..मेने तो सिर्फ़ इतना कहा था कि, हम सुहागरात तीनो साथ मिल कर मनाएँगे…….

में: घिन आती है मुझे तुम्हारी सोच पर……..तुमने एक बार भी प्राजक्ता के बारे में नही सोचा……वो पागलो की तरह तुमसे प्यार करती है…भूखी रह कर जान देने पर तुली हुई थी…….और तू छि……तू तो आदमी के नाम पर भी कलंक है……..

अभिषेक: तो में कौन सा प्राजक्ता से प्यार नही करता……..में भी तो उससे प्यार करता हूँ…….बस फरक ये है कि, में तुम दोनो से एक जैसा प्यार करता हूँ……अब जो मेरे दिल में है मेने उससे कह दिया…..बाकी तुम लोग सोचो क्या करना है क्या नही करना है…….

में: सही हुआ जो वक़्त रहते तूने अपनी औकात दिखा दी….

अभिषेक: मेरे पास ज्यादा टाइम नही है ! तुम सोचो क्या करना है…..

ये कहते हुए उसने फोन रख दिया…..में वही बैठे रोने लगी….पता नही कब दोपहर हुई कब शाम और कब रात…..में और प्राजक्ता अपने अपने कमरो में रोती रही…..करीब ८ बजे मेरे रूम के डोर पर नॉक हुआ, मेने डोर खोला, तो देखा सामने प्राजक्ता खड़ी थी…….उसके हाथ में खाने की प्लेट थी….

प्राजक्ता: माँ खाना खा लो……

में: (अपने आँसू को साफ करते हुए) तुमने खा लाया….

प्राजक्ता: नही थोड़ी देर बाद खा लूँगी….

में: अच्छा चल खाना अपने रूम में लेकर चल…साथ में खाना खाते है.

प्राजक्ता प्लेट लेकर अपने रूम में चली गयी…….में बाथरूम में गयी…..और सोचने लगी कि, शायद प्राजक्ता समझ चुकी है, कि अभिषेक उसके लायक नही है…उसकी सच्चाई अब प्राजक्ता की आँखों के सामने आ चुकी थी….मेरे मन का बोझ थोड़ा सा हल्का हुआ….में फ्रेश होकर बाहर आई, और प्राजक्ता के रूम की तरफ जाने लगी. मेरे नज़र मेरे रूम में गयी…..प्राजक्ता फोन पर किसी से बात कर रही थी. में सीधा प्राजक्ता के रूम में चली गयी….

थोड़ी देर बाद प्राजक्ता रूम में आ गयी, और मेरे सामने बेड पर बैठ कर खाना खाने लगी…….”किससे बात कर रही थी”

प्राजक्ता: (मेरी तरफ देखते हुए) अभिषेक से…..

में: अब अभिषेक से बात करके क्या करना है तुझे……..

प्राजक्ता: माँ वो में तुमसे कहना चाहती थी कि,

में: हां बोल ना क्या कहना चाहती थी तू…

प्राजक्ता: माँ मुझे आप से कोई शिकायत नही है……में उस बात को लेकर आप से बिकुल भी नाराज़ नही हूँ कि, अभिषेक के साथ आप ने क्या किया……और मुझे आगे भी कोई ऐतराज नही होगा अगर मुझे अभिषेक को आपके साथ शेर करना पड़े…..

प्राजक्ता की ये बात सुन कर खाने का नीवाला मेरे गले में ही अटक गया. में एक टक हैरान होते हुए, प्राजक्ता को घुरे जा रही थी…रूम में खामोशी से छा गयी थी………प्राजक्ता नीचे अपनी प्लेट में देख रही थी…..

में: प्राजक्ता तू होश में तो है ? ये क्या बके जा रही है…….

प्राजक्ता: (घबराई हुई आवाज़ में)हां माँ में होश में हूँ…मेने देखा है आपको तड़पते हुए…..मुझे सब मंजूर है माँ…..

में: (खाने की प्लेट एक साइड में रखते हुए) तू पागल हो गयी है….पता नही उसने तेरे दिमाग़ में क्या भर दिया है….

प्राजक्ता: प्लीज़ मान जाओ ना माँ…….में नही जी पाउंगी, उसके बिना.बोलो तुम उससे प्यार नही करती……

में: अब में तुम्हें कैसे समझाऊ प्राजक्ता…..ऐसा नही होता है….

प्राजक्ता: प्लीज़ माँ मान जाओ, ना मेरी खातिर……हम दोनो आपको बहुत खुश रखेंगे…….

में: मुझे कुछ वक़्त चाहिए सोचने के लिए……

प्राजक्ता: (मेरे गाल को चूमते हुए) आइ लव यू मोम…….

मेने खाना खाया, और अपने रूम में चली गयी…..में इस बारे में रात भर सोचती रही…… फिर सुबह हुई तो, में अपने रूम से बाहर आई,. तो देखा प्राजक्ता पहले से उठ कर नहा चुकी थी…….और खाना बना रही थी…

में: अर्रे वाह आज इतनी सुबह सुबह कैसे उठ गयी…..

प्राजक्ता ने मेरी बात का कोई जवाब नही दिया…..में बाथरूम में गयी, और नहा धो कर वापिस आ गयी…….प्राजक्ता नाश्ता लगा चुकी थी….हम ने साथ में नाश्ता किया, और फिर में बर्तन उठाने लगी…….

प्राजक्ता: माँ फिर क्या सोचा तुमने……

में: अब में तुमसे क्या कहूँ प्राजक्ता……जैसे तुम्हारा दिल करता है वैसे करो.

वो तो बेड पर ही उछल पड़ी….और बेड से उतार कर मुझे गले लगा लिया….फिर मेरे कान में धीरे से फुस्फुसाइ…..

प्राजक्ता: माँ तू मेरी सौतन बनेगी ? (फिर प्राजक्ता जोर जोर से हँसने लगी…….

में: (उसकी ये बात सुन कर में एक दम से दंग रह गयी)चुप कर बेशरम. अपनी माँ के साथ ऐसे बात करते है…..

में किचन में आ गयी…..पर सच कहूँ तो, मेरे मन में भी अजीब से हलचल मच गयी थी… प्राजक्ता की आवाज़ मुझे आई, वो फोन पर बात कर रही थी…मुझे मालूम था कि, वो अभिषेक से ही बात कर रही थी..थोड़ी देर बाद प्राजक्ता ने मुझे रूम में आने को कहा…में अपने रूम में गयी…

में: क्या है ?

प्राजक्ता: लो अभिषेक से बात करो.वो आप से बात करना चाहता है……

में(मेने प्राजक्ता से फोन लेकर कान पर लगाया) हेल्लो.

अभिषेक: बहुत जलदी मान गयी आप…..

उसकी इस बात पर में खामोश हो गयी….

अभिषेक: अच्छा सुनो. हम इस सनडे को शादी कर लेंगे…..सबसे पहले तुम एक काम करो…..अपने सब किरायेदारो को रूम खाली करने के लिए बोल दो…..

में: क्यों ? ऐसे अचानक वो कहाँ जाएँगे…

अभिषेक: अर्रे कह देना कि प्राजक्ता की शादी है, मेहमान आएँगे तो उनको ठहराने के लिए जगह भी तो होनी चाहिए….और उनको बता कर तुम प्राजक्ता को लेकर मार्केट में आ जाओ……में तुम दोनो का वही वेट कर रहा हूँ

में: मार्केट में क्या करना है….

अभिषेक: अर्रे भाई शादी है, तो थोड़ी शॉपिंग करना तो बनता है ना…

में: ठीक है हम दोपहर को १ बजे आ जाएँगे…

उसके बाद मेने अपने सभी किराएदारो से बात की, और उन्हे २ दिन में कमरे खाली करने को कहा….दोपहर को में प्राजक्ता के साथ तैयार होकर, मार्केट आ गयी… हम अभिषेक की बताई हुई जगह पर पहुच गयी…वहाँ पर अभिषेक हमारा इंतजार कर रहा था…उस दिन अभिषेक नॉर्मल बिहेव कर रहा था….

प्राजक्ता शॉपिंग को लेकर इतनी एक्ससाईटेड थी कि, उसे ये ख़याल भी नही था कि, अभिषेक किस शर्त पर उससे शादी के लिए तैयार हुआ था….में बार बार प्राजक्ता की तरफ देख रही थी….पर मुझे उसके चेहरे पर कोई शिकन नज़र नही आ रही थी… मुझे ऐसा लग रहा था. जैसे वो अभिषेक के साथ शादी करने के लिए बहुत खुश है….

में औलाद के मोह में बँधी सब कुछ चुप चाप देख रही थी…शॉपिंग के बाद हम दोनो घर वापिस आ गये….अभिषेक अपने घर चला गया….अगले कुछ दिनो में हमारे सारे किरायेदार रूम खाली कर चले गये….मेने अपने जेठ जेठानी और प्राची को फोन पर ही बता दिया था , सब मेरे इस फैंसले को सही मान रहे थे…..पर असल बात उनको पता नही थी..

खैर वो दिन भी आ गया………जब प्राजक्ता और अभिषेक की शादी होनी थी…..मेरे कहने पर अभिषेक प्राजक्ता के साथ कोर्ट मॅरेज करने के लिए तैयार हो गया. क्यों कि में ये पक्का कर लेना चाहती थी कि, मेरी बेटी के साथ धोका ना हो….हम सब लोग कोर्ट गये, और प्राजक्ता और अभिषेक की शादी करवा दी गयी…..शाम को घर में मेरे जेठ जी का परिवार और प्राची का पति और उसके सास ससुर आए थे…इस लिए घर में छोटी सी पार्टी अरेंज करी थी…

१२

अगले दिन सुबह सब अपने अपने घर के रवाना हो गये…..आज मेरे और प्राजक्ता के लिए सुबह थी….और आज के बाद मेरी लाइफ पूरी तरह से बदल जानी वाली थी….शायद में इस समाज की पहली औरत होने वाली थी….जो अपनी बेटी के साथ साथ उसके पति के साथ एक ही सेज पर ठुकने वाली थी……..

डर भी लग रहा था…..और इस नये अनुभव के बारे में सोच सोच कर मेरे पूरे बदन में सरसराहट सी दौड़ जाती…..मन में भी अजीब सी हलचल बनी हुई थी…….”हाईए कैसे में ठुकुन्गि….अपनी बेटी के सामने ……कैसे अपने बेटी को अपनी योनि में लिंग लेते देखूँगी….ये सोच कर ही मेरी योनि काँप जाती….

सभी मेहमानो के जाने के बाद अभिषेक घर से निकल गया….जब मेने प्राजक्ता से पूछा तो उसने कहा कि वो उस को भी कुछ बता कर नही गया….दोपहर को अभिषेक घर वापिस आया…..में प्राजक्ता के साथ किचन में खाना बना रही थी… अभिषेक सीधा किचन में आ गया….मेरा दिल उस समय थम गया.जब उसने मेरे सामने ही प्राजक्ता को पीछे से अपनी बाहों में भर कर उसके गर्दन पर अपने होंठो को रख दिया….

मेने शरमा कर दूसरी तरफ मूह कर लिया……मुझे प्राजक्ता के सिसकने की आवाज़ आई “आह अभिषेक छोड़ो ना” मेने अपनी कनखियों से देखा तो, वो प्राजक्ता के ब्लाउस के ऊपर से उसकी स्तनों को मसल रहा था….और प्राजक्ता अपने एक हाथ को पीछे लेजा कर उसके सर को थामे हुए थी…..और उसने अपने सर को अभिषेक के कंधे पर रख कर आँखें बंद कर रखी थी…..फिर अभिषेक बाहर चला गया…..

आज मेरे लिए एक एक पल काटना मुश्किल हो रहा था. में कैसे अभिषेक और प्राजक्ता के साथ एक बिस्तर पर नही नही मुझसे नही होगा. वैसे भी अभिषेक पर अब सिर्फ़ प्राजक्ता का हक़ है. अभी तो उसने भोलेपन में ये सब करने के लिए हां कर दी. पर कौन सी पत्नी अपनी पति को किसी दूसरी औरत के साथ शेअर करना पसंद करेगे. बाद में आगे चल कर कही गड़बड़ हो गयी तो, नही में अभी अभिषेक से बात करती हूँ. ये सोचते हुए, मैं प्राजक्ता के रूम में चली गयी…..जहा पर अभिषेक बैठा टीवी देख रहा था. मुझे देखते ही उसने टीवी का वॉल्यूम कम कर दिया. और मेरी तरफ देखने लगा….मेने हिम्मत करते हुए, अभिषेक से कहा.

में: अभिषेक ये सब करना ज़रूरी है क्या ?

अभिषेक: तुम किस बारे मे बात कर रही हो..साफ साफ बताओ ना.

मई: (थोड़ी देर और हिम्मत जुटाने के बाद) एक साथ सहवास करने के बारे मे. में अपनी बेटी के सामने नही कर पाउंगी ये सब.

अभिषेक: ठीक है. जब तक तुम नही मानोगी, तो मैं और प्राजक्ता भी अपनी सुहागरात नही मनाएँगे…

मैं: ये क्या बच्चो वाली ज़िद्द है. देखो अभिषेक प्राजक्ता अब तुम्हारी पत्नी है. और तुम उसके पति. कोई भी औरत अपने पति को दूसरी औरत के साथ बरदाश्त नही कर सकती. और मैं तो उसकी माँ हूँ. मैं कैसे अपनी बेटी के प्यार को शेअर कर सकती हूँ.

अभिषेक: अच्छा इस बारे में प्राजक्ता से ही पूछ लो.

में अभिषेक को रोकना चाहती थी. पर उसने मेरे कुछ कहने से पहले ही प्राजक्ता को आवाज़ लगा दी. प्राजक्ता अभिषेक की आवाज़ सुन कर रूम में आ गयी. “क्या हुआ अभिषेक “ प्राजक्ता ने हम दोनो की तरफ देखते हुए कहा. “देखो ना तुम्हारी माँ क्या कह रही है” अभिषेक ने मुस्कुराते हुए, प्राजक्ता की तरफ देख कर बोला. “क्या हुआ माँ कोई प्राब्लम है क्या”

अब मैं कहती. मैं थोड़ी देर वहाँ चुप खड़ी रही. और जब मेरे कुछ बोलने की हिम्मत ना हुई, तो में रूम से बाहर आकर अपने रूम में चली गयी….मुझे अभिषेक और प्राजक्ता की बातों की आवाज़ हलकी हलकी आ रही थी. पर वो क्या बात कर रहे थे. मुझे समझ नही आ रहा था. थोड़ी देर बाद प्राजक्ता मेरे रूम में आई, और मेरे पास आकर बेड पर बैठ गयी. थोड़ी देर के लिए वो रूम में इधर उधर देखती रही, और फिर मेरी तरफ देखते हुए बोली.

प्राजक्ता: माँ प्लीज़ मान जाओ ना. तुम्हे मेरी खुशी की ज़रा भी परवाह नही है क्या…..प्लीज़ मान जाओ ना.

ये कहते हुए प्राजक्ता रूम से बाहर चली गयी….में उसे हैरत से जाते हुए देख रही थी…..और सोच रही थी कि, आख़िर अभिषेक ने प्राजक्ता पर ऐसा क्या जादू कर दिया कि, वो मेरे सामने ही अभिषेक से ठुकने के लिए तैयार हो गयी है….मैं अभी यही सोच ही रही थी कि, प्राजक्ता एक बार फिर से रूम मे आई….उसके हाथ मे एक शॉपिंग बॅग था… उसने वो शॉपिंग बॅग मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा "ये तुम्हारे लिए अभिषेक लाया है. और आज रात को आपको इसे पहनना है" वो बॅग मेरे सामने रख कर बाहर चली गयी…..मेने वो बॅग उठाया, और उसमे से वो ड्रेस निकाली, उसके पिंक कलर की शॉर्ट और स्लीव्लेस्स नाइटी थी…..उसमे स्तनों की जगह पर नेट का कपड़ा लगा हुआ था….और ब्रा शेप सी बनी हुई थी….जिसमे आगे की तरफ तीन हुक्स थे….अब मैं खुद भी अपनी योनि के हाथों लाचार महसूस कर रही थी…..

आख़िर वो घड़ी भी आ गयी……रात को खाना खाने के बाद प्राजक्ता मेरे रूम मे आई……उसका चेहरा एक दम खिला हुआ था….उसकी खुशी उसके चेहरे को देखते ही बन रही थी….उसने अंदर आते ही मुझे बाहों में भर लाया, और मेरे गालो को चूमती हुई बोली, "माँ जल्दी से तैयार हो जाओ……..अभिषेक वेट कर रहा है.प्लीज़ जल्दी करना….ये बोल कर प्राजक्ता बाहर चली गयी…..मैं बेड से खड़ी हुई, और नाइटी को उठा कर एक बार देखा. और फिर मन ही मन सोचा."आख़िर तू भी तो चाहती है कि, अभिषेक तुझसे भी प्यार करे…..तेरी भी तो कुछ ज़रूरते है…उन्हे कौन पूरा करेगा….अब अगर प्राजक्ता को कोई एतराज नही तो मैं क्यों इस भोले पन का ढोंग करू" मेने अपने सारे कपढ़े उतार दिए….और फिर वो नाइटी पहन कर मिरर के सामने आई तो मैं खुद पर शर्मा गयी….

वो स्लीव्लेस्स नाइटी मेरी जाँघो तक मुश्किल से आ रही थी…..उसमे मेरा जिस्म एक दम कसा हुआ लग रहा था….ऊपर से मेरी स्तनों की शेप उसमे अलग ही नज़र आ रही थी….. में घबराते हुए, अपने कमरे से बाहर निकली, और काँपते हुए कदमो से चलते हुए, प्राजक्ता के रूम के डोर के पास पहुची. अंदर से प्राजक्ता और अभिषेक के हँसने की आवाज़ आ रही थी…..डोर पर खड़े हुए मेरे हाथ पैर एक दम सुन्न पड़ गये थी….आख़िर मैं इस हालत मे अंदर जाऊ तो जाऊ कैसे. तभी रूम मे एक दम से सन्नाटा छा गया….जैसे प्राजक्ता और अभिषेक को मेरे रूम के बाहर खड़े होने का अंदेशा हो गया हो….मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था… साँसे ऐसे चल रही थी…मानो मीलो दौड़ कर आई हूँ….

मैं अपने सांसो को थामने की कोसिश करते हुए, डोर के बाहर खड़ी थी….और अंदर जाने के लिए हिम्मत जुटा रही थी….तभी एक दम से डोर खुला….सामने अभिषेक खड़ा था….उसने एक बार ऊपर से लेकर नीचे तक मेरे बदन को देखा, और फिर मेरा हाथ पकड़ कर अंदर लेजाने लगा….मैं किसी कट्पुतली की तरह उसके साथ खिंचती चली गयी…..वो मेरी स्तनों को घुरे जा रहा था….मेरी नाइटी में से मेरे काले रंग के मोटे स्तनाग्र साफ झलक रहे थे….

में शरम के मारे अपना सर भी ऊपर नही उठा पा रही थी….रूम के बीचो बीच आकर अभिषेक ने मेरा हाथ छोड़ दिया….और फिर मुझे पीछे से डोर बंद होने की आवाज़ आई….अभिषेक अंदर से डोर को लॉक कर रहा था….वैसे तो घर में अब हम तीनो के सिवाए कोई नही था…..पर उसके डोर को लॉक करने की आवाज़ सुन कर मुझे ये अहसास होने लगा कि, अब आगे क्या होने वाला है…..फिर मुझे अपने पीछे से अभिषेक मेरी तरफ बढ़ता हुआ महसूस हुआ…मेने हिम्मत करके, अपनी नज़रे ऊपर उठाए, तो देखा सामने प्राजक्ता बेड पर रेड कलर की नाइटी पहनी हुई घुटनो के बल बैठी थी…..उसके माथे पर ज़रा भी शिकन नही थी. वो एक दम नॉर्मल लग रही थी……

तभी अभिषेक मेरे पीछे आकर खड़ा हो गया……उसकी बॉडी मेरी बॅक से सट गयी थी…..मेने फॉरन ही अपना सर फिर से झुका लिया….और अगले ही पल अभिषेक के दोनो हाथ मेरी कमर के बगलो से होते हुए, मेरे पेट पर आ गये….उसने पीछे से मेरे को बाहों में जाकड़ लिया था….मुझे उसका तना हुआ लिंग अपनी नितंब की दरार में साफ महसूस हो रहा था….जिसके कारण मेरे पैर मेरा साथ छोड़ने लगे थी…..वो धीरे धीरे अपने दोनो हाथों को मेरे पेट पर घूमाते हुए सहला रहा था…..और पीछे से अपनी कमर को हल्का हलका सा घुमा रहा था….

मुझे शरम भी आ रही थी…..और अभिषेक के लिंग को अपनी नितंब की दरार मे महसूस करके में एक दम से गरम भी होने लगी थी….फिर मुझे उसकी साँसे मेरे कान पर महसूस हुई, मेरा पूरा जिस्म एक दम सिहर गये….मेने अपने दोनो हाथों को अभिषेक के हाथो पर रख कर दबा दिया….."आज तेरे पिछले छेद का उद्घाटन करना है…..सुहागरात पर मुझे ये तोफा चाहिए…बोल मुझे अपनी नितंब मारने देगी ना" अभिषेक की ये बात सुन कर तो जैसे मेरे दिल की धड़कने ही थम गयी….उस दिन मेने अरशद को सलमा की नितंब मारते हुए देखा था. वही सीन मेरी आँखो के सामने घूम गया….दूसरा अभिषेक ने ये बात धीरे नही बोली थी….प्राजक्ता को ज़रूर इस बात को सुन लिया होगा…..

मैं एक दम से शरमसार हो गयी…..फिर अभिषेक ने अपने होंठो को मेरे गले पर रख दिया….और मेरी गरदन को चूमने लगा…..मेरी आँखें अभिषेक के होंठो को अपनी नेक पर महसूस करते ही, बंद हो गयी….पूरा बदन कांप गया….मेरे हाथ अभी भी उसके हाथों के ऊपर थे…..और वो अपने हाथों से मेरे पेट को मसलते हुए, मेरी स्तनों की तरफ बढ़ रहा था…..ये जानते हुए भी कि प्राजक्ता बिकुल मेरे सामने बैठी है…..मैं एक दम मदहोश सी होती हुई उसके हाथ को रोक नही पा रही थी…..धीरे धीरे उसके दोनो हाथ मेरी स्तनों पर आ पहुचे…….और नाइटी के ऊपर से मेरे स्तनों के स्तनाग्र को अपनी उंगलियों में लेकर मसलने लगा……"आह अभिषेक प्राजक्ताआ" मैं एक दूं सिसक उठी…..तभी मुझे अहसास हुआ कि, मेरे घुटनो से कुछ टकरा रहा है…..

मेने सर झुका रखा था……मेने अपनी आँखें खोल कर देखा तो, वो बेड का किनारा था…..मदहोशी के आलम में मैं कब बेड तक पहुच गयी मुझे पता ही नही चला….फिर अचानक से उसने मुझे बेड पर धकेल दिया…..मैं बेड पर जा गिरी…जैसे ही मेने आँखे खोली तो मेने देखा कि मेरी आँखो के सामने प्राजक्ता वैसे ही बैठी हुई थी…मैं बेड पर पेट के बल थी….फिर मुझे अपनी जाँघो पर कुछ महसूस हुआ….मेने लेटे हुए, पीछे गर्दन घुमा कर देखा तो, अभिषेक मेरी जाँघो पर बैठा था…..उसके वजन के कारण मैं हिल भी नही पा रही थी. पता नही कब उसने अपना पायजामा उतार दिया था….अब उसके बदन पर सिर्फ़ अंडरवेर था…..जो आगे से उभरा हुआ था…..

उसने अपने दोनो हाथों को मेरी जाँघो पर रख दिया….और मेरी जाँघो को मसलते हुआ, ऊपर की तरफ बढ़ने लगा….मेरे पुर बदन मे सनसनी दौड़ गयी….मेरे आँखें फिर से बंद होने लगी….मेरे फेस के बिलकुल सामने बैठी प्राजक्ता अपनी आँखें फाडे देख रही थी….मेने अपने चेहरे को अपने हाथो से ढक लिया…..अभिषेक मेरी जाँघो को मसलते हुए, धीरे धीरे ऊपर बढ़ रहा था…. मेने नाइटी के नीचे पैंटी भी नही पहनी थी…..फिर अभिषेक ने एक झटके से मेरी नाइटी को मेरी कमर तक ऊपर उठा दिया…..मेरी नितंब मेरी बेटी प्राजक्ता के आँखो के सामने नंगी हो गयी होगी……मैं यही सोचते हुए शरम से मरे जा रही थी……उसने अपने दोनो हाथों से मेरे नितंबो को फेला कर मसलना शुरू कर दिया…..मैं एक दम से सिसक उठी……मेने सिसकते हुए अभिषेक को रुकने के लिए कहा….

पर वो मेरी एक नही सुन रहा था…..उसने मेरे दोनो नितंबो को पकड़ कर फेला दिया…..फिर थोड़ी देर वैसे ही बैठा रहा…..मैं नीचे चद्दर मे अपने हाथों से अपने मूह को ढके हुए थी…..इसीलिए मैं देख तो नही पा रही थी. पर मुझे अहसास हो रहा था कि,

प्राजक्ता मेरे आगे से उठ कर अभिषेक के बगल मे जाकर बैठ चुकी थी…..शायद अभिषेक ने उसे इशारे से पास बुलाया था….ये सोच कर मैं शरम से दोहरी हो गयी……मेरी अपनी बेटी मेरे नंगे नितंबो को देख रही है……और अभिषेक ने जिस तरह से मेरे नितंबो को फेला रखा था…मुझे यकीन है कि, उसे मेरी योनि के लिप्स भी दिख रहे होंगे….

फिर मुझे अपनी जाँघो पर वजन हल्का होता हुआ महसूस हुआ……फिर मुझे कुछ सरकने की आवाज़ आई…….और अगले ही पल एक गरम और सखत चीज़ मेरी नितंब के छेद पर आ लगी…..में एक दम सिसक उठी…..वो चीज़ कुछ और नही….अभिषेक के लिंग का मोटा और गरम सुपाडा था……जैसे ही मेने अपनी नितंब के छेद पर अभिषेक के लिंग के सुपाडे को महसूस किया….मेरा पूरा बदन एन्ठ गया…..योनि के अंदर सरसराहट दौड़ गयी…..मेने अपने चेहरे से हाथों को हटा लिया. और मेरे मूह से सिसकारी ना निकले.इसलिए मेने बेडशीट को अपने दाँतों में दबा लिया…….पर फिर भी मूह से घुटि हुई आह निकल गयी…..

अभिषेक के लिंग के सुपाडे की गरमी को महसूस करते ही…..मेरी जांघे अपने आप खुलने लगी…..फिर मुझे कुछ पच पच की आवाज़ आने लगी…..में शरम से अपना सर घुमा कर भी नही देख सकती थी….पर वो आवाज़ और उँची होती गयी. और जब मेरे सबर का बाँध टूटा तो, मेने पीछे की तरफ सर घुमा कर कनखियो से देखा…..तो मेरे रोंगटे खड़े हो गये…..प्राजक्ता और अभिषेक एक दूसरे के होंठो में होंठ डाले हुए, स्मूच कर रहे थे…..मैं हैरत से ये सब देख रही थी…..कि मेरी अपनी बेटी मेरी मौजूदगी में इतनी वाइल्ड्ली स्मूच कर रही है. उसको तो जैसे किसी बात की परवाह ही नही थी…..अभिषेक ने अपना एक हाथ प्राजक्ता की पीठ के पीछे से घुमा कर उसके नितंबो पर रखा हुआ था……और दूसरे हाथ से वो प्राजक्ता की नाइटी के ऊपर से ही उसकी स्तनों को मसल रहा था…..प्राजक्ता अपनी दोनो बाहों को अभिषेक की कमर पर लपेटे हुए उससे एक दम चिपकी हुई थी..

ये देख कर मेरी योनि में सरसराहट और बढ़ गयी……फिर अचानक से अभिषेक ने प्राजक्ता के होंठो से अपने होंठो को अलग किया….और फिर मेरी जाँघो से ऊपर उठाते हुए, मुझे एक झटके से सीधा पीठ के बल लेटा दिया….मैं एक दम से हड़बड़ा गयी…..इस पहले कि मैं संभाल पाती…..अभिषेक ने मेरी दोनो टाँगो को घुटनो से पकड़ कर ऊपर उठा दिया….और फिर मेरी टाँगो को फेला दिया…..अगले ही पल उसके लिंग का सुपाडा मेरी योनि के छेद पर भिड़ा हुआ था….मेने अपनी अध खुली आँखों से देखा…..प्राजक्ता

अभिषेक की चेस्ट पर अपनी हथेलयों को फेर रही थी….अभिषेक ने अपने लिंग के सुपाडे को मेरी योनि के छेद पर दबाना शुरू कर दिया….

और उसके लिंग का सुपाडा मेरी योनि की फांको और छेद को फेलाता हुआ अंदर घुसने लगा…मैं मस्ती में एक दम से सिसक उठी…….और सीईईई और सिसकने की आवाज़ मेरे कानो में गूँज उठी….ये प्राजक्ता की आवाज़ थी….जो अभिषेक की ओर वासना से भरी नज़रों से देखते हुए सिसकारियाँ भर रही थी….उसने अभिषेक के फेस को अपनी तरफ घुमाया, और उसके होंठो पर अपने होंठ रख दिए. अभिषेक बेदर्दी से प्राजक्ता के होंठो को चूसने लगा…….एक तो योनि में लंबा और मोटा लिंग ऊपर से मेरी बेटी अपने होंठो को चुसवा रही थी…….मेरी योनि की दीवारो ने अभिषेक के लिंग को अपने अंदर जकड़ना शुरू कर दिया…….फिर एक तेज मस्ती से भरी सरसराहट मेरी योनि मे उस समय दौड़ गयी. जब अभिषेक के लिंग का सुपाडा मेरी योनि की दीवारो से बुरी तरहा रगड़ ख़ाता हुआ बाहर आया. मैं एक दम से मचल उठी. और अपने सर के नीचे रखे तकिये को दोनो हाथो से पकड़ लिया..

"आहह अभिषेक सीईइ" मेने अपनी अध खुली आँखो से अभिषेक और प्राजक्ता की ओर देखते हुए सिसकारी भरी…अभिषेक ने प्राजक्ता के होंठो से अपने होंठो को अलग किया, और फिर मेरे ऊपर झुकते हुए, मेरे स्लीव्लेस्स नाइटी के स्ट्रॅप को पकड़ कर कंधो से नीचे सरकाना शुरू कर दिया. मेने उसे रोकने की कोशिश की, पर उसके आगे मेरी एक ना चली, जैसे ही मेने उसके हाथो को पकड़ कर रोकना चाहा. उसने अपने लिंग को दो तीन बार पूरी तेज़ी से मेरी योनि के अंदर बाहर कर दिया……मेरे पूरे बदन मे करेंट सा दौड़ गया…..और मेरी पकड़ अभिषेक के हाथो पर ढीली हो गयी. और उसका फ़ायदा उठाते हुए, उसने मेरी नाइटी के स्ट्रॅप्स को मेरे कंधो से नीचे सरका कर , मेरी बाहों से बाहर निकालते हुए, नीचे खेंच दिया.

मेरे स्तन अब नाइटी की क़ैद से बाहर आ गयी थी…..जो मेरे तेज़ी से साँस लेने से ऊपर नीचे हो रही थी…..फिर अभिषेक ने झुकते हुए, मेरे हाथो को पकड़ कर बेडशीट से टिका दिया. और मेरी एक स्तन मूह मे भर कर चूसने लगा. उसने मेरे दोनो हाथो को पकड़ कर मेरे सर के दोनो तरफ बिस्तर पर दबाया हुआ था……मेरी आँखे मस्ती में बंद होने लगी……तभी मेरा पूरा बदन एक दम से कांप गया……मुझे मेरे दूसरे स्तनाग्र पर मुझे कुछ गरम और नरम सा अहसास हुआ. मेने अपनी आँखो को ज़ोर लगा कर खोल कर देखा, तो में एक दम से हैरान रह गयी…..मेरे एक स्तन को अभिषेक चूस रहा था. और दूसरे स्तन को प्राजक्ता अपने मूह मे भर कर चूस रही थी….मेरे पूरे बदन मे मस्ती की लहर

दौड़ गयी. और साथ ही शरमसार भी हुए जा रही थी. मेरी योनि और ज़्यादा पानी छोड़ने लगी……नीचे अभिषेक के धक्के और तेज हो गये. वो अपने लिंग को पूरा बाहर निकाल निकाल कर मेरी योनि मे पेल रहा था.

अब मुझसे भी बरदाश्त से बाहर होता चला जा रहा था. मेरी योनि की आग इस कदर बढ़ चुकी थी कि, मेने खुद ही अपनी नितंब को ऊपर की ओर उछालना शुरू कर दिया…… मेरी इस हरक़त को देख प्राजक्ता ने अपना मूह मेरी स्तनाग्र से हटा लिया. और फिर मेरी योनि की तरफ देखने लगी. जिसमे अभिषेक का लंबा मोटा लिंग बड़ी तेज़ी से अंदर बाहर हो रहा था….”आह धीरे आह अहह उंह “

अभिषेक: ले साली और ले…….देख तुझे तेरे बेटी के सामने ठोक रहा हूँ. देख प्राजक्ता तेरी माँ की योनि कितनी गरम है. देख कैसे पानी छोड़ रही है….

अभिषेक ने अपना लिंग मेरी योनि से बाहर निकाल कर दिखाते हुए कहा. उसका लिंग मेरी योनि के पानी के कारण ट्यूब लाइट की रोशनी मे चमक रहा था. उसका झटके ख़ाता हुआ लिंग आज और ज़्यादा विकराल लग रहा था. फिर प्राजक्ता ने वो क्या जिसके बारे में मेने सोचा भी नही था. अभिषेक ने प्राजक्ता की गर्दन के पीछे एक हाथ डाल कर उसे अपने लिंग पर झुका लिया. जो मेरी योनि के ठीक ऊपर झटके खा रहा था. और मेरे देखते ही देखते. प्राजक्ता ने अपने मूह को खोल कर अभिषेक के लिंग के बड़े और मोटे लाल सुपाडे को अपने होंठो में कस लिया.”आह” अभिषेक भी सिसक उठा….उसने अपने दोनो हाथों से प्राजक्ता के सर को पकड़ कर अपनी कमर को तेज़ी से हिलाना शुरू कर दिया. प्राजक्ता भी अभिषेक के लिंग आधे से ज़्यादा निगलते हुए चूस रही थी….उसका एक हाथ मेरे पेट के ऊपर था. और दूसरा हाथ उसने बेड पर टिका रखा था.

“पुच पबब्ब पबब्ब की आवाज़ें प्राजक्ता के मूह से निकल रही थी….फिर थोड़ी देर बाद प्राजक्ता ने लिंग को मूह से बाहर निकाला. और फिर हाथ से पकड़ कर तेज़ी से हिलाने लगी. और फिर मेरी तरफ देखते हुए बोली. “मम्मी ये तुम्हारी बेटी की तरफ से तुम्हारे लिए तोहफा है” और फिर उसने हाथ से अभिषेक के लिंग को पकड़ कर मेरी योनि के छेद पर लगा दिया…..में भी अपनी योनि की फांको को अपने हाथो से फेलाते हुए, उसे अपनी योनि का गुलाबी छेद दिखाया. और अभिषेक का लिंग एक बार फिर से मेरी योनि के छेद पर था. “अह्ह्ह्ह प्राजक्ता बेटा मुझी ये गिफ्त बहुत पसंद है….अहह अह्ह्ह्ह धीरे अभिषेक

आह मर गयी. मेरी योनी अह्ह्ह्ह" अभिषेक ने फिर से अपना पिस्टन चलाना शुरू कर दिया था.....उसके हर झटके के साथ ठप ठप की आवाज़ पूरे रूम में गूँज रही थी.....

तभी मुझे अपने ऊपर कुछ महसूस हुआ. मेने मस्ती में सिसकते हुए अपनी आँखो को खोल कर देखा तो, प्राजक्ता मेरे ऊपर थी. उसके दोनो पैर मेरी कमर के दोनो तरफ थे. और वो बिलकुल डॉगी स्टाइल मे मेरे ऊपर थी....."माँ मुझे भी तुमसे गिफ्ट चाहिए " प्राजक्ता ने मेरी अध खुली आँखो में झाँकते हुए कहा. पर मैं कुछ बोल नही पा रही थी...उसने मेरे कोई जवाब देने से पहले ही, अपने होंठो को मेरे होंठो की तरफ बढ़ा दिया. "आह नही" मेने अपनी योनि मे महसूस हो रहे धक्को से सिसकते हुए कहा, और अपना फेस दूसरी तरफ घुमा लया. अभिषेक और ज़ोर से अपना लिंग बाहर निकाल निकाल कर अंदर पेलने लगा था. उसके हर धक्के से मेरा पूरा बदन हिल रहा था. उसके बॉल्स मेरी नितंब के छेद पर टकरा रहे थे. "उम्मह सीईईई अभिषेक आह धीरे आह" फिर प्राजक्ता ने मेरे फेस को अपने हाथो में पकड़ कर जबरन अपने होंठो को मेरे होंठो पर लगा दिया.

मेने शरम के मारे अपने होंठो को आपस मे भींच लिया. पर अभिषेक के लिंग के झटके अब मेरी योनि में इतने तेज हो गये थे कि, मुझे अपने होंठो को खोलना पड़ा. जैसे ही मेने अपने होंठो को खोला, प्राजक्ता ने अपनी जीभ मेरे मूह मे घुसा दी. उसकी जीभ मेरे मूह के हर कोने में घूम रही थी. उसके दोनो हाथ मेरे स्तनों पर थे. जिसे वो दबा दबा कर खेंच रही थी. फिर उसने मेरे होंठो को चूसना शुरू कर दिया. अब मेरे भी बरदाश्त से बाहर होता जा रहा था. मेने मन में सोच लिया था कि, अगर मेरे बेटी मुझसे इस तरह बेशर्मी से पेश आ सकती है, तो में क्यों पीछे रहूं.

मेने भी प्राजक्ता का साथ देना शुरू कर दिया. कभी वो मेरे होंठो को चुस्ती, तो कभी मैं उसके होंठो को चुस्ती........."आहह सालियो मुझे भूल गयी क्या ?" अभिषेक ने नीचे से मेरी योनि में अपना लिंग पेलते हुआ कहा. और फिर उसने एक ज़ोर दार थप्पड़ प्राजक्ता की नितंब पर मारा. जिसकी आवाज़ मुझे साफ सुनाई दी, और फिर प्राजक्ता के सिसकने की आवाज़ आई. मेने देखा, प्राजक्ता मेरे ऊपर से उठ कर फिर से अभिषेक के पास जाकर घुटनो के बल बैठ गयी. अभिषेक ने अपने लिंग को मेरी योनि से बाहर निकाला, और प्राजक्ता की तरफ देखने लगा. प्राजक्ता ने अभिषेक को लिंग को हाथ में पकड़ कर हिलाना शुरू कर दिया.

अभिषेक का लिंग मेरी योनि के कामरस से पूरी तरहा भीगा हुआ था. प्राजक्ता उसके लिंग को हिलाते हुए धीरे धीरे नीचे झुकने लगी. उसके होंठो और मेरी योनि के बीच सिर्फ़ थोड़ा ही फाँसला ही रह गया था. और योनि के ठीक सामने अभिषेक का लिंग था. उसने झुकते हुए अभिषेक के लिंग को मूह में भर लिया. और जोर जोर से सर हिलाते हुए, अभिषेक के लिंग को चूसने लगी. में ये सब देख कर और गरम हुई जा रही थी…..अभिषेक ने मेरी टाँगो को घुटनो से मोड़ कर ऊपर उठाया,और मेरी जाँघो को ज़ोर से पकड़ लाया. फिर उसने एक हाथ से प्राजक्ता के बालों को पकड़ा और उसका सर पीछे खेंचते हुए, अपने लिंग को उसके मूह से बाहर निकल लिया. फिर उसने प्राजक्ता के बालो को पकड़े हुए, उसके फेस को मेरी योनि की तरफ बढ़ा दिया. अगले ही पल उसने प्राजक्ता के बालो को छोड़ कर मेरी टाँगो को पकड़ कर और फैला दिया.

इससे पहले कि मैं कुछ कर पाती, प्राजक्ता ने अपनी जीभ को नॉकदार बनाते हुए, मेरी योनि के छेद पर लगा दिया. मैं जल बिन मछली की तरह तड़प उठी. पर मैं अपने आप को छुड़ा नही पा रही थी. क्योंकि अभिषेक ने मेरी टाँगो को फेला कर ज़ोर से पकड़ रखा था……प्राजक्ता अपनी जीभ मेरी योनि के छेद पर रगड़ रही थी. सुर्प सुर्प की आवाज़ से ऐसा लग रहा था. जैसे कि वो मेरी योनि से बह रहा सारा पानी पी जाएगी. मेरे आँखे फिर से मस्ती मे बंद हो गयी…..

मैं: अह्ह्ह्ह सोइना आहह ईए ईए क्याअ कर मत करो अह्ह्ह्ह उंह सीयी आह बेटाअ अहह हट जाअ….

मेरी मस्ती का कोई ठिकाना नही था. मेरी कमर अपने आप ही झटके खाने लगी. जिससे मेरी योनि बार बार प्राजक्ता के मूह पर दब जाती, और वो और ज़ोर से मेरी योनि की फांको को मूह में भर कर चूसने लगती…..फिर अभिषेक ने मेरी टाँगो को पकड़ और ऊपर उठा दिया. इतना ऊपर कि, मेरी नितंब बेड से ऊपर उठ गयी…और अगले ही पल प्राजक्ता ने मेरी योनि को चाटते हुए, एक तकिया मेरी नितंब के नीचे लगा दिया. मेरी योनि से निकल रहा पानी, और प्राजक्ता का थूक बहता हुआ मेरी नितंब के छेद की तरफ जा रहा था…..जैसे ही प्राजक्ता ने मेरी नितंब के नीचे तकिया लगाया. अभिषेक ने मेरी टाँगो को छोड़ दिया. नीचे तकिया होने के कारण मेरी नितंब अब कुछ ज़यादा ही ऊपर उठ चुकी थी…….

प्राजक्ता अभी भी मेरी योनि को चाट रही थी. मैं मस्ती आहह ओह्ह्ह्ह बस उफ्फ किए जा रही थी….तभी मेरा पूरा बदन एक दम से कांप गया. जब अभिषेक ने अपने फन्फनाते हुए

लिंग का गरम सुपाडा मेरी नितंब के छेद पर लगा दिया. मेरे पूरे बदन में सनसनी दौड़ गयी……”

आह नही अभिषेक वहाँ नही प्लीज़ “ मेने सिसकते हुए कहा……एक तो अभिषेक के लिंग का गरम सुपाडा मेरी नितंब के छेद पर रगड़ खा रहा था. और ऊपर से प्राजक्ता मेरी योनि के छेद को चाट रही थी. बस सिर्फ़ कहने को मना कर रही थी…..पर मैं बिकुल भी विरोध नही कर पा रही थी…..मेरी योनि से निकला काम रस और प्राजक्ता का थूक मेरी नितंब के छेद पर आ रहा था…….जिससे मेरी नितंब का छेद नरम हो गया था. अभिषेक ने धीरे अपने लिंग के सुपाडे को मेरी नितंब के छेद पर दबाना शुरू कर दया.

जब उसके लिंग का गरम सुपाडा मेरी नितंब के छेद पर रगड़ खा रहा था, तब एक मस्ती भरी सनसनी मेरे बदन में दौड़ रही थी…….पर जैसे ही उसके लिंग का सुपाडा मेरी नितंब के छेद को फेलाता हुआ थोड़ा सा अंदर घुसा, मेरे पूरे बदन में दर्द की तेज लहर दौड़ गयी. मेरा पूरा बदन एक दम से ऐंठ गया. मेने अपने आप को दर्द से बचाने के लिए अपने पैरो को हिलाना शुरू कर दिया. पर अभिषेक ने मेरी टाँगो को कस के पकड़ा हुआ था. अभिषेक अपने लिंग के सुपाडे को मेरी नितंब के टाइट छेद में अंदर घुसाने लगा……में दर्द से एक दम चीख उठी.

“अहह अभिषेक मर गयी मैं छोड़ दे मुझे आह मेरी नितंब फॅट जाएगी.ओह्ह्ह्ह अभिषेक अह्ह्ह्ह आहह माआ” अभिषेक ने अपने लिंग के सुपाडे को दबाते हुए, मेरी नितंब के छेद मे घुसा दिया था. दर्द की तेज लहर मेरे बदन में दौड़ गयी. मेरा पूरा बदन दर्द के कारण काँपने लगा……पर अभिषेक को मेरी हालत पर ज़रा भी तरस नही आया…..उसने मेरी जाँघो को पकड़ कर ऊपर उठाते हुए, मेरी स्तनों से सटा दिया. और अपनी पूरी ताक़त से एक जोरदार धक्का मारा. अभिषेक का आधा लिंग मेरी नितंब में घुस कर फँस गया…….

“हाए ओई मारा डाला हरामी अह्ह्ह्ह फाड़ दी अह्ह्ह्ह मेरीए माआ बहुत दर्द हो रहा है अहह ओह ओह्ह्ह्ह निकालो ईससीए अभिषेक मेरीई.” पर अभिषेक तो जैसे रुकने का नाम ही नही ले रहा था. उसने अपने लिंग को ही मेरी नितंब के छेद के अंदर बाहर करना शुरू कर दिया…..मेरी आँखे दर्द के कारण बंद हो चुकी थी….और मेरे आँसू भी निकल आए थे…..जब मेरी आँखे बंद थी, तब पता नही कब प्राजक्ता एक बार फिर से मेरे ऊपर आ गयी……इस बार वो मेरे ऊपर ६९ की पोज़िशन मे थी. उसका फेस मेरी योनि की तरफ था. और उसकी योनि मेरे फेस के ठीक ऊपर थी….मेरी टाँगो के दरमिया बैठा,

अभिषेक अपने लिंग को सुपाडे तक बाहर निकाल कर फिर से नितंब मे पेल देता. मेरी तो दर्द से जान ही निकली जा रही थी…..पर मुझे तब दर्द से थोड़ी राहत मिली, जब प्राजक्ता ने फिर से मेरी योनि को चाटना शुरू कर दिया.

कहाँ तो मुझे ये सोच कर ही घिन आ रही थी, कि मेरे अपनी बेटी ही, मेरी योनि को चाट रही है. और कहाँ अब मैं उसकी योनि चाटने से मस्त होने लगी थी. "आह क्या कर रही हो प्राजक्ता आह हाई मेरीए नितंबड़ अह्ह्ह्ह मत कर प्राजक्ताअ अहह आह तू तू येयी सब क्यो कर रही है अहह" पर वो तो जैसे मेरी बात ही नही सुन रही थी…..अब धीरे धीरे मेरा दर्द भी कम होने लगा. पर अभिषेक के धक्को की रफ़्तार जैसे जैसे बढ़ती दर्द भी बढ़ता…..पर थोड़ी देर बाद कम हो जाता……..अब अभिषेक पूरी रफ़्तार से अपने मुन्सल लिंग को मेरी नितंब के छेद के अंदर बाहर कर रहा था…..

"अहह क्या टाइट नितंब है साली अहह मेरा लिंग पिघल जाएगाअ अह्ह्ह ले मेरीई रानी मैं आयाअ अहह" अभिषेक झड़ने के करीब था….लेकिन इससे पहले कि अभिषेक झाड़ता. प्राजक्ता बोल पड़ी……"नही अभिषेक मुझे तुम्हारा पानी पीना है… प्लीज़ कम ऑन माइ फेस"

अभिषेक: आहह हां ले नाआ आ जल्दी आ…….

अभिषेक की बात सुनते ही प्राजक्ता मेरे ऊपर से उतर कर बेड पर घुटनो के बल बैठ गयी…..अभिषेक ने मेरी नितंब से अपना लिंग बाहर निकाला, और प्राजक्ता के सामने खड़ा होकर तेज़ी से मूठ मारने लगा. और अचानक ही वो गरजते हुए झड़ने लगा. उसके लिंग से वीर्य की धार निकल कर प्राजक्ता के चेहरे को भिगोने लगी. जैसे ही प्राजक्ता के चेहरे पर अभिषेक के लिंग से निकला पानी गिरने लगा तो प्राजक्ता के होंठो पर ऐसी मुस्कान आ गयी………जैसे उसे अमृत मिल गया हो. ये सब देखते हुए मुझे पता नही कब मेरा हाथ मेरी योनि की भगनासा पर चला गया. और मैं अपनी उंगलियो से योनि की क्लिट को मसलने लगी….

जैसे जैसे अभिषेक के लिंग के सुपाडे से वीर्य की बौछार निकल कर प्राजक्ता के चेहरे पर गिर रही थी……वैसे वैसे मेरी योनि ने भी पानी छोड़ना शुरू कर दिया. मैं भी झड कर हाँफने लगी……अभिषेक भी झड कर बेड पर लेट गया…..प्राजक्ता एक दम से बेड से नीचे उतरी, और बाथरूम के लिए बाहर चली गयी…..मेरी हालत बहुत बुरी हो चुकी थी…..थोड़ी देर बाद प्राजक्ता वापिस आ गयी. और मैं उठ कर बाथरूम में चली गयी……

मैं बड़ी मुश्किल से चल पा रही थी…..अभिषेक के मुन्सल लिंग ने तो सच मे मेरी नितंब को फाड़ कर रख दिया था. जब बाथरूम से वापिस आई, तो मेने देखा. अभिषेक बेड पर पीठ के बल लेटा हुआ था. और प्राजक्ता उसकी जाँघो के पास बैठी हुई झुक कर उसके लिंग को चूस रही थी……..

मेरे कदमो की आहट सुन कर प्राजक्ता ने अभिषेक के लिंग को मूह से बाहर निकाला, और मेरी तरफ देखा. पर उसे शायद अब मेरी मौजूदगी से कोई फरक नही पड़ रहा था. उसने फिर से मेरी ओर देखते हुए, अभिषेक के लिंग के सुपाडे पर जीभ बाहर निकाल कर चाटने लगी. ये सब वो मेरी ओर देखते हुए कर रही थी….अभिषेक भी मेरी ओर देख कर मुस्करा रहा था. उसने मुझे अपने पास आने का इशारा किया. मैं अपने सामने ठुकाई के इस खुले खेल को देख कर मंत्र मुग्ध सी बेड की ओर खिचति चली गयी. जैसे ही, मैं बेड पर आई. अभिषेक ने मुझे पकड़ कर अपनी तरफ खेंचते हुए, अपने ऊपर झुका लिया. अब मैं और प्राजक्ता एक दूसरे के बिलकुल सामने थी. वो अभिषेक के लिंग को बार बार अपने मूह से निकालती, और मेरी तरफ देखते हुए, अपनी जीभ बाहर निकाल कर उसके लिंग के मोटे लाल सुपाडे को चाटने लगती. मैं एक टक हैरानी से उसे ये सब करता हुआ देख रही थी. जब वो अभिषेक के लिंग के सुपाडे को जीभ बाहर निकाल कर चाटती, तो वो अभिषेक के लिंग को नीचे से पकड़ कर मेरे होंठो की तरफ करती. जैसे कहना चाहती हो. तुम क्यों फ्री बैठी हो……फिर उसने अभिषेक के लिंग को चूसना छोड़ कर अभिषेक के बगल मे लेट गये. अभिषेक ने एक हाथ से मेरे बालो को पकड़ कर मुझे अपने लिंग पर झुकाना शुरू कर दिया…..

मैं भी इतनी मस्त हो चुकी थी, कि किसी बात की परवाह किए बिना अभिषेक के लिंग के मोटे सुपाडे के चारो तरफ अपने होंठो को कस लिया. और फिर उसके लिंग के सुपाडे को अपने होंठो के बीच में दबाते हुए चूसने लगी. मेने अभिषेक के लिंग को चूस्ते हुए देखा के प्राजक्ता ने अपनी नाइटी के स्ट्रॅप्स को अपने कंधो से सरका कर निकाल दिया था. और अभिषेक प्राजक्ता की स्तनों को चूस रहा था. ‘‘अहह श्ह्ह अभिषेक ‘‘ प्राजक्ता अभिषेक के बालो को सहलाते हुए, उसके सर को अपनी स्तनों पर दबा रही थी.

प्राजक्ता: आहह अभिषेक चूसो ना मेरे स्तनों को अह्ह्ह्ह देखो ना माँ कैसी तुम्हारे लिंग को चूस रही है…..

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

ये सुनते ही मेने शरम के मारे अभिषेक के लिंग को मूह से बाहर निकाल दिया. और फिर प्राजक्ता मुस्कुराते हुए, अभिषेक के ऊपर आ गयी. अब उसकी योनि भी बिलकुल मेरी आँखो के सामने थी……

”माँ डालो ना मेरी योनि के अंदर अभिषेक का लिंग” प्राजक्ता ने पीछे फेस घुमा कर मेरी तरफ देखते हुए कहा. मैं बुत सी बनी वैसे ही बैठी रही…..

अभिषेक: डाल ना साली देख नही रही, तेरी बेटी कैसे मेरे लिंग के लिए तरस रही है. चल डाल जल्दी…..

अभिषेक की रोबदार आवाज़ सुन कर मुझे झटका सा लगा. मेने अपने काँपते हुए हाथो से अभिषेक के लिंग के पकड़ कर प्राजक्ता की योनि के छेद पर लगा दिया. जैसे ही अभिषेक के लिंग का सुपाडा प्राजक्ता की योनि के छेद पर लगा….प्राजक्ता के मूह से मस्ती भरी आह निकल गयी……..उसने अपनी योनि को अभिषेक के लिंग के सुपाडे पर दबाना शुरू कर दिया…..मैं उसके पीछे बैठी हुई ये सब देखते हुए हैरान हो रही थी.

अभिषेक का लिंग प्राजक्ता की योनि के टाइट छेद को फेलाता हुआ अंदर घुसने लगा…… जैसे जैसे अभिषेक का लिंग प्राजक्ता की योनि की गहराइयों में समाता जा रहा था. प्राजक्ता की सिसकारियाँ उँची होती जा रही थी….मेरे देखते ही देखते, अभिषेक का मुन्सल जैसा लिंग प्राजक्ता की टाइट योनि में समा गया……अभिषेक ने फिर मुझे अपने पास आने का इशारा किया……मैं उठ कर अभिषेक की बगल मे जाकर लेट गयी…..उधर प्राजक्ता ने अपनी नितंब को ऊपर नीचे हिलाते हुए अभिषेक के मुन्सल लिंग से ठुकवाना शुरू कर दिया था….अभिषेक ने मुझे पकड़ कर अपने ऊपर झुका लिया, और मेरे होंठो को अपने होंठो में भर कर चूसने लगा.

मैं अपने सामने अपनी बेटी को ठुकते देख और मदहोश होती जा रही थी. जिसके कारण मैं अभिषेक को किसी भी बात के लिए रोक नही पा रही थी. ठुकाई का जो सिलसिला आज शुरू हुआ था. वो अब मेरे जीवन में सदा के लिए रहने वाला था.ये सिर्फ मेरी उस छोटी सी भूल की सजा है जो मैंने एक शिकारी को अपने घर मे पनाह देते हुए की थी.लेकिन यह सज़ा अब मुझे अच्छी लगने लगी है.जिसके लिए मैं अब कुछ भी कर सकती हूँ.

●◆■★ समाप्त ★■◆●